डाक पंजीयन क्र. आई.डी.सी./म.प्र./892/2018-2020
पत्र पंजीयक क्र. : म.प्र. 15059

आयोजन
समायोजन
विशेषांक

संस्कार सागर

● वर्ष :20 ● अंक : 231
● जुलाई 2018

● मूल्य : 50 रु.

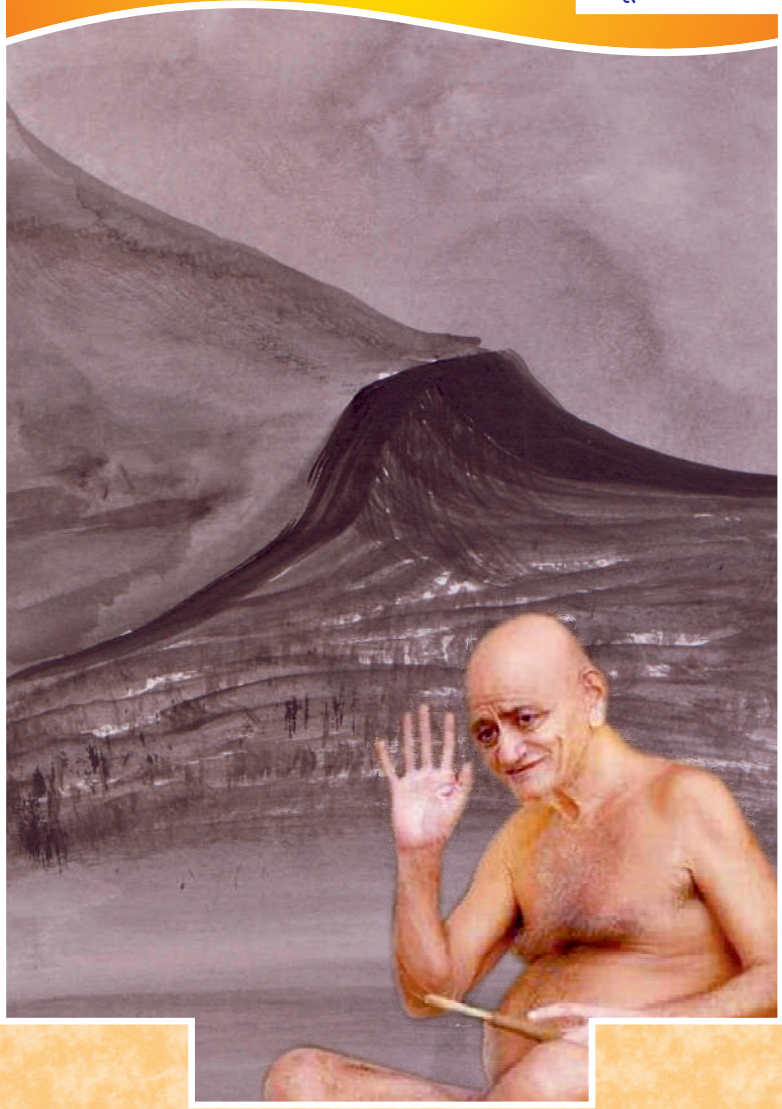

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य मे सम्पन्न वाचना के दुर्लभ क्षण चित्रों में

गौरा बाई जैन मंदिर में आचार्य विद्यासागरजी से चर्चा करते हुए पं. मुन्नालाल जी रांधेलिया

ब्रह्मचर्याश्रम में प्रविष्ट विद्यार्थियों को आचार्य विद्यासागर के सानिध्य में देशना देते हुए पं. पन्नालाल जी साहित्याचार्य

आचार्य विद्यासागर जी डॉ. दरबारीलाल कोठिया व्याख्याचार्य के 'जैन दर्शन और प्रमाणशास्त्र परिशीलन' ग्रन्थ का विमोचन करते हुए

संक लन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		(जुलाई 2018 आषाढ़ शुक्ल)	
16	सोमवार	चतुर्थी	मघा
17	मंगलवार	पंचमी	पूर्वाफाल्गुनी
18	बुधवार	षष्ठी	उत्तराफाल्गुनी
19	गुरुवार	सप्तमी	हस्त
20	शुक्रवार	अष्टमी	चित्रा
21	शनिवार	नवमी	स्वाति
22	रविवार	दशमी	विशाखा
23	सोमवार	एकादशी	अनुराधा
24	मंगलवार	द्वादशी	ज्येष्ठा
25	बुधवार	त्रयोदशी	मूल
26	गुरुवार	चतुदर्शी	पूर्वाषाढ़
27	शुक्रवार	पूर्णिमा	उत्तराषाढ़
		(श्रावण कृष्ण)	
28	शनिवार	प्रतिपदा	श्रवण
29	रविवार	द्वितीया	धनिष्ठा दिन/रात
30	सोमवार	तृतीया	धनिष्ठा
31	मंगलवार	तृतीया	शतभिषा
		(अगस्त 2018)	
1	बुधवार	चतुर्थी	पूर्वाभाद्रपद
2	गुरुवार	पंचमी	उत्तराभाद्रपद
3	शुक्रवार	षष्ठी	रेवती
4	शनिवार	सप्तमी	अश्विनी
5	रविवार	अष्टमी	भरणी
6	सोमवार	नवमी/दशमी	कृतिका
7	मंगलवार	एकादशी	रोहिणी
8	बुधवार	द्वादशी	मृगशिरा
9	गुरुवार	त्रयोदशी	आर्द्रा/पुनर्वसु
10	शुक्रवार	चतुदर्शी	पुष्य
11	शनिवार	अमावस	आश्लेषा
		(श्रावण शुक्ल)	
12	रविवार	प्रतिपदा	मघा
13	सोमवार	द्वितीया/तृतीया	पूर्वाफाल्गुनी
14	मंगलवार	चतुर्थी	उत्तराफाल्गुनी
15	बुधवार	पंचमी	हस्त

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ : जुलाई - 23, अगस्त-8
वाहन क्रय : जुलाई -19,30 अगस्त-3,4,8,9,15
विद्या आरंभ मुहूर्त : जुलाई - 29

तीर्थंकर कल्याणक

18 जुलाई : भगवान महावीर गर्भ कल्याणक
19 जुलाई : भगवान नेमीनाथ मोक्ष कल्याणक
21 जुलाई : भगवान मुनिसुव्रतनाथ गर्भ कल्याणक
06 अगस्त: भगवान कुन्थुनाथ गर्भ कल्याणक
13 अगस्त: भगवान कुन्थुनाथ गर्भ कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

17 जुलाई : ऋषि पंचमी
19 जुलाई : णमोकार पैंतीसी व्रत प्रारंभ
20 जुलाई : अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ
22 जुलाई : रवि व्रत प्रारंभ
26 जुलाई : चातुर्मास प्रारंभ
26 जुलाई : कर्म निर्जरा व्रत
27 जुलाई : अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ
28 जुलाई : वीर शासन जयंती
29 जुलाई : रत्नावली, एकावली, द्विकावली
29 जुलाई : रवि व्रत
07 अगस्त : राहिणी व्रत
11 अगस्त : सप्तरम स्थान व्रत प्रारंभ

सर्वार्थ सिद्धि

18 जुलाई :08/21 बजे से 29/56 बजे तक ।
21 जुलाई :05/57 बजे से 09/08 बजे तक ।
23 जुलाई :05/58 बजे से 12/54 बजे तक ।
27 जुलाई :24/34 बजे से 29/56 बजे तक ।
28 जुलाई :06/00 बजे से 27/38 बजे तक ।
02 अगस्त : 13/13 बजे से 30/02 बजे तक ।
03 अगस्त : 06/02 बजे से 30/03 बजे तक ।
06 अगस्त : 14/08 बजे से 30/04 बजे तक ।
08 अगस्त :06/04 बजे से 10/48 बजे तक ।
09 अगस्त :08/26 बजे से 30/05 बजे तक ।
15 अगस्त :06/07 बजे से 16/14 बजे तक ।

आयोजन समायोजन विशेषांक * आगामी * चातुर्मास विशेषांक

संस्कार सागर

• वर्ष : 20 • अंक : 231 • जुलाई 2018
• वीर नि.संवत 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

- बुन्देलखण्ड के भागीरथ आचार्य विद्यासागर जी महाराज 08
- जैनागम में : द्रव्यार्थिक नय-पर्यायार्थिक नय 11
- दिगम्बर जैन श्रमण चर्या के समीचीन दिगदर्शक संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज 19
- गुरु कृपा है निराली 23
- मूकमाटी : परिशीलन साहित्यकारों की दृष्टि में 26
- नाम कर्म प्रकृति व शरीर संरचना 44
- गोम्मटसार में कषाय मुक्ति प्रक्रिया का विवेचनः मानवीय मूल्यों के संदर्भ मे 51
- आचार्य कुन्दकुन्द की दृष्टि में श्रमण और श्रावक 57
- श्रवणबेलगोला में महामस्तकाभिषेक महोत्सव का भव्य शुभारंभ राष्ट्रपति जी ने किया 69
- जैन तीर्थंकर अहिंसा के प्रेरणा स्त्रोत-उपराष्ट्रपति श्री वैंकेय्या नायडू श्रवणबेलगोला में राज्याभिषेक किया वैंकेय्या नायडू ने 73
- चतुर्थकाल के मुनि आचार्य श्री विद्यासागर जी 76
- एक नये नक्षत्र का उदय 78
- साधना के सुमेरु आचार्य श्री विद्यासागर महाराज 80
- आचार्य विद्यासागर महाराज जी के संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में ब्र. बहिन सविता दीदी 10 प्रतिमाधारी द्वारा अर्हम ध्यान योग शिविर 50 स्थानों पर लगायें गयें। 81
- संयम-साधना-स्वाध्याय की साक्षात् त्रिवेणी आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज 82
- आचार्य श्री विद्यासागर जी के संयम स्वर्ण महोत्सव की स्मृति को चिरस्थायी बनाते कीर्ति स्तम्भ 85
- आचार्य विद्यासागर महाराज का शैक्षणिक अवदान 87
- जैन स्मारक राजाबाई जैन टावर 90

बाल कहानी

- अनबन 67

कविता

- गुरुवर, नमोस्तु तुभ्यम 22
- भाग्योदय 27
- गिरनार की चीख 28
- सदलगा नगर से आये गुरु 31
- मजदूर 36
- पावन नाम तुम्हारा 64
- गुरुवर विद्यासागर 86

कहानी

- शकीला 48

नियमित स्तंभ

• **पाती पाठकों की** : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 17
• चलोदेखें यात्रा : 25 • आगम दर्शन :29 • पुराण प्रेरणा : 33 • माथा पच्ची : 33
• कैरियर गाइड : 34 • दुनिया भर की बातें : 37 • इसे भी जानियेः 42 •दिशा बोध : 43
• आओसीखें : जैन न्याय : 47 • हमारे गौरव : 65 • हास्य तरंग : 66 • बाल संस्कार डेस्क : 67
• संस्कार गीत व बाल कविता : 68 • डाकटिकटों पर जैन इतिहास : 90 • समाचार : 92

प्रतियोगिताएं :अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा :95 : वर्ग पहेली : 98

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ,
इन्दौर (म.प्र.)
आंतरिक सज्जा :आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का

बाकी सदस्यता शुल्क

जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन : 2100/- (15 साल)
परम संरक्षक : 15000/-

अपनेशहर के

- **स्टेट बैंक ऑफ इंडिया** (संस्कार सागर)
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- **भारतीय स्टेट बैंक** (ब्र. जिनेश मलैया)
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- **ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स**
  खाता क्र.07882151004198(IFSC:ORBC0100788)
- **आईडीबीआई बैंक** (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 155104000037022
- **आईसीआईसीआय बैंक** (श्री दिगम्बर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

कार्यालय
संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 8717924109
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय,बच्चों का जीवन अनमोल होता है, विशेष होता है और वे समय से पहले अपने अस्तित्व को खोजने लगते हैं ऐसे होनहार बच्चे अतिसंवेदन शील होते हैं। और वे बहुत जल्दी अवसाद ग्रस्त भी हो जाते हैं कभी कभी इनका डिप्रेशन इतना अधिक हो जाता है कि वे जीवन से ही मुँह मोड़ लेते हैं। ऐसे बच्चों की खिन्नता और कुन्ठा का उन पर गलत प्रभाव पड़ता है। इससे विपरीत यदि बच्चों का मनोबल बढ़ाया जाये तो वे बच्चे सातवें आसमान तक जाने की क्षमता रखते हैं। हमें बच्चों के मुँह पर उनकी तारीफ और बुराई दोनों नहीं करना चाहिये। इस बिन्दु को संस्कार सागर मुख्यता से उठाकर हताश छात्रों को आत्म हत्या करने से रोकने में प्रभावी भूमिका निभा सकता है।

अंकुर जैन (बड़ोत)

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों दक्षिण कोरिया व उत्तर कोरिया के राष्ट्रपति दोनों बार्डर पर मिले और एक दूसरे से हाथ मिलाकर मूनजैईइन ने किमजॉन से कहा कि मैं उत्तर कोरिया कब घूम सकता हूँ तो तो किमजॉन ने मून का हाथ पकड़ा और उन्हें उत्तर कोरिया की सीमा के भीतर ले गये 56 साल के उपरांत यह असंभावित मुलाकात विश्वशांति के लिए बहुत बड़ा मायना रखती है । परमाणु निरस्त्रीकरण की दिशा में एक प्रभावी कदम सिद्ध हुआ तथा उत्तर कोरिया ने घोषणा कर दी कि अब कोई परमाणु परीक्षण नहीं होगा। इस पहल से जैन समाज को प्रेरणा लेना चाहिय कि वे अपने पंथ और जाति के व्यामोह से ऊपर उठें जैन संस्कृति को विवादो सें परे रखकर उन्नति के शिखर पर पहुँचाने का प्रयास करे।

अंकुर जमादार (दिल्ली)

• सम्पादक महोदय, डॉक्टर आलोक जैन का जैन दर्शन में पर्याप्ति व प्राण शीर्षक से लेख पढ़ा संस्कार सागर के जून अंक में यह लेख जैन सिद्धांत की मान्यताओं को गहराई से विवेचित करता है प्रस्तुत लेख के माध्यम से जैन दर्शन के बिन्दुओं को समझाना एवं उनकी अवधारणा को पाठकों के समक्ष परोसना सचमुच में बड़ी समस्या है लेकिन विद्वान लेखन ने सरल सुबोध भाषा में समझाने का प्रयास किया है इससे जैन सिद्धांत की विशेषताओं को ठीक-ठीक समझने में कठनाई नहीं होगी आलोक जैन यदि जैन सिद्धांत के सभी विषयों की कठिनता की समस्याओं पर लिखें तो बहुत कुछ हल हो जायेगी प्रयास अच्छा है उम्मीद है कि आगे भी आलोक जी इस तरह से लेख लिखते रहेगें ।

राजेश शास्त्री श्रवणबेलगोला

• सम्पादक महोदय, ब्र. राकेश जैन डी सागर ने बृहद द्रव्य संग्रह की कतिपय गाथाओं का पुनरीक्षण शीर्षक से लेख लिखा लेख सचमुच में अत्यंत गंभीर और शोधपूर्ण है । इसमें जिन गाथाओं का विचार किया गया है शायद ही इस दिशा में किसी ने अपना चिंतन किया हो। ग्रंथ की दूसरी गाथा का जो आपने नौ व आठ बिन्दुओं पर विचार किया है वह विचार एक बार फिर चिन्तनीय है 1. जीवत्व 2. उपयोगमयत्व 3. अमूर्तिकत्व 4. कर्तृत्व के बाद 5. भोकतृत्व 6. संसारस्थ 7. स्वदेह परिमाण 8. सिद्धत्व 9. विश्रश्य उर्ध्वगति इन बिन्दुओं पर गाथा में विचार किया गया है इनके क्रम के संबंध में विद्वान लेखक ने ऊहा पोह की हैं । लेख अवलोकनीय पुर्नपरीक्षण की अपेक्षा रखता है।

सुबोध मारौरा इन्दौर

भक्ति तरंग
बाहुबली

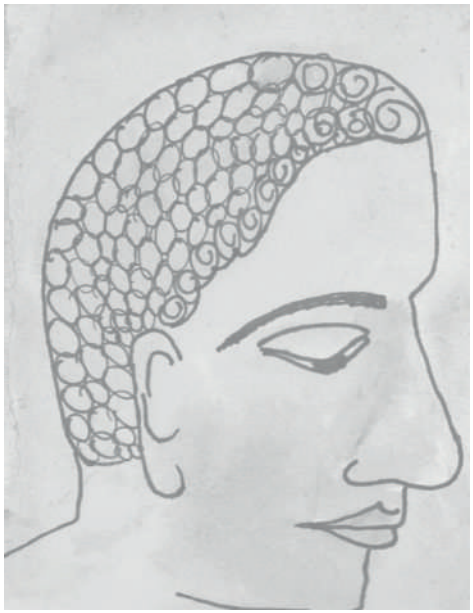

कहा री कहूँ कछू कहत ना आवै, बाहूबल बल धीरज री ।। टेक ।।
जल मल दिष्ट युद्ध में जीत्यो, भरत चक्र को वीरज री ।। टेक ।।
जोग लियो तन फननि घर कियो, शोभा ज्यों अलि नीरज री
द्यानत बहुत दान तब दै हो, पा हों चरनन की रज री ।। कहा.।।

जिन बाहुबली भगवान ने जल,मल्ल और दृष्टि युद्ध में भरत चक्रवर्ती के अपार बल-वीर्य को भी परास्त कर विजय प्राप्त की थी। उनकी महिमा के बारे में मुझसे कुछ कहते नहीं बनता उनके बल-वीर्य और धैर्य के बारे में कहाँ तक कहूँ।

फिर मुनिपद धारण किया तो साधनाकाल में सर्पो ने जिनके शरीर पर बांबियाँ बनाली वे कमल पर मंडलाते भँवरे के समान शोभायमान हो रहे हैं।

द्यानतराय कहते हैं कि बहुत दान देने वाले को उनके चरणों की रज की प्राप्ति होती है। अर्थात उनके दर्शन का अवसर मिलता है। मुझे भी उनकी चरणरज मिले मैं भी बहुत दान करूँगा।

आकलन एक वर्ष का

संस्कार प्रवाह

आसमान में टिमटिमाते तारों के बीच एक अटूट ध्रुव तारा सदलगा में उदित हुआ मल्लप्पा का दुलारा माँ श्रीमति का लाड़ला ग्राम की माटी में गिरा उठा दौड़ा खेला बाल क्रीड़ाओं से जिसने सबको सम्मोहित किया धर्म संस्कारो से अभिपूरित युवा विद्याधर संयम ज्ञान की पिपासा में निकल पड़ा राजस्थान के मदनगंज किशनगढ़ में आचार्य गुरुवर ज्ञानसागर जी को पाकर विलक्षण प्रतिभा के धनी बने और वे अगााध विद्या के सागर बन गये।

30 जून 1968 की तपती दुपहरी में मेघों की छाया तले अचानक रिमझिम फुहार के बीच मुनि विद्यासागर बन गये

22 नवम्बर सन् 1972 को आचार्य पद पर आसीन हुए साहित्य सृजेता बनकर युग प्रवर्तक मूकमाटी महाकाव्य की रचना की तप स्वाध्याय और ध्यान में लीन रहने वाले तपोपूत साधक ने प्रयोगधर्मी कवि बनकर हिन्दी का उत्कृष्ट प्रेम प्रगट किया। बहुभाषा विद् अध्यात्मदर्शन धर्म संस्कृति इतिहास साहित्य न्याय व्याकरण एवं योग विद्या में अनुपम विशिष्टता रखने वाले तार्किक विद्वान निस्पृही संत उत्कृष्ट चर्या के धनी पूज्य श्री जन जन के वन्दनीय बने। राष्ट्रवाद जिनकी उत्कृष्ट पहचान होने से राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर जी राष्ट्रसमाज के श्रेष्ठ मार्गदृष्टा है। ऐसे दिगम्बर जैन संत के चरणों में कोटि कोटि नमन आप भी करें हम भी करे सब मिलकर उनका संयम स्वर्ण महोत्सव अविस्मरणीय बनाने हेतु 28 जून से संपूर्ण भारत एवं विदेशों में भी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का संयम स्वर्ण महोत्सव मनाया गया जिसके अंतर्गत आचार्य प्रणीत ग्रंथो का प्रकाशन किया गया जिनकी संख्या पचास रही आर्यिका पूर्णमति माता जी द्वारा ज्ञानधारा, मेरे गुरुवर, गुरुभक्ति शतक, लेखनी लिखती, गुरु गुरु, गुरु से सुना वही चुना, मुनि प्रणम्य सागर जी द्वारा अनासक्त महायोगी एवं आर्यिका अंतरमती माता जी द्वारा आत्मदर्शी जैसी श्रेष्ठ रचनाएँ प्रकाशित हुई। मुनि श्री उत्तम सागर जी महाराज द्वारा विद्यासागर की पंचास लहरे नामक काव्य लिखा गया। मुनि अजितसागर जी ने सदगुरु के प्रसंग बने जीवन के अंग, श्रमण परम्परा के महाश्रमण, आचार्य विद्यासागर की चेतन कृति, महाश्रमण विद्यासती निगाहबान स्वराज व भारत अहिंसा सूत्र तथा दो हजार प्रवचनांस का संग्रह विद्यावाणी के अंतर्गत किया। मुनि चन्द्रसागर जी द्वारा गुरु पाद पूजन, गुरु गरिमा गुणगान, जैसी कृतियों का प्रकाशन हुआ। आर्यिका मृदुमति माताजी के ज्ञान विद्याजली का सृजन किया। मुनि कुन्थुसागर जी ने गुरुप्रेरणा एवं परमार्थ देशना के नाम से आचार्य श्री की सूक्तियों का संकलन किया एवं मुनि श्री प्रसादसागर जी द्वारा दृष्टांत से सिद्धांत की ओर कृति का संकलन हुआ तथा संस्कार सागर श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर से भी 50 ग्रंथो का प्रकाशन हुआ। साहित्य के साथ-साथ लाखों सिक्के साने चाँदी व तांबे के बने और लगभग 300 कीर्तिस्तम्भों का निर्माण सम्पूर्ण देश में हुआ। जिसमें श्रवणबेलगोल एवं आचार्य श्री की दीक्षा स्थली अजमेर का कीर्ति स्तम्भ विशेष है। वर्ष भर जगह जगह स्वास्थ्य शिविर, नेत्र परीक्षण, एक्युप्रेशर नाड़ी परीक्षण शिविर, अर्हंम ध्यान योग शिविर, शिक्षण शिविर, प्रशिक्षण शिविर प्रतियोगिताएँ - पत्राचार पाठ्यक्रम, नाटक मंचन, विद्योदय फिल्म, मूकमाटी एलीवेशन फिल्म पँचास रथ यात्रा, पूजन, विधान, जाप अनुष्ठान आदि बहुत से कार्य इस वर्ष में हुये।

देश के कोने-कोने में गुरुदेव का संयम स्वर्ण महोत्सव अनेक कार्यक्रमों के साथ जैन एवं अजेन श्रद्धालु जनों ने मनाया साहित्य स्मारक एवं संस्कार निर्माण की पहल के साथ वर्ष गुजर गया आचार विचार के साथ भावी पीड़ी का निर्माण हुआ अभी समर शेष है। अब देखो क्या होता है।

बुन्देलखण्ड के भागीरथ-आचार्य विद्यासागर जी महाराज

❊ पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन (रजवाँज सागर म.प्र.) ❊

समय के अनादि अनन्त प्रवाह में अनेक परिवर्तन स्वतः होते रहते हैं। इसमें द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव और भाव परिवर्तन में उतार-चढ़ाव परिणमित होते हैं। हम जिस काल, क्षेत्र एवं भव में जन्म लेते हैं वहाँ की जानकारी प्राप्त करते हुए संसार परिभ्रमण और वस्तु के परिणमन का चिन्तन करते हैं । जैसे इस भरतक्षेत्र के प्रथम चक्रवर्ति भरत ने षट्खण्ड रूप क्षेत्र का साम्राज्य पाया।

भगवान महावीर स्वामी के समय गणराज्य स्थापित हुए। कालान्तर में यह क्षेत्र छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो गया। अनेक जैन-अजैन राजाओं ने इस पृथ्वी पर शासन किया। राजा का राजधर्म ही राज्य धर्म हुआ करता था किन्तु राजा की उदारता के कारण अन्य धर्म भी पल्लवित और पुष्पित होते रहे हैं। राज्य व्यवस्थाओं के उतार-चढ़ाव प्रतिकूलता-अनुकूलता में भी धर्म व्यवस्थाएँ प्रभावित होती रही हैं।

बुन्देलखण्ड का प्रादुर्भाव :- सन् 831 से सन् 1290 तक चन्देलवंशीय राजाओं का शासन काल रहा। सन् 831 नन्नुक राजा ने चंदेल शासन की स्थापना का प्रयास किया उनके पुत्र वाकपति इनके पुत्र जय विजय और इसी परम्परा में राजा यशोवर्मन ने स्वतंत्र चन्देल राज्य की स्थापना की इन्होंने गोल्लाचार्य के रूप में श्रवणबेलगोला में दीक्षा ग्रहण की थी। इस चन्देल शासन को बढ़ाते हुए राजा हर्ष, राहिल, मदनवर्मन आदि शासकों ने जिनशासन को वृद्धिगंत किया । चन्देल शासक परमर्द्धिदेव को सन् 1182 में पृथ्वीराज चौहान द्वारा पराजित होने से चन्देल शासन छिन्न-भिन्न होने लगा। चन्देल राजाओं द्वारा शासित क्षेत्र जिसे दशार्ण, जेजाभुक्ति, चित्रकूट, यर्जोहोती, गोल्लदेश, विन्देलखण्ड एवं बुन्देलखण्ड आदि नाम से जाना गया। महोबा, खजुराहो एवं कालिंजर इनकी राजधानी रही एवं मदनपुर, अजयगढ़, नवागढ़, दुधई, चाँदपुर आदि महानगर एवं प्रसिद्ध व्यापारिक स्थल रहे हैं।

मुगल शासन में जैन मुनियों की स्थितिः- सन् 1175 में मुहम्मद गौरी ने भारत पर अनेक बार आक्रमण किये किन्तु वह यहाँ ठहरा नहीं। यहाँ पर गुलाम खानदान के सुल्तान और उन्हीं से भारत पर मुसलमानी बादशाहत की शुरुआत हुई। उन्होंने 1206 से 1290 ईस्वी तक राज्य किया। उसके बाद खिलती तुगलक एवं लोदी बंशो के बादशाहों ने सन् 1290 से 1526 ई. तक शासन किया। इन बादशाहों के समय दिगम्बर मुनि निर्बाध धर्म प्रचार करते रहे हैं । बाबर 1526 से 1530 ईस्वरी हुमायुँ 1530 से 1556 ईस्वी अकबर 1556 से 1605 ईस्वी जहाँगीर 1605 से 1627 ईस्वरी शाहजहाँ 1627 से 1658 ईस्वी के समय दिगम्बर मुनियों की संख्या अल्प रह गई थी।

औरंगजेब का शासन काल सन् 1658 से 1707 तक रहा,इस काल में उसने जनता व धर्म पर अनेक अत्याचार किये। सन् 1663 में तीर्थों पर टेक्स लगाया, सन् 1668 में त्योहारों पर प्रतिबंध लगाया, सन् 1699 में मंदिरों को तोड़ने का आदेश दिया था। इन आदेशों से अत्याचार बढ़े जिससे धर्मी जनों में भय वातावरण बनता गया। श्रावक मूर्ति और ग्रन्थों

की सुरक्षा में लग गये। व्रत संयम एवं धार्मिक कार्यों को प्रच्छन्न रूप छिपकर से करना पड़ता था। मुनि नगर आदि में विहार नहीं कर पाते थे।

ब्रिटिश शासन में दिगम्बर मुनि :- महारानी विक्टोरिया ने अपनी 1 नवम्बर सन् 1858 की घोषणा में कहा था कि ब्रिटिश शासन की छत्र छाया में प्रत्येक जाति और धर्म अनुयायियों को अपनी परम्परागत धार्मिक और समाजिक मान्यताओं को पालन करने में पूर्ण स्वाधीनता होगी । कोई भी कर्मचारी किसी के धर्म में हस्तक्षेप नहीं करेगा। ब्रिटिश शासन में सभी धर्मों के प्रति सद्भाव की भावना थी। इनका उद्देश्य भारत में व्यापार करना एवं सम्पदा का अधिग्रहण करना था।अतः इन्होंने धर्म और धर्मस्थलों को नुकसान नहीं पहुँचाया। इसी काल में चारित्र चक्रवर्ति आचार्य शान्तिसागर जी महाराज ने जैन धर्म की ध्वजा सम्पूर्ण भारत देश में फहराई जिसका सुपरिणाम हम सबके सामने है।

दक्षिण भारत में दिगम्बर मुनियों का सद्भाव :- दक्षिण भारत के नगर, गाँव, गिरि, गुफाओं, में अनेक दिगम्बर जैन मुनि ज्ञान-ध्यान में लीन रहते थे। दक्षिण भारत में मुनियों का विहार अविच्छिन्न रूप से होता रहा । मुनिराजों की अल्प संख्या, स्वाध्याय की कमी एवं समय की प्रतिकूला के कारण मुनियों के आचरण में शिथिलता का प्रादुर्भाव हो गया था । श्रावकों एवं मुनिराजों में धर्म के प्रति अपार आस्था थी । गृहस्थ श्रावकजन, व्रती एवं मुनियों की सेवा करते थे, आहार, विहार एवं वसतिका देते थे।

उत्तर भारत में दिगम्बर मुनि धर्म :- उत्तर भारत में मुनियों के दर्शन होना अंसभव समझा जाता था । उच्च श्रावक का जीवन व्यतीत करने वाले भी बहुत कम थे । धर्म, अन्धविश्वास एवं रूढ़ियों में उलझकर रह गया था । विद्वान् कहीं कहीं होते थे, वे मात्र स्वतः स्वाध्याय के सेवी थे। कहीं कहीं मंदिरों आदि में भी स्वाध्याय होता था। तो तत्त्वार्थ सूत्र तथा भक्तामर स्तोत्र का पाठ कर लेता था, वह आज के प्रकाण्ड पण्डितों से भी अधिक सम्मान और श्रद्धा का पात्र समझा जाता था।

बुन्देलखण्ड दीपक श्री गणेशप्रसाद वर्णी जी :- ऐसे काल में बुन्देलखण्ड की पावन धरा श्री गणेशप्रसाद वर्णी जी के धन्य हुई। वर्णी जी ने संवत 1931 मे जन्म लिया, संवत 1952 से 1984 तक अनेक स्थानों से शिक्षा प्राप्त की संवत 1970 वर्णी हुए। उन ने शिक्षा के प्रति समाज को जाग्रत करने का कार्य किया और सागर, द्रोणागिर, बरुआसागर, आहार, शाहपुर, जबलपुर, पटनागंज एवं मलहरा आदि स्थानों पर पाठशालाओं, विद्यालयों, शिक्षा मन्दिरों और गुरुकुलों की स्थापना की। इससे स्वाध्याय के प्रति रुचि बढ़ी समाज में धर्म के प्रति जागरुकता का संचार हुआ । उन्होंने गाँव-गाँव, नगर-नगर जाकर धर्मध्वजा लहराई । दिनांक 05.09.1961 को यह दीपक बुझ गया। बुंदेलखंड एक बार फिर अनाथ हो गया । लाग निराश होने लगे अब कोई तारणहार दिखाई नही दे रहा था।

बुन्देलखण्ड सूर्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज :- आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज बेलगाँव कर्नाटक 1946 में जन्में, अजमेर राजस्थान 1968 में दीक्षा और नसीराबाद राजस्थान 1972 में आचार्य पद प्राप्त कर लगभग सन् 1975 से अनवरत वे बुंदेलखण्ड की भूमि को अपनी चरण रज से पावन कर रहे हैं।

सन् 1976 से 2017 तक 42 चातुर्मास हुए जिसमें 32 चातुर्मास मध्यप्रदेश में हुए। इसमें भी सबसे ज्यादा समय बुन्देलखण्ड को प्राप्त हुआ। इसका सुपरिणाम यह हुआ कि बुन्देलखण्ड के गाँव-गाँव, नगर-नगर में दर्शन, ज्ञान, चारित्र और देव शास्त्र गुरु के प्रति बहुमान बढ़ा। संयम एवं व्रतादिक के ग्रहण करने के भाव उत्पन्न होने लगे।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने आचार्य पद ग्रहण करने के उपरान्त सर्वप्रथम दीक्षा देने की प्रकिया बुन्दलेखण्ड से ही प्रारम्भ की। सन् 1980 द्रोणगिर में मुनि समयसागर जी, सन् 1980 मोराजजी में मुनियोगसागर जी, मुनि नियम सागर जी, सन् 1980 नैनागिर में मुनि चेतन सागर जी, ओम सागर जी, सन् 1982 नैनागिर में मुनि क्षमासागर जी, मुनि गुप्तिसागर जी, मुनि संयम सागर जी, को दीक्षा प्रदान कर बुन्देलखण्ड का मोक्षमार्ग प्रशस्त किया। सन् 1985 अहार जी में, सन् 1988 सोनागिर में 2004, जबलपुर में सन् 2014 विदिशा में सन् 2015 बीनाबारह में दीक्षाओं का क्रम अनवरत गतिमान है।

आपने लगभग 172 आर्यिका दीक्षा प्रदान की जिसमें शताधिक दीक्षाएँ बुन्देलखण्ड धरा पर दी। सन् 1987 नैनागिर आर्यिका गुरुमति जी आदि 11 सन् 1989 कुण्डलपुर में आर्यिका प्रशान्तमति जी आदि सन् 19990 नरसिंह पुर में आर्यिका साधनामति जी आदि सन् 1992 कुण्डलपुर आर्यिका आदर्शमति जी आदि सन् 1993 में जबलपुर आर्यिका सिद्धान्तमति आदि सन् 2006 आर्यिका स्वस्थमति जी आदि शताधिक आर्यिका दीक्षाएँ प्रदान कर बुन्देलखण्ड का अनन्त उपकार किया है।

आपके द्वारा बुन्देलखण्ड के अनेक युवाक-युवतियों ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण अपने जीवन का उद्धार किया। जिनने दीक्षा या व्रतादिक ग्रहण किए उनका कल्याण तो हुआ ही है साथ ही परिवारजनों का भी परम उपकार हुआ है। आपके विशाल संघ की वैयावृत्ति आहार विहार आदि कराने का सौभाग्य सहज की प्राप्त होता रहता है। इससे घर-घर में शुद्ध आहार चर्या, संयमित जीवन, बच्चों एवं युवाओं में सुसंस्कारो का संचार हुआ। अतः आप के कारण सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड धर्ममय है।

आपने जहाँ जीवन्त कृतियाँ समाज को प्रदान की हैं वही जिनवाणी की अर्हिनिश सेवा एवं जैनागम, दर्शन, सिद्धान्त का आलोडन-विलोडन कर अनेक साहित्यक कृति यों का सृजन भी इसी बुन्देलखण्ड की पावन धरापर ही किया है।

बुन्देलखण्ड के भागीरथ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज :- आपकी विशुद्ध चर्या, सरज जीवन शैली, निरन्तर अध्ययन, मनन-चिन्तन अभीक्ष्णज्ञानोपयोगिता, संयम-साधना, त्याग-तपस्या सर्वोत्कृष है। पूरा विश्व आपके दर्शन के लिए हमेशा लालयित रहता है। आपको अनेक स्थानों की समाज अपने नगर ले जाने का प्रयास करते है किन्तु आचार्य श्री बुन्देलखण्ड तपः पूत साधना से पवित्र यह बुन्देलखण्ड आपके गुणगौरव का यशोगान कर रहा है।

जिस प्रकार इन्द्र के द्वारा श्री भागीरथ मुनिराज के चरणों का अभिषेक किया गया, उसका प्रवाह गंगानदी में मिल गया उसी समय गंगा नदी भी इस लोक में तीर्थरूपता को प्राप्त हुई। उसी प्रकार आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पावन चरणों की रज एवं चरणभिषेक जल से पवित्र यह बुन्देलखण्ड भी तीर्थ बन गया है।

जैनागम में : द्रव्यार्थिक नय-पर्यायार्थिक नय

❊ पं. श्री कैलाशचन्द मलैया (सांगानेर जयपुर) ❊

जैन आगम के क्षेत्र में प्रवेश करने से पूर्व नयज्ञान की सर्वोपरि आवश्यकता होती है। क्योंकि जैन-सिद्धान्तों का प्रतिदान नय के आधार पर ही समझा और गुना जा सकता है। जिन्हें नयज्ञान से परहेज है, वे आजतक जैनागम के वास्तविक मर्म को नहीं जान सके। वीतरागमय धर्म के मर्म को जाने बिना मुक्ति संभव नहीं है। इस मर्म को जानने के लिए दिगम्बर आचार्यों ने नय की आवश्यकता अनिवार्य रूप से बताई है। धवला में कहा है कि

णत्थि णएहि विहूणं सुत्तं अत्थो व्व जिनवर मदम्हि।
तो णयवादे णिउणा मुणिणो सिद्धंतिया होन्ति॥

जैन मत में नयवाद के बिना सूत्र और अर्थ कुछ भी नहीं कहा गया है। इसलिए जो मुनि नयवाद में निपुण होते हैं, वे सिद्धान्त के ज्ञाता समझने चाहिये।

जैसे अध्यात्म के मर्म को समझने के लिए निश्चय नय और व्यवहार नय की आवश्यकता होती है वैसे ही जैनागम को समझाने के लिए द्रव्यार्थिक नय और पर्यायार्थिक नय को समझने की आवश्यकता होती है। वैसे नय के मुख्यरूप से उक्त दो-दो भेद कहे गये हैं, परन्तु विशेष रूप से सात भेद नैगम संग्रह आदि कहे गये हैं। फिर इनके अवान्तर भेद अनंत हो सकते हैं। जितने कथन उतने ही नय के भेद हो सकते हैं, क्योंकि वक्ता के अभिप्राय को ही नय कहा गया है।

जगत में वस्तु को सामानय व विशेषात्मक कहा गया है। सामान्य अंश को द्रव्य और विशेष अंश को पर्याय कहते हैं। यही कारण है कि वस्तु के सामान्य अंश को, ग्रहण करने वाले ज्ञान के अंश को द्रव्यार्थिक नय और विशेष अंश को ग्रहण करने वाले ज्ञान के अंश को पर्यायार्थिक नय कहा जाता है तथा दोनों अंशो को एक साथ ग्रण करने वाले ज्ञान को प्रमाण कहा गया है। जैसा कि कहा भी गया है :- **सामान्य -विशेषात्मा तदर्थो विषयाः।2**

सामान्य-विशेषात्मक पदार्थ प्रमाण का विषय है।

जैनागम में वस्तु को सामान्य विशेषात्मक, नित्यानित्यात्क, एकानेकात्मक, भेदाभेदात्मक बताया गया है। उसमें द्रव्यार्थिक नय का विषय बनाने वाला वस्तु का सामानय अंश नित्य एक एवं अभेद स्वरूप तथा पर्यायार्थिक नय का विषय बनाने वाला विशेष अंश अनित्य अनेक एवं भेद स्वरूप है।

इस प्रकार द्रव्यार्थिक नय वस्तु के नित्य एक और अभेद रूप सामान्य अंश को ग्रहण करता है। और पर्यायार्थिक नय वस्तु के अनित्य, अनेक और भेद रूप विशेष अंश को ग्रहण करता है।

यदि प्रमाणभूत वस्तु को द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा से देखें तो द्रव्य की अपेक्षा से सामान्य-विशेषात्मक, क्षेत्र की अपेक्षा से भेदाभेदात्मक, काल की अपेक्षा से नित्यानित्यामक और भाव की अपेक्षा से

एकानेकात्मक रूप वस्तु है।

इन्हीं को द्रव्यायार्थिक नय की अपेक्षा से देखें तो द्रव्यांश में सामान्यत्व, अभेदत्व, नित्यत्व एवं एकत्व समाहित रहता है तथा पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा से देखें तो पर्यायांश में विशेत्व, भेदत्व, अनित्यत्व एवं अनेकत्व समाहित रहता है। इसी कथन को हम इस प्रकार से भी निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं। द्रव्य, समान्य, अभेद, नित्य और एक ये सभी विशेषण अलग-अलग अपेक्षाओं से द्रव्यार्थिक नय का विषय हैं या कहें कि एकार्थ वाची हैं। इसी प्रकार पर्याय, विशेष, भेद, अनित्य और अनेक ये सभी विशेषण अलग-अलग अपेक्षाओं से पर्यायार्थिक नय का विषय हैं या कहें कि एकार्थवाची हैं।

यद्यपि एक दृष्टि से उपर्युक्त शब्द एकार्थवाची हैं, तथापि विभिन्न अपेक्षाओं के प्रयुक्त होने पर अपना भिन्न भिन्न भाव भी व्यक्त करते हैं- इस बात को हमें नहीं भूलना चाहिए। जैसे जब हम कहें कि वस्तु पर्यायार्थिक नय से अनेक रूप है तो समझना चाहिए कि पर्यायार्थिक नय का यह प्रयोग भाव की अपेक्षा से कहा गया है। इसमें वक्ता का अभिप्राय पर्यायर्थिक नय से भाव संबधी विशेषता बताना है। इसी प्रकार जब हम यह कहें कि वस्तु पर्यायार्थिक नय से अनित्य है तो समझना चाहिए कि पर्यायार्थिक नय का यह प्रयोग काल की अपेक्षा किया गया है, इसमें वक्ता का अभिप्राय काल संबधी विशेषता बताना है।

इसी प्रकार जब हम यह कहें कि वस्तु द्रव्यार्थिक नय से एक रूप है तो समझना चाहिए कि द्रव्यार्थिक नय का यह प्रयोग भाव की अपेक्षा से किया गया है। इसमें वक्ता का अभिप्राय द्रव्यार्थिक नय से भाव संबंधी विशेषता बताना है। इसी प्रकार जब हम यह कहें कि वस्तु द्रव्यार्थिक नय से नित्य है तो समझना चाहिए कि द्रव्यार्थिक नय का यह प्रयोग, काल की अपेक्षा से किया गया है और इसमें वक्ता का अभिप्राय काल संबधी विशेषता बताना है।

यद्यपि द्रव्यार्थिक नय के विषय की सामान्य, अभेद, नित्य एवं एक संज्ञाएँ भी हैं तथापि ''द्रव्य'' यह संज्ञा ज्यादा वजनदान है। इसी प्रकार पर्यायार्थिक नय के विषय की भी यद्यपि विशेष भेद, अनित्य एवं अनेक संज्ञा भी हैं तथापि पर्याय यह संज्ञा अधिक वजनदार हैं क्योंकि इन द्रव्य और पर्याय संज्ञाओं के कारण ही तो इन नयों के नाम द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक पड़े।

यहाँ द्रव्यार्थिक नय का विषय द्रव्य और पर्यायार्थिक नय का विषय पर्याय है। परन्तु द्रव्य के अर्थ जैनागम में दो प्रकार से पाये जाते हैं। जैसे **''गुणपयर्यवद द्रव्यम्''** गुण और पर्यायवान जो होता है उसे द्रव्य कहा गया है :- यह प्रमाण का विषय है। परन्तु आगे जाकर कहा गया है **''तदभावः परिणामः''** अर्थात जो द्रव्यें जिसरूप में हैं, वहीं पर्यायें हैं। कहने का मतलब यह है कि द्रव्य की अवस्था विशेष को ही पर्याय कहा गया है। यहाँ प्रसंगवश द्रव्य एक नय का विषय है जिसे द्रव्यांश भी कहा जा सकता है और दूसरी तरफ द्रव्य प्रमाण का विषय है और ये द्रव्यें आगम में छः पायीं जाती हैं। जैसेः जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल इन छः द्रव्यों के समूह को ही संसार/ विश्व कहते

हैं। अतः द्रव्य शब्द का जिनागम में जिस प्रयोजन से प्रयोग किया गया हो उसे उसी अभिप्राय से ही समझना सच्ची नय व्यवस्था है। यहाँ द्रव्यार्थिक नय में ''द्रव्य'' के द्रव्यांश को ही विषय बताया गया है।

पज्जय गउणं किच्चा दव्वं पिय जो हु गिहणइ लोए।

सो दव्वत्थिय भणिओ विवरीओ पज्जयत्थिण ओ।।

पर्याय को गौण करके, जो द्रव्य को ग्रहण करता है, वह द्रव्यार्थिक नय है और इससे विपरीत जो द्रव्य को गौण करके पर्याय को ग्रण करता है उसे पर्यायार्थिक नय कहते हैं।

उक्त परिभाषा से स्पष्ट होता है कि नय विवक्षा में मुख्य और गौण की व्यवस्थायें होती हैं। जहां द्रव्य को मुख्य या गौण किया जावेगा वहाँ द्रव्यार्थिक या पर्यायर्थिक नय का प्रयोग कहा जावेगा। समसयार की आत्मख्याति टीका में परिभाषा दी गई हैं।

द्रव्य पर्यात्म के वस्तुनि द्रव्यं मुख्यतयानुभावयतीति द्रव्यार्थिकः पर्यायं मुख्यतयानुभावयतीति पर्यायार्थिकः।

द्रव्य पर्यायात्मक स्वरूप वस्तु में जो मुख्य रूप से द्रव्य का अनुभव कराये वह द्रव्यार्थिक नय है और जो मुख्यरूप से पर्याय का अनुभव कराये, वह पर्यायार्थिक नय है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हुआ कि वस्तु के द्रव्यांश का जानने/बताने वाला/ अनुभव कराने वाले ज्ञान को द्रव्यार्थिक नय और पर्यायांश को जानते / बताने वाले/ अनुभव कराने वाले ज्ञान को पर्यायार्थिक नय कहते हैं।

यहां विशेष रूप से सावधान करते हुये बाताया है कि द्रव्यार्थिक चक्षु से देखते समय पर्यायार्थिक चक्षु को सर्वथा बन्द रखना है, किन्चित मात्र भी खुला नहीं रखना है। यदि पर्यायार्थिक चक्षु को किंचित मात्र भी खुला रखा गया तो द्रव्यार्थिकनय का विषयभूत द्रव्य दिखाई नहीं देगा। जैसे जीव द्रव्य में रहने वाले नारकत्व, तिर्यचंत्व, मनुष्यत्व, देवत्व, और सिद्धत्व पर्यायरुप अनेक विशेषों के देखने वाले धर्म को /चक्षु को पर्यायार्थिक नय कहते हैं। परन्तु जब उक्त पर्यायों में पाए जाने वाले सामान्य धर्म/ चक्षु को द्रव्यार्थिक नय कहते हैं।

जैसे तीरन्दाज को अपना लक्ष्य साधने के लिए एक आँख को सर्वथा बन्द करना पड़ता है, उसी प्रकार एक नय-विज्ञ को शास्त्रों के मर्म को समझने के लिए वस्तु में पाये जाने वाले दो धर्मों (द्रव्य-पर्याय) में से एक को मुख्य और दूसरें को गौण करना ही होगा। क्योंकि दोनों को गौण करने से कुछ भी समझमें नहीं आयेगा अथवा दोनों ही आँखों से देखने पर वह वस्तु प्रमाण स्वरूप हो जावेगी नय रूप नहीं होगी।

वस्तु के दो मुख्य धर्मों में से द्रव्य में जो कोई परिवर्तन या बिगाड़-सुधार नहीं होता है। बल्कि पर्याय में निरन्तर प्रति समय परिवर्तन होता रहता है। जब पर्याय में प्रति समय परिवर्तन होता रहता है। जिस प्रकार अपरिवर्तनशील शुद्ध बुद्ध तत्व को जानने से हम निर्भय हो जाते हैं, दीनता का भाव नहीं आता है। उसी प्रकार परिवर्तन शील विकार युक्त पर्यायें हमें आश्वस्त करती है कि चिन्ता करने की कोई बात नहीं हैं। क्योंकि यह अशुद्धता शाश्वत नहीं है। संयोग और विकार युक्त पर्यायों की क्षणभंगुरता जग जाहिर है।

यह ज्ञान ही हमें वैराग्य का उत्पादक एवं वीतरागता का पोषक है।

वस्तु का स्वभाव अगाध है, अपार है। उसका तल एवं पार-पाना असम्भव तो नहीं पर गम्भीर अध्ययन मनन की अपेक्षा अवश्य रखता है। जिस प्रकार वस्तु का स्वरूप अगाध और अपार है उसी प्रकार उसका प्रतिपादन करने वाले प्रमाण-नयात्मक शैली भी कम गम्भीर नहीं है। जटिल से जटिल विषय आने पर भी निराश नहीं होना चाहिए उदास नहीं होना चाहिए। इसके अध्ययन से भी दूर नही होना चाहिए बल्कि सतत् प्रयासरत रहना चाहिए। क्योंकि सच्चा मार्ग प्राप्त कर जीवन को सफल बनाने का एक मात्र यही रास्ता है, जैनेतर दर्शनों में जैनधर्म को प्रतिष्ठित कराने का एक मात्र श्रेय नयवाद को ही जाता है। जिसके आधार पर अनेकान्त एवं स्यादवाद रूपी हथियार से मत-मतान्तरों को क्षणमात्र में परास्त कर विजय श्री अर्जित की गई।

द्रव्यार्थिक नय के मुख्य रूप से दो भेद कहे गये हैं -

1. शुद्ध द्रव्यार्थिक नय 2. अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय

शुद्ध मेवार्थः प्रयोजनमस्येति शुद्ध द्रवयार्थिकाः । अशुद्ध द्रव्य मेवार्थः प्रयोजन मस्येत्य शुद्ध द्रव्यार्थिकः।

शुद्ध द्रव्य ही जिसका प्रयोजन है, वह शुद्ध द्रव्यार्थिका नय है और अशुद्ध द्रव्य ही जिसका प्रयोजन है वह अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय है।

शुद्ध द्रव्यार्थिक नय के तीन भेद कहे गये हैं :-

1. कर्मोपाधि निरपेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिक नयः- जो कर्मो के मध्य में स्थित अर्थात कर्मों से लिप्त जीव को सिद्धसमान शुद्ध ग्रहण कराता है उसे कर्मोपाधि निरपेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिक नय कहते हैं।

2.उत्पाद-व्यय निपेक्ष सत्ता ग्राही शुद्ध द्रव्यार्थिक नयः- जो नय उत्पाद-व्यय को गौण करके केवल सत्ता को ग्रहण करता है, उसे आगम में उत्पाद-व्यय निर्पेक्ष सत्ता ग्राही शुद्ध द्रव्यार्थिक नय कहते हैं।

3. भेद कल्पना निरपेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिक नयः- जो नय गुण-गुणी आदि चतुष्क रूप गुण-गुणी, स्वभाव-स्वभावान, पर्याय-पर्यायी एवं धर्म-धर्मी अर्थ में भेद नहीं करता वह भेद कल्पना निरपेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिक नय है।

अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय के तीन भेद कहे गये है :-

1. कर्मोपाधि सापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक नयः- जो नय सब रागादि भावों को जीव या जीवन को कहता है, वह कर्मोपाधि सापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय है।

2. उत्पाद व्यय सापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिकनयः- जो नय उत्पाद व्यय के साथ मिली हुई सत्ता को ग्रहण करके द्रव्य को एक समय में उत्पाद-व्यय ध्रौव्यरूप कहता है, वह उत्पाद व्यय सापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय है।

3. भेद कल्पना सापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय :- जो नय द्रव्य में गुण-गुणी आदि का भेद करके उनके साथ सम्बन्ध कराता है वह भेद कल्पना से सहित होने से भेद कल्पना सापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय है।

उक्त भेदों के अतिरिक्त द्रव्यार्थिक नय के अन्य आचार्यों ने चार प्रकार के और भी भेद बताये हैं। जिनके नाम इस प्रकार हैः-

1. अन्वय द्रव्यार्थिक नय :- जो नय समस्त स्वभावों में ''यह द्रव्य है''- इस प्रकार अन्वय रूप से द्रव्य की स्थापना करता है वह अन्व्य द्रव्यार्थिक नय कहलाता है।

2. स्वद्रव्यादि ग्राहक द्रव्यार्थिक नयः- जो नय स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र और स्वभाव सत-द्रव्य को ग्रहण करता है, वह स्वद्रव्यादि ग्राहक द्रव्यार्थिक नय है।

3. पर द्रव्यादि ग्राहक द्रव्यार्थिक नयः- जो नय शुद्ध-अशुद्ध और उपचरित स्वभाव से रहित परमस्वभाव को ग्रहण करता है, उसे मोक्षाभिलाषियों द्वारा परमभावग्राही द्रव्यार्थिक नय जानना चाहिये।

उक्त द्रव्यार्थिक नय के भेदों को जानने का अभिप्राय यह है कि वस्तु अनन्त स्वभाव वाली है, उन अनन्त स्वभावों का वर्णन करना या कथन करना संभव नहीं है, तथापि एकाधिक स्वभावों के कथन द्वारा उनके साथ अन्वय रूप से बहने वाले अनंत स्वभावों को अभेद रूप से ग्रहण करना ही इस नय का मूल प्रयोजन है। जब हम आत्मा को मात्र ज्ञानस्वभावी, आनन्द स्वभावी या ज्ञानानन्द स्वभावी कहते हैं, तब हमारा अभिप्राय आत्मा को मात्र ज्ञानस्वभावी या ज्ञानानन्द स्वभावी कहने का ही नहीं होता, अपितु ज्ञान और आनन्द जैसे अनंत स्वभावों से संयुक्त अनंत स्वभावी अखण्ड अभेद आत्मा समझाने का होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अनंत स्वभावों से संयुक्त अखण्ड अभेद वस्तु को उसी के किसी एक या एकाधिक स्वभाव के कथन द्वारा समझना, प्रतिपादन करना द्रव्यार्थिक नय का काम है।

पर्यायाथिक नय के भेदः- जिनागम में पर्यायार्थिक नय को छः भेदों मे विभक्त किया गया है।

1. अनादिनित्यपर्यायार्थिक नयः- जो नय अकृत्रिम और अनिधन अर्थात् अनादि-अनन्त चन्द्रमा सूर्य आदि पर्यायों को ग्रहण करता है, उसे जिनेन्द्र भगवान ने अनादि नित्य पर्यायार्थिक नय कहा है।

2. सादिनित्य पर्यायार्थिक नयः- जो पर्याय कर्मों के क्षय से उत्पन्न होने के कारण आदि है और विनाश का कारण न होने से अविनाशी है ऐसी सादिनित्य सिद्ध पर्याय को ग्रहण करने वाला सादिनित्य पर्यायार्थिक नय है।

3. सत्तानिरपेक्ष-अनित्य अशुद्ध पर्यायार्थिकनय :- जो सत्ता को गौण करके उत्पाद व्यय को ग्रहण करता है, वह अनित्य स्वभावग्राही शुद्ध पर्यायार्थिक नय है जैसे पर्यायें प्रतिसमय विनाशशील है।

4. सत्ता सापेक्ष-अनित्य-अशुद्ध पर्यायार्थिक नय :- अनित्यस्वभावग्राही अशुद्ध पर्यायार्थिक नय जो एक समय में धुवत्व (सत्ता) से संयुक्त उत्पाद-व्यय को ग्रहण करता है, वह अनित्य स्वभावग्राही अशुद्ध पर्यायार्थिक नय है। जैसे एक समय में पर्याय त्रयात्मक (उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यात्मक) है।

5. कर्मोपाधिनिरपेक्ष अनित्य शुद्ध पर्यायार्थिक नयः- जो संसारी जीवों की पर्याय को सिद्धों के समान शुद्ध कहता है, वह अनित्य शुद्धपर्यायार्थिक नय है।

6. कर्मोपाधिसापेक्ष-अनित्य-अशुद्ध- पर्यायार्थिक नयः- जो चारों गतियों के संसारी जीवों की अनित्य, अशुद्ध पर्यायों का कथन करता है, वह कर्मापाधि

सापेक्ष-अनित्य-अशुद्ध पर्यायार्थिक नय है। जैसे संसारी जीवों का जन्म और मरण होता है। उक्त 6 भेदों में आरम्भ के दो भेद नित्य पर्यायग्राही है एवं शेष चार भेद अनित्य-पर्यायग्राही है।

यद्यपि यह बात पूर्णतः सत्य है कि पर्याय एक समय की ही होती, तथापि एक समय की पर्याय को प्रत्यक्ष तो सर्वज्ञ परमात्मा ही जानते हैं। क्षयोपशमज्ञान वाले तो उसे सर्वज्ञ कथित आगम एवं अनुमान से ही जानते हैं। प्रति समय होने वाला परिवर्तन क्षयोपशम ज्ञानियों की पकड़ में तत्समय नहीं आता हैं।

बालक की ऊँचाई मोटाई एवं वजन यद्यपि प्रतिपल बढ़ता है तथापि प्रतिपल देखने वालों को वह बढ़ता दिखाई नहीं देता। मान लीजिए एक वर्ष में उसकी ऊँचाई 4 इंच मोटाई 2 इंच एवं 4 किलो वजन बढ़ गया। क्या यह अचानक एक दिन में ही बढा है ? नहीं ! कदापि नहीं ? वह तो निरन्तर ही बढ़ता रहा है, फिर भी यदि उसकी वृद्धि का रिकार्ड बनाया जायेगा तो वार्षिक ही बनेगा, क्योंकि प्रतिपल की वृद्धि का विवरण न तो व्यावहारिक ही है और न ही किसी व्यावहारिक प्रयोजन की सिद्धि करने वाला है।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए आगम में पर्यायों का वर्गीकरण निम्नानुसार चार प्रकारों में भी पाया जाता है

1. अनादि अनन्त पर्यायः- जो अनादि काल से है और अनन्त काल तक रहेगी, उसे अनादि अनन्त पर्याय कहते हैं। जैसे सुमेरु पर्वत, अकृत्रित जिनबिम्ब एवं जिन चैत्यालय आदि पुद्गल पर्यायें।

2. अनादि-सान्त पर्याय :- जो पर्यायें है तो अनादि काल से पर जिनका अन्त हो जाता है। उन्हें अनादि सान्त पर्यायें कहते हैं। जैसे जीव की संसार पर्यायें।

3. सादि-सान्त पर्याय :- जो पर्यायें न तो अनादि ही हैं। ओर न अनन्त ही हैं, उन्हें सादि सान्त पर्यायें कहते हैं। जैसे जीव की मनुष्य नरक आदि पर्यायें। एक समय की पर्यायें भी इसी में आती हैं।

4. सादि-अनन्त पर्यायः- जो पर्यायें अनादि से तो नहीं है पर अनन्त काल तक रहने वाली हैं। उन्हें सादि अनन्त पर्यायें कहते है। जैसे जीव की सिद्ध पर्यायें।

यहाँ ध्यान रहे जिन्हें अनादि-अनन्त आदि बताया जा रहा है वे भी पर्यायें प्रतिसमय बदलती रहती है। फिर भी लगभग वैसी की वैसी ही रहती हैं- इस अपेक्षा से उन्हें एक पर्याय कहा जाता है।

इस प्रकार वस्तु द्रव्यार्थिक नय की दृश्टि से शाश्वत ध्रुव है, अविनश्वर है, अनादि से है और अनंत काल तक रहने वाली है। उसी प्रकार पर्यायार्थिक नय की दृष्टि में प्रत्येक वस्तु पर्याय से युक्त होती हैं जो कि प्रति समय पलटती रहती है परिवर्तित होती रहती हैं। द्रव्यार्थिक नय की वस्तु ध्येय का विषय होती है जब ध्याता, ध्येय पर अपना उपयोग लगा देता है या टिका देता है, तब उसकी बाहर में शुद्ध पर्यायें स्वतः ही बनना शुरु हो जाती हैं। जैसे पारस को लोहा छू जाने पर लोहा सोना रूप में स्वतः परिवर्तित हो जाता है, वैसे ही एक बार शुद्ध-बुद्ध आत्मा को ध्येय बनाने से पर्याय केवल ज्ञान से युक्त हो ही जाती है। यही वस्तु की स्वतन्त्र व्यवस्था है। तथा द्रव्यार्थिक एवं पर्यायार्थिक नय को जानने की सच्ची उपलब्धि है।

संयम स्वास्थ्य योग

राई
Brassica Jancea

पर्याय नाम- हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी- राई

संस्कृत - राजिका, राजी, आसुरी, तीक्ष्णगंधा
मराठी - मोहरी
बंगाली - राइ, सरिथा
अंग्रेजी - इण्यिन मस्टर्ड Indian Mustard
लेटिन - ब्रेसिका जुंसिया Brassica Jancea

उत्पत्ति स्थान- सम्पूर्ण भारत, पूर्वी एशिया, अफ्रिका दक्षिण अमेरिका आदि में उत्पन्न होती है। इसके पौधे एवं फूल पीले रंग के बहुत सुन्दर दिखते हैं छोटी-छोटी फलियाँ लगती है। फल उन फलियों के अन्दर छोटे छोटे गोल गहरे ब्राउन रंग के होते है। दाल सब्जियों में बघार राई जीरे के बिना अधूरा रहता है। अतः यह हमारी मसाला दानी का प्रमुख अंग है।

प्रयोज्य अंग- पत्र, बीज, तैल

रासायनिक संगठन - बीज मे मायरोसीन Myrosin और सिनिग्रिन Sinigrin अर्थात पोटासियम माइनोरेट Potassium Myronate Ois % अनुस्पत तैल 25 % एवं सिनपीन Sinapine इत्यादि द्रव्य होते हैं।

गुण धर्म - रस - कटु तिक्त
वीर्य - उष्ण
विपाक - कटु
गुण - तीक्ष्ण

वातकफ शासक, पित्त वर्धक है, यह चटपटी, कड़वी गर्म बात प्लीहा एवं शूल नाशक है, दाह जनक , पित्तकारक नेत्र एवं वृक्कों (किड़नी) के लिए हानिकारक है। कफ गुल्म एवं कृमिरोग नाशक है।

राई पत्र - राई के पत्तों की सब्जी गरम, बलवर्धक, उष्ण स्वादिष्ट, पित्तवर्धक, वातकफ नाशक होने से कंठरोगों को ठीक करती है।

राई बीज- गरम, पसीना लाने वाले (स्वेद जनक) पाचन शक्ति को बढ़ाते हैं आक्षेप, स्नायु संबंधी विकृति एवं संधिवात में उपयोगी हैं।

राई तैल- राई का तैल उड़न शील एवं हल्का पीला होता है। यह तैल उग्र गंधी, तीक्ष्ण एवं चरपरे स्वाद वाला होता है। बंगाल के लोग इस खाने के काम में लेते हैं।

औषधीय उपयोग -

1. अपस्मार रोग में आई मूर्च्छा (बेहोशी) दूर करने के लिए राई चूर्ण का नस्य देते हैं।
2. दंत शूल में राई का चूर्ण 100 मिली ग्राम एक गिलास पानी में उवाल कर

कुल्ला करने से लाभ होता है।

3. श्वेत कुष्ठ में राई के आटे में 8 गुना सादा आटा मिलाकर एवं घी मिलाकर लेप करने से लाभ होता है। जलन होने पर लेप निकाल कर घी या तैल की मालिश करें। प्रयोग कम से कम 2-3 मास तक लगातार करें /इससे रक्ताभिशरण क्रिया प्रबल होकर श्वेत कुष्ठ ठीक हो जाता है।
4. शरीर मे कही गांठ हो गई होत तो उस पर राई का आटा एवं सादा आटा मिलाकर मोटा लेप करें । गांठ पककर फूट जाती है या बैठ जाती है। रसौली, अर्वुद एवं कांख (बगल) में होने वाली गांठ में लाभ है।
5. कफ युक्त खांसी एवं श्वांस रोग होने पर राई चूर्ण हो घी एवं चासनी मिलाकर सेवन करें।
   मात्रा 100 मिली ग्राम या आवश्यकता अनुसार

   या

   15-20 दाने राई के साबुत (बिना पीसे) ठंडे जल से सेवन करें।
6. वात वृद्धि के कारण होने वाले दर्द पर राई एवं सरसों का तैल में कपूर मिलाकर मालिश करें। आमवात, संधिशूल, गठिया अधार्ङवात आदि में लाभप्रद है। इससे रक्तामिसरण क्रिया बलवान होती है जिससे शरीर विकार दूर हो जाते हैं ।
7. शीत ज्वर एवं कम्पवात में भी इस तैल भी मालिश उष्णता पहुंचाती है अंतरंग रक्तसंचय एवं मांस पेशियों की जकड़न में इस तैल की मालिश लाभप्रद है।

चातुर्मास विशेषांक

आपके नगर में किसी भी आचार्य/उपाध्याय/साधु/आर्यिका माता जी/एलक जी/क्षुल्लक जी/ क्षुल्लिका माताजी का चातुर्मास होना तय हो गया हो तो उसकी जानकारी संस्कार सागर कार्यालय तथा व्हाटस नम्बर 8989505108 ईमेल आई डी sanskarsagar@yahoo.com पर शीघ्र अतिशीघ्र दें ताकि आगामी अंक चातुर्मास विशेषांक रहता है। इसमें सभी साधु चातुर्मास कहा करें रहें कितने साधु है किसी एक या दो व्यक्तियों का सम्पर्क सूत्र पिनकोड़ सहित दिया जाता है। अतः उपरोक्त जानकारी देकर अनुग्रहीत करें।

ब्र. जिनेश मलैया प्रधान सम्पादक संस्कार सागर

फोन नं.-0731-4003506, मो. 8989505108, 8989121008

दिगम्बर जैन श्रमण चर्या के समीचीन दिगदर्शक संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज

❊ आर्यिका विनतमति माता जी ❊

इस भौतिक युग में प्रत्येक व्यक्ति अपने उपकारी के प्रति आस्था, श्रद्धा रखता है एवं उनके सान्निध्य के पावन क्षणों को याद भी करता है। अपनी आस्था के साथ साथ दूसरों को आस्था भी उनके प्रति जागृत हो और उनके जीवन वृत्त को देखकर जानकर व पढ़कर अपने स्वयं के जीवन को समझकर परिवर्तित कर सके। जैसे किसी गायक को गाने का या कवि को कविता सुनाने का अवसर मिलने पर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता है, ठीक वैसे ही मेरे लिए ये स्वर्णिम अवसर उसी प्रकार की सुखद अनुभूति करने का प्रतीत हो रहा है। गुरु के दर्शन मिलना, उनकी वाणी सुनना व समीपता प्राप्त करना भाग्यशाली होने के सूचक हैं । गुरुचरण शरण का अनुभव ही अन्तरंग आनन्द की किरण प्रस्फुटित करता है। जिससे भाव जगत में सर्वत्र आल्हाद, समर्पण और संकल्प की राह दिखाई देने लगती है। क्योंकि आकुलित निराश्रित जीवन सहारा व सहानुभूति चाहता है। गुरु के वरहहस्त की छत्र-छाया ही इस कमी को पूरा करती है। जब गुरु की दिव्य वाणी का एक-एक शब्द हृदय को छूता हैं तब उसी प्राणी को बोध होता है कि वह कहाँ खड़ा हुआ है। जीवन विकसित करने की ललक उत्पन्न हो जाने से सम्यक् दर्शन ज्ञान और चारित्र की त्रिवेणी में अवगाहन करने के लिए गुरु चरणों में अपना जीवन समर्पित कर देता है तथा महाव्रत ग्रहण करके आत्म कल्याण में रत हो जाता हैं। कहाँ महान जैन धर्म के अगाध सिद्धान्तों को जानने वाले तथा निरतिचार संयमधारी ये गुरु महाराज, और कहाँ मुझ जैसी अज्ञानी आत्मा, लेकिन फिर भी मेरे साथ ऐसा ही हुआ गुरुदेव ने मेरी पतित आत्मा को आर्यिका दीक्षा देकर, मेरे ऊपर महान् उपकार किया है। तीर्थंकर तुल्य गुरुदेव के चरणों में यथार्थ दिशा दशा पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया। ऐसे गुरुवर के चरणों में कोटि कोटि नमन् नमन् नमन्।

इनमें क्या है ? यह कह पाना जितना कठिन है। क्या नहीं हैं ? यह कह पाना उससे भी कई गुना अधिक कठिन है। हजारों पृष्ठ लिखने पर भी गुरु की महिमा का गुण गान करना सम्भव नहीं हैं। फिर भी गुरु चरणों में रहकर जो कुछ पाया, देखा सुना और जाना उसे सहजता से यहाँ श्रद्धा की स्याही व भावों की कलम से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

बचपन से ही संस्कारित जीवन :- बचपन से ही धर्म में अनुरक्त रहने वाले साधक थे। आपका ज्ञान मात्र पुस्तकीय ज्ञान न होकर आत्मोपलब्धि के ज्ञान पर भी केन्द्रीभूत रहता था। ये मनीषी जब आचार्य श्री ज्ञान सागर जी के श्री चरणों में बैठकर शास्त्र-अध्ययन करते थे, तब आपका मन सतत् बाहर की दुनियाँ के विकल्पों को विस्मरित करता, मात्र चिन्तन-मनन में तल्लीन होता हुआ चला जाता था। इसी गहन समर्पण ने आपके अन्दर अदृष्ट जगत को देखने की दृष्टि उत्पन्न कर दी! जिससे दृश्य जगत के पीछे छिपे अदृष्ट दृष्टा को देखना ही आपका ध्येय हो गया था। पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज

ने आपकी अपने आत्मध्येय के प्रति उत्सुकता तथा प्राप्ति की योग्यता देखकर आपको मुनि दीक्षा के संस्कारों से अलंकृत कर दिया। आज आप आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज द्वारा प्रदत्त आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होकर धर्म पिपासु भव्यात्माओं को रत्नत्रय से मंत्रित कर मुक्ति मंजिल की और गतिशील कर रहे हैं। आपके जीवन का प्रत्येक क्षण स्वर्णिम इतिहास का नया स्वर्ण पृष्ठ है। आपके बढ़ते पगों का प्रत्येक कदम नवीन जीवन तीर्थ के निर्माण का शुभमंत्र है। आपकी दृष्टि का प्रत्येक बिन्दु सभी सम्प्रदायों के साथ सौहार्द्र भावना के सिन्धु का साकार रूप है। आपका प्रत्येक वचन जिनागम का सार है। आपकी चर्या मूलाचार की साकरता व्यक्त करती है। आपके ज्ञान, ध्यान और वाक् शैली में अकलंक देव व पूज्यपाद सम न्याय प्रवणता है। आपकी मुस्कान में आत्मा की सुगन्ध और सौन्दर्य दोनों है। आहार चर्या के समय सजगता, सरलता व अनाशक्ति देखकर सब आश्चर्य चकित हो जाते हैं। आपकी निग्रन्थ दिगम्बर मुद्रा से निर्विकर, निरालम्ब, निर्दोष वीतरागता का संदेश प्रतिभासित होता है। जो सच्चा योगी होता है, उसे सभी सिद्धियाँ सहज ही सुलभ हो जाती हैं। ऐसी विलक्षण प्रतिमा आप में ही परिलक्षित होती है, क्योंकि आप विशेषणों के भी विशेषण हो।

समकित चर्या के पोषक- श्रमण संस्कृति के महान उन्नायक आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज यति साधना के जीवन्त प्रतिरूपक हैं। आपकी साध्ना आत्मोन्नति की सीढ़ियों को चढ़ते हुये शाश्वत सुख व लोक शिखर को साधने वाली है। आपने अपनी चरित्र उज्जवलता से अपने जीवन की उत्कृष्ट सिद्धि को सिद्ध कर लिया है। आपके चिन्तन में दूरदर्शिता और गहराई होती है। जिससे आपकी एकाग्रता, संवेदन शीलता और कला शौर्यता को मुखरित करने में कोई शक्य नहीं है। क्योंकि आप तो संसार से पार करने वाले कुशल महानाविक हो।

अनुपम समादर सेवा - आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने अपना आचार्य पद आपको देकर आपके ही निर्देशन में करीब एक सौ अस्सी दिन की यम सल्लेखना धारण की थी। उन्होंने लगभग 6 माह पहले अन्न का त्याग कर दिया था तथा राजस्थान की भीषण गर्मी में 4 उपवास के साथ उनकी यम सल्लेखना आपकी श्रेष्ठ परिचर्या के साथ सम्पन्न हुई थी। उन दिनों में आपने अत्यन्त निष्ठा और लगन के साथ अपने गुरु की जो सेवा की थी, उसे देखकर एवं सुनकर विद्वानों ने कहा-करोड़ो रूपयों की जायदाद पाने वाला बेटा भी वैसी सेवा अपने पिता की नहीं करता, जैसी सेवा आपने अपने गुरु की। यह आपके श्रेष्ठ निर्यापकत्व का परिणाम था। आपके मानस पटल पर गुरुवर श्री ज्ञानसागर जी महाराज का यह बोध वाक्य हमेशा अंकित रहता है -निर्दोष साधना के द्वारा अप्रभावना से बचते रहना ही सच्ची प्रभावना है।

अहिंसा धर्म के प्रबोधक - अहिंसा आप की जीवन शक्ति का प्राण है, जो अनुकम्पा और वात्सल्य से संबर्द्धित होकर चारों ओर बिखरती रहती है। आपका हृदय नवनीत की तरह उज्जवल व मृदु है। जों दूसरों की पीड़ा का अहसास पाकर तुरन्त द्रवीभूत हो जाता है। पूज्य गुरुदेव का विश्व-हितैषी संदेश

है- प्रत्येक मानव को अपने क्रमिक विकसित जीवन की श्रृंखला में से निर्दयता को हटाकर सबके के प्रति मैत्री, प्रमोद, करूणा व प्रेम भाव धारण करना चाहिये। जीवन में सुख-शान्ति के लिए सदाचारी व शाकाहारी बनना हमारा कर्त्तव्य होना चाहिये। यदि प्रत्येक प्राणी को निर्भय होकर जीवन जीने का अधिकार देंगे तो अहिंसा मयी भारतीय संस्कृति पुनः जीवित होकर सृष्टि की प्राकृतिक छटा को हरा भरा करने में सफलीभूत हो सकती है जिससे महावीर स्वामी का संदेश सूत्र-**''जियो और जीने दो''** सार्थक हो सके। जिन्होंने कथनी और करनी में ऐक्यता स्थापित कर ली है। ऐसे गुरुवर को हजारों शिष्य, लाखों अनुयायी और करोड़ों श्रद्धालु सिद्धत्व पाने वीर और राम जैसा सुबह-शाम भज रहे हैं। आपकी हित-मित और प्रियवाणी से जीवन के सारे प्रश्न सुलझ जाते हैं और लगता है कि सुनते ही रहें। आपके मुख की मुस्कराहट और आशीर्वाद की अभय मुद्रा को देखकर हर व्यक्ति यही सोचता है कि मानों उसने सब कुछ पा लिया है। जिनने विशाल मुनि संघ और आर्यिका संघ को आत्म-साधना और धर्म प्रभावना में संलग्न करके अपने गुरु के शुभाशीष को साकार रूप प्रदान किया है। इनकी आगम कथ्य प्रवृत्ति से विश्व को पुनः अति प्राचीन महापुरुष ऋषभदेव व महावीर के सिद्धान्तों व निर्दोष चर्या से परिचित होने का मंगल अवसर प्राप्त हुआ है।

श्रमण संस्कृति के संरक्षक- श्रमण संस्कृति भारतीय संस्कृति में प्रधान एवं आदर्शमय संस्कृति रही है। आप चारित्र एवं अध्यातम जगत के संत-साधकों के बीच सर्वोच्च स्थान पर सुशोभित हो रहे हैं। आपने राष्ट्र, देश, समाज एवं साहित्य जगत में जो सर्व व्याप्त सर्व मान्य अनूठी कृतियों से जैन धर्म के मर्म की आधारभूत भूमिका निभाई है, वह जैन धर्म के ज्ञानवर्द्धन में बेजोड़ है। आपने आचार्य कुन्दकुन्द तथा समन्तभद्र की ऊर्जा को अपने जीवन में प्रवाहित कर उनके आदर्श, पवित्र मार्ग का अनुकरण करके जर्जरित अध्यात्म मंदिर का जीर्णोद्धार किया है। आपका सारा परिवेश, संघ और साधन भी प्रशस्त है। आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के रूप में ऐसी अनुकरणीय और सराहनीय दिव्य ज्योति प्रकाशित कर जो उपकार किया है। सारा देश व जैन समाज आपकी इस चेतन महिमा का सदा ऋणी रहेगा।

जिस प्रकार आकाश के तारे गिनना सम्भव नहीं है, उसी प्रकार पूज्य आचार्य गुरुदेव की चर्या-ज्ञान ध्यान पर चिन्तन करना सम्भव नहीं है। इनके उपकारों के प्रति कुछ भी कहना समुद्र के जल से समुद्र को ही संतर्पित करना है। पुनः पूज्य आचार्य देव के श्रीचरणों में इसी प्रकार से बोधि लाभ प्राप्त करके सिद्धत्व सुख को प्राप्त करने में समर्थ हो सकें। गुरुवर की आध्यात्मिक ऊर्जा निरन्तर वृद्धिगंत होती रहे और अनेकानेक विश्वस्तरीय धार्मिक आयामों का सृजन करते हुये रत्नत्रयी ब्रह्माण्ड में अमरता को प्राप्त कर युग-युग तक इस धरा पर जीवन्त रहे, ताकि अहिंसा-चारित्र निर्माण विश्व बन्धुतव और आत्म शान्ति का संदेश जनमानस को प्राप्त होता रहें। इसी मंगल भावना के साथ गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के श्री चरण कमल मे कोटि कोटि नमोस्तु समर्पित करती हूँ।

कविता

गुरुवर, नमोस्तु तुभ्यम

❊ लेखक : राजेन्द्र दिवाकर (सतना) ❊

उत्कृष्ट अध्यात्म विद्या के सागर
विश्व वन्द्य आचार्य श्री
शब्दों का इन्द्रधनुष कहाँ से बुनूँ
आप शब्दातीत है स्वानूभूतिमय।
बालयति अदभुत महाकवि
संत शिरोमणि अनुत्तरयोगी
विद्याधर से विद्यासागर
पूर्ण आत्म निरोगी
सिंह के समान निर्मीक, गज के समान स्वाभिमानी
जल के समान निर्मल
संयमी सृजन विराट
निज स्वभाव के स्वामी।
कन्नड़, मराठी, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी
बंगला आदि भाषाओं से परिपूर्ण
ज्ञान के धारी
मध्यम परमेष्ठी महान कल्याणकारी
अनेक गुणों के अपार सागर
मूकमाटी महाकाव्य प्रणेता
अनंतशीर्ष परम प्रसिद्ध विद्यासमुद्र
अहिंसा की लहरों के स्वर
ज्यातिर्मय गुरुवर्य नमोस्तु तुम्यम

गुरु कृपा है निराली

❊ सुबोध संघी, (जबलपुर) ❊

गुणायतन-मधुबन की पावन भूमि में एकाएक 18 फरवरी 2015 को शंका समाधान के 10 मिनट पूर्व पूज्य प्रमाण सागर जी महाराज को कहा कि मैं दीक्षा लेने जा रहा हूँ। उन्हें अचानक यह सुनकर थोड़ा लगा क्योंकि दोनों का आंतरिक अटेचमेंट कुछ ऐसा ही हो गया था। उनके वात्सलयमयी प्रेम ने ही मुझे रामटेक दीक्षा के बाद संबल प्रदान किया। तब कोलकत्ता में उन्होनं 1 वर्ष की सांत्वना देते हुए कहा कि इस एक वर्ष में तुम्हारी लिए क्या कमी है और सच भी था कि उनके पास मैं तो चाहता था वह होता था साथ ही साधना आदि भी ठीक चल रही थी- वे कहते थे मेरे पास तुम्हारे लिये सब कुछ है बस दीक्षा को छोड़कर पर मेरे मन में सब कुछ नहीं दीक्षा की ही जरुरत थी। पूज्य मुनि श्री जी ने कहा यदि जाते हो तो अब नही रोकूँगा पर तुमको वापस गुरु जी का आशीर्वाद लेकर गुणायतन आना है और यहां से विनौरी पूर्वक अच्छे से विंदा करना चाहता हूँ। मेरे मना करने पर भी उन्होंने कायोत्सर्ग करवाकर मुझे नियम दिला दिया। उन्होंने आचार्य श्री के नाम से एक पत्र दिया। मैं गुरु जी के पास आया चूंकि गुरु जी का विहार नेमावर से हो चुका था। बुधनी में गुरु जी ने पत्र पढ़कर तुरंत कहा मैंने कब मना किया दीक्षा के लिए मैं ने कहा तो आप हाँ कह दो तब उन्होंने बुलाया और कहा कि तुम्हारे लिए जब-जब दीक्षा का प्रसंग बना मन में एक विकल्प आता है कि तुम्हारे दांत बाहर की ओर है। हमने कहा ये तो जन्मजात है अब हम क्या करें उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा कि तुम्हें कुछ नहीं करना है हम सब करवा देंगे, हमें गुरु पर पूरा विश्वास था उन्होंने पूज्य संभव सागर जी महाराज को बुलाकर कहा जितना जल्दी से जल्दी हो इसके दाँतो को अंदर कराना है। बस गुरु का आशीर्वाद, असंभव संभव हो गया। इंदौर के वरिष्ठ चिकित्सकों द्वारा यह कार्य 9 मार्च को हुआ। गुरु का आदेश-नेमावर आश्रम में रहकर यह कार्य कराना है-वापस नहीं जाना है। पुण्य योग से उसी दिन आर्यिका अकम्पमती माताजी के पिताजी को संलेखना हेतु लाये। यह दुरुत्तर कार्य मेरे कंधो पर दिया गया- आश्रम के भाईयों के साथ अल्प समय में उनकी आयु पूर्णता को प्राप्त हो गयी। इसके बाद हमारी यात्रा प्रारंभ हुई। लगभग 1 माह पूज्य समयसागर जी, बीच में 20 दिन प्रमाण सागर जी एवं 16 दिवसीय शांतिविधान भी किया। पुण्य संचय हेतु कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजराज, राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि की यात्रा का सुअवसर भी प्राप्त हो गया।

गुरुवर ने नेमावर आश्रम का आशीर्वाद दिया और वहाँ रहे भी पर गुरु चरणों का सामीप्य/संगत की बात निराली होती है। इसी कारण हम पूज्य समयसागर जी, प्रमाण सागर जी, नियमसागर जी आदि मुनिराजों के पास आश्रम में रहते भी रहे और पुण्य को बढ़ाने हेतु तीर्थयात्रा की। बस तीर्थयात्रा करते हुये 27 तारीख को शाम प्रतिक्रमण के समय गुरु जी के कक्ष में पहुँचे। गुरु जी मुस्कुरा दिये

हम समझ गये कि इस चातुर्मास में हमारा कल्याण अवश्य होगा। उस दिन हमने अपना लिखा पत्र नहीं दिया 28 को पत्र दिया-पढ़ा सोचकर बोले दांत कैसे है- डॉक्टर से सब चैक हो गया ना। हमने कहा अब तो चने या गन्ना भी खा सकते हैं। हमने प्रायश्चित मांगा उन्होंने समय दिया पर प्रायश्चित नहीं दिया। दूसरे दिन फिर वही दोपहर पहुँचे। प्रायश्चित मांगा। बात टालते हुये कहा तुम्हारा कैसा कर्मोदय हैं- महाराज तो जयपुर पहुँचे है तुम जयपुर के हो मैंने तुरंत कहा पूज्य श्री मेरा जयपुर तो आपके चरणों में है। मुस्कुरा दिये। फिर कहा चटाई का तो तुम्हारा त्याग ही है मैंने कहा 2002 नेमावर में आपने कराया तब से त्याग चल रहा है। मैंने कहा आपसे मैंने जो तत्त्वार्थ सूत्र के उपवास लिय थे 8 हो गये मात्र 2 बच्चे हैं उन्होंने कहा प्रायश्चित के दिये थे क्या ? मैंने कहा नहीं वो तो मेरे कहने पर आपने दिये थे। बस फिर मौन हो जाते हैं। गुरुजी ने चतुर्दर्शी का उपवास मांगने पर हँसकर उपवास किया चातुर्मास की भक्ति में सभी महाराज जी के साथ हम भी बैठे-गुरुजी ने कुछ नहीं कहा। साथ ही पाक्षिक मुनि प्रतिक्रमण भी किया।

दूसरे दिन प्रातः की घटना ने तो जीवन ही बदल दिया। प्रातः 7.15 पर मधुर को भेजकर मुझे बुलवाया। गुरु जी ने पूछा-कभी बेला किया है , मैंने कहा-जी पावापुरी में 48 घंटे का ध्यान लगाया तब किया था और कई बाद तेला भी किया है। उन्होंने कहा आज बेला करना है कार्योत्सर्ग करवाया-हम समझ गये-उन्होंने कहा अभी किसी को बताना नहीं-मंदिर जाकर खूब ठाठ से पूजन विधान करो। आग की तरह यह बात पूरे संघ में फैल गयी। पूज्य संभवसागर जी महाराज ने पूछा परिवार वालों को बुलाने का विकल्प तो नहीं है। मैंने तुरंत कहा-नहीं, क्योंकि अगर विकल्प करता तो भी वे आ नहीं सकते थे। पूज्य प्रसाद सागर जी महाराज ने वहां का नं. पूछा और किसी से खबर करवा दी। सभी ब्रह्मचारियों ने भी निवेदन किया पर दो को ही गुरू जी ने आशीर्वाद दिया। फिर क्या था-पंकज जी पारस चैनल, प्रभात जी मुम्बई आदि लोग यही थे। बोली उन्होंने लेकर हमसे स्वर्णपात्रों में पादप्रक्षालन एवं गुरु पूजा करवाई।

गुरु जी ने आहार के बाद कैशलोंच के लिए आशीर्वाद दिया, 12 बजे मेंहदी, उबटन आदि गोदभराई का कार्य, 1 बजे बिनौरी, 2.15 पर गुरु जी के साथ दीक्षा मंच पर पहुंच गये।

गुरु मंत्रों के मध्यम से संस्कार शुरु किये। मैं कृतकृत्य था, गुरुपूर्णिमा पर गुरुचरणों का। गुरु आशीर्वाद से माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त किया-कन्नोज निवासी-मुंबई निवासी, गुरुचरणानुरी सवाई सिंघई सवाईमल जी के सुपुत्र श्री प्रभात -इंदु को तथा प्रथम पिच्छी का अवसर पारस चैनल के डायरेक्टर श्री पंकल विशाला जैन दिल्ली को मिला। सूरत के राजा भाई को कमण्डल एवं 7 प्रतिमाधारी महेश बिलहरा को शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य मिला।

पूण्य योग्य एवं गुरु कृपा से सफल हो गयी भावना-नाम रखा संधानसागर

चलो देखें यात्रा

श्री पदमपुरा (बाडा)

नाम एवं पता: श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा जयपुर

फोन : 01429-277225 प्रबंधक : श्री रमेशचन्द्र बिलाला 09602406263 श्री सुधीर जैन अध्यक्ष : 09414050432

सम्पर्क सूत्र : श्री ज्ञानचन्द्र झांझरी 014-2322108 मो. 98290-13094

सुविधायें : सुविधायुक्त 80 सामान्य 150 कमरे तथा हॉल 2 हैं। एसी कमरे निर्मित हो रहे हैं। भोजनशाला नियमित सशुल्क है। एलोपैथिक चिकित्सालय है।

मार्गदशन :- सवाई माधोपुर जयपुर रेलवे लाईन पर शिवदासपुरा स्टेशन है अन्य स्टेशन सांगानेर एवं जयपुर है। शिवदासपुरा से क्षेत्र 6 किमी. यहाँ से क्षेत्र का वाहन मिलता है। टोक जयपुर रोड़ पर जयपुर से 25 कि.मी पर शिवदासपुरा कस्बे से टर्न होते हुए 4 किमी पर विशाल परिसर मे क्षेत्र है। बस स्टेण्ड क्षेत्र से बाहर है।

महत्व एवं दर्शन :- गाँव पदमपुरा बाड़ा मे मुला जाट के मकान खोदते समय पदम प्रभु भगवान की प्रतिमा प्राप्त हुई थी अब नये परिसर में मुलनायक के रूप में स्थापित कर दी गई है। गाँव में पुराने स्थान पर चरण छत्री एवं प्राचीन धर्मशाला आज भी मौजूद है।

नवनिर्मित मन्दिर गोलाकार अपने ढंग का सम्पूर्ण भारत मे विशिष्ट पहिचान लिए है। शिखर सहित मन्दिर लगभग 140 फीट उचाई में मन्दिर के म्पस में ही विशाल धर्मशाला के एक कोने मे भोजनशाला है मन्दिर का गेट विशाल है। कारे अन्दर तक पहुँचती है।

विशेष :- ऊँची कुर्सी पर होने से दर्शन हेतु व्हील चेयर की सुविधा है। दशहरे के समय वार्षिक मेला विशाल स्तर पर आयोजित होता है। भूत बाधा दूर करने के लिए क्षेत्र की बड़ी मान्यता है।

समपीवर्ती स्थल :- चाकसु आदीश्वर धाम, छोटा गिरनार में हदवास साखना होडाराय सिंह सुदर्शन शान्तिनाथ क्षेत्र आबाँ बघेरा आदीश्वर धाम नसियाँ चाकसु जिला जयपुर क्षेत्र कोटा जयपुर हाईवे 12 किमी. पर चाकसु शहर मे मुख्य रोड पर स्थित है। रोड़ से ही भगवान आदिनाथ की विशाल प्रतिमा के दर्शन हो जाते हैं। साइड में प्राचीन मन्दिर है जिसमें मूलनायक आदिनाथ के अतिरिक्त 1150 रत्नों की मूर्तियाँ विराजमान हैं। प्राचीन नसियाँ का जीर्णोद्धार मुनि श्री प्रज्ञासागर जी की प्रेरणा से हो रहा है। आवास 12 कमरे एवं भोजन सुविधा उपलब्ध है। चाकसु रेलवे स्टेशन है। बस यात्रा सुविधाजनक जयपुर 30 निवाई 30 बाड़ा पदमपुरा 15 छोटा गिरनार 12 किमी. है सम्पर्क मैनेजर 9928637919 , श्री राजेन्द्र छाबड़ा मंत्री 9414229182

मूकमाटी : परिशीलन साहित्यकारों की दृष्टि में

❊ अनिल जैन (राजधानी) ❊

पद दलित मूकमाटी तो कर्मबद्ध आत्मा का प्रतिनिधत्व करती है, वह सम्यक्दर्शन (वर्ण लाभ), सम्यक्ज्ञान (बोध) सम्यक चारित्र (शोध) और सम्यक तप (अग्नि परीक्षा) के माध्यम से सर्वोपरि, सर्वपूज्य शुद्ध दशा को प्राप्त करती है। इसमें प्रसंगानुसार जैन दर्शन के प्रायः सभी सिद्धांतों को समावेश मिलता है। जैसे द्रव्य परिभाष, कर्मसिद्धांत, लेश या मुक्तात्मा, रत्नत्रय उपादान निमित्त कारण की व्यवस्था गुण जीव से पृथक नहीं, पानी छानकर उपयोग करना, तप मुक्त जीव का संसार में पुनरागमन निषेध आदि। शास्त्रीय परिभाषा अनुसार यह महाकाव्य है या नहीं यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना की कविवर का चित्त-चमत्कार जो महाकाव्य की आत्मा है!

डॉ. सुदर्शन लाल जैन

लोक व्युत्पत्ति , यमक, अलंकार, तथा अनुप्रासों के सजीव प्रयोग हैं। लोक व्युत्पत्ति में प्रायः वर्णों के विलोम प्रयोग से अर्थ की सृष्टि की गई है।

डॉ. भगवान दास मिश्र

विराट, व्यापक एवं बहुमुखी उद्देश्य के साथ कवि ने मूकमाटी महाकावय का प्रणयन किया है। मूकमाटी की संवेदना को बांधना, समेटना, सागर को बांधना है, उसके जल का माप करना है। नई नई अर्थच्छवियां प्राप्त कराना, शब्दों की परतों को उघारते जाना कवि के लिए एक दम सरल है।

डॉ मृत्युंजय उपाध्याय

मूकमाटी काव्यग्रंथ में निरी कल्पना की उड़ान नहीं है। मौलिक विचारों की उद्भावना भी इस अदभुत काव्य में हमें प्राप्त होती है। मूकमाटी में कविता का अंतरंग स्वरूप प्रतिबिंबित है साहित्य के आधारभूत सिद्धांतों का दिग्दर्शन भी इसमें है। वीतराग और साधु होने के उपरान्त भी जिस तरह तुलसी, कबीर, सूर आदि ने जन और उसके जीवन के संघर्षों /घातों-प्रत्याघातों से अपने को सम्पृक्त रखा था प्रकारांतर से आचार्य श्री विद्यासागर भी साहित्य और उसके शिल्प को जन से पराङ्मुख नहीं कर

प्रो. डॉ. देवव्रत जोशी

आध्यात्मिकता क्या है ? इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर मूकमाटी में है। आचार्य श्री इस सफलता के लिए साधुवाद के पात्र है। आध्यात्मिकता क्या है- आचरण की शुचिता आचरण की शुचिता के बिना कोई भी संत महात्मा और भगवान नहीं हो सकता। राख बने बिना/खरा-दर्शन कहाँ ? रा..ख..ख..रा.. महाकाव्य का फलक बहुत व्यापक होता है, उसमें कवि का अपना जीवन बिंब होता है , अपनी दृष्टि होती है। सम्पूर्ण विराट जीवन ओर सृष्टि के सम्बन्ध में उसमें गहन चिंतन होता है। युग के समक्ष उपस्थित संकट से निगाहें न चुराकर महाकाव्य उससे टकराता है। मूकमाटी इस निकष पर खरी उतरती है। आचार्य श्री निरक्षण शक्ति बहुत तीव्र है और देखी हुई हर मुद्रा, हर भाव, हर भंगिमा का ज्यों का त्यों उकेर देने की अदभुत काव्य क्षमता आप में है। विद्यासागर नाम सही ढंग से मूकमाटी में सार्थक हुआ है। आचार्य श्री ने प्रायः सभी महत्वपूर्ण विषयों में अपनी गहरी पैंठ का परिचय दिया है! मूकमाटी का अभिव्यक्ति पक्ष सबल ही नहीं, प्राणवान है। भाषा पर आचार्य

श्री का असाधारण अधिकार है। वे अपनी बात प्रभावशाली ढंग का चित्रोपम ढंग का चित्रोपम शैली में देने की कला में निष्णात है। व्युत्पत्ति और विलोम के उदाहरणों में कवि के भाषा कौशल के धनी होने का जीवंत प्रमाण मिलता है। विज्ञान के विनाशकारी युग में मुनि विद्यासागर जैसे भागीरथ द्वारा लाई गई मूकमाटी जैसी ज्ञान-गंगा परमावश्यक है। **डॉ. सरजू प्रसाद मिश्र**

वंदनीय आचार्य श्री विद्यासागर के अंतस का विस्फोट मूकमाटी साहित्य और दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों का अभिनव आकलन है। आचार्य श्री का जीवन दर्शन उनकी साधना यात्रा का नवनीत है मूकमाटी वस्तुत प्रबंधकाव्य का एक अभिनव स्वरूप लिए अध्यात्म रस का शब्दशास्त्र है। इसमें अलंकारों का चित्ताकर्षण छटा है। तथा शब्द की अंतरंग अर्थ भंगिमा की झांकी है, जिससे काव्य की भाषा का अर्थ गौरव बढ़ा है। **डॉ. श्रीमति अलका प्रचण्डिया दीति**

मूकमाटी एक दार्शनिक महाकाव्य है जो मानवात्मा का अमर संगीत है। इस काव्य की भाषा अपूर्व छंद अनबध्य, शब्दों का चयन एवं वयन झंकारमय है। विषय वस्तु के भावों की अतिशयता मे काव्य महान हो गया है। जहाँ भावों का गम्भीर्य है, वही भाषा भी गुरु गंभीर है। स्पष्ट ऋजु वाक्य स्वछन्द है तो शब्दों में झंकार है। भाषा की मधुरता असाधारण है तो प्रसाद गुण अतुलनीय है। **प्रो डॉ. सत्यरंजन बंधोपाध्याय (बैनर्जी)**

कविता

भाग्योदय

❊ रचियता : मीना गोदरे अवनि (इन्दौर) ❊

आचार्य श्री विद्यासागर जी को समर्पित
भक्तिगीत
(तर्ज -ऐ मालिक तेरे बंदे हम)

विद्यासागर जी तुमको नमन
अवनि पर पड़े जो कदम
भाग्योदय हुआ आज मेरा हृदय
हमको दे दो तुम अपनी शरण

ओ ज्ञान भानु की पहली किरण
वीतरागी ओ ज्ञान के पिंड
तुमको अर्चन करूं तुमको अर्पण करूं
दे दो आशीष, मुक्ति मिलन
नत मस्तक हों चरणों में हम
तेरे ज्ञान के पिपासु हैं हम
भाग्योदित हुआ.....

लाख चौरासी जनम लिया
निज स्वरूप न जान सका
भटका संसार में भूला परिवार में
मायाजाल में अटका रहा
कर दो ऐसो कोई तुम जतन
फिर होय ये न जानम मरण
भाग्योदित हुआ.....

ओ आतमज्ञान जगा दो
तेरे सत्संग में
कर्मबंधन न होंगे कदा
भक्तों की लगा दो लड़ी
भाग्योदित हुआ.....

कविता

गिरनार की चीख

❋ ब्र. जिनेश मलैया (इन्दौर)❋

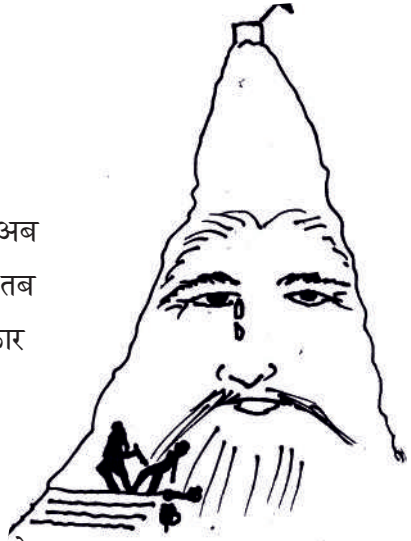

चीखे रोये अब गिरनार
तीर्थ भूमि पर हिंसाचार
सत् संतो पर चले छुरे अब
मानवता फिर रहे कहाँ तब
मेरी सुनलो कोई पुकार
सत्य अहिंसा यहाँ रही है
तपो भूमि यह सदा रही हैं
मुक्ति मार्ग का मैं आधार
धर्म पंथ पर क्यों लड़ते हो
स्वार्थ अहं में क्यों लड़ते हो
संतो पर क्यों अत्याचार
नेमिनाथ की तपोभूमि है
जैनों की यह तीर्थ भूमि है
नहीं किसी का एक अधिकार
खून संत का क्यों था बहना
न्याय मौन अब बना क्यों सपना
न्याय करो जागो सरकार
यह निर्वाण भूमि है पावन
यहाँ अहिंसा का था सपना
रह सदा करूणा विस्तार

आगम दर्शन

द्रव्यानुयोग प्रधान ग्रंथ पंचास्तिकाय

पंचास्तिकाय आचार्य कुंदकुंद का बेजोड़ सृजन है। पंचास्तिकाय का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए जैन दर्शन ने कहा है कि अस्ति शब्द का अर्थ सत्ता होता है काय का अर्थ बहु प्रदेशी द्रव्य का सूचक है। अस्ति और काय दो शब्दों के मिलने से अस्तिकाय शब्द का निर्माण होता है। सृष्टि की रचना छह द्रव्यों के समूह से होती है। काल द्रव्य एक ऐसा द्रव्य है जिसमें मात्र एक ही प्रदेश होता है अतः काल को काय की श्रेणी बाहर रखा गया है अतः काय की 5 निर्धारित हुई है जीव पुदगल धर्म अधर्म आकाश इन पाँच द्रव्यों मे काय पना सिद्ध होने से इन पाँचों द्रव्यों के समूह को पंचास्तिकाय कहा जाता है आचार्य जयसेन जी ने अपनी तात्पर्य वृत्ति टीका की प्रस्तावना में कहा है कि श्री कुमार नंदी सिद्धान्त देव के शिष्यों द्वारा प्रसिद्ध कथा न्याय से कथानुसार पूर्व विदेह जाकर वीतराग सर्वज्ञ देव श्री मंदर स्वामी तीर्थंकर परमदेव के दर्शन करके उनके मुख कमल से विनिर्गत दिव्यवाणी/ ध्वनि का श्रवण करके तथा उसे अवधारित कर पदार्थ शुद्धात्मादि अर्थ सहित ग्रहण करके पुनः लौटकर आये आचार्य कुन्दकुन्द देव अपर नाम पद्मनंदी अन्तस्तत्त्व और बहिरस्तत्त्व का गौण मुख्य करके प्रतिपादन करने के लिए अथवा शिवकुमार महाराज संक्षेप रूचि वाले शिष्य के प्रतिबोधन के लिए विरचित पंचास्तिकाय प्राभृत शास्त्र पर यथा क्रम अधिकार शुद्धिपूर्वक तात्पर्य अर्थ की व्याख्या कहते हैं आचार्य जयसेन जी के इस उद्धारण यह सूचना मिलती है कि श्री कुमार नंदी के शिष्यों द्वारा किसी कथा में आचार्य कुंद कुंद का पूर्व/विदेह जाने का उल्लेख किया गया तथा उन्होंने तीर्थंकर श्री मंदर भगवान का उपदेश सुन महाराजा शिवकुमार के संबोधन के लिए पंचास्तिकाय ग्रंथ की रचना की।

प्रस्तुत ग्रंथ में 173 गाथाएँ है प्रथम अधिकार पंचास्तिकाय द्रव्याधिकार के नाम से प्रसिद्ध है इस अधिकार में 93 गाथाएँ है। गाथा 97 वें से 105 तथा चूलिका का समावेश किया गाथा 105 से 153 तक नव पदार्थ व्याख्यान करने वाला दूसरा अधिकार है। 154 से 173 गाथा एक मोक्षमार्ग प्रतिपादक अधिकार है। द्रव्य पंचास्तिकाय, नवपदार्थ (अर्थात जीव अजीव आस्रव संवर निर्जरा मोक्ष पुन्य पाप) मोक्षमार्ग अर्थात् सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र की एकता को सूचित किया गया है

पंचास्तिकाय ग्रंथ में प्रथम मंगलाचरण में सौ इन्द्रों से वंदनीक तीन लोक के जीवों के लिए हितकर मधुर विशद वचन है जिनके जो अनंतगुण धारी भव विजेता जिनदेव को नमस्कार है। द्वितीय मंगलाचरण 104 गाथा में अपुनर्भव के कारण महावीर भगवान को नमस्कार करके नवपदार्थ के भेद और मोक्ष मार्ग कथन करने की प्रतिज्ञा की है इस तरह से प्रस्तुत ग्रंथ दो मंगलाचरण है किये गये हैं।

प्रथम अधिकार श्रमण मुखाग्र से उत्पन्न पदार्थ समूह सहित वचन आगम समय को नमस्कार करके चर्तुगति निवारण रूप मोक्ष को कथन करने प्रतिज्ञा की गई है तदुपरांत लोक अलोक विभाग स्वरूप बताया है। पंचास्तिकाय का नाम निर्देश/पंचास्तिकाय का सामान्य स्वरूप अनन्य नियत अणु और महन्त अर्थात मूर्त अमूर्त कहा पंचास्तिकाय के अस्तित्व परिवर्तन युक्त द्रव्य स्वभाव को अस्तिकाय प्राप्त होते हैं। सत्ता सभी पदार्थ में पाई जाती है वह अनंतपर्याय युक्त विश्व रूप उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्त होती है द्रव्य ही सत्ता है द्रव्य लक्षण, द्रव्य और पर्याय तथा द्रव्य गुण में अभेद बताते हुए सप्तभंगी स्याद्वाद की सिद्धी की है। सदभाव का नाश और अभाव की उत्पत्ति नहीं होती है। गुण और पर्याय में उत्पत्ति नाश होता है।

जीव के भाव गुण और पर्याय रूप मानते हुए पर्याय का नाश और उत्पाद की दृष्टि से जीव का उत्पाद व्यय सिद्ध किया है संसार पर्याय के सर्वथा नाश के बाद सिद्ध रूप का उत्पाद होता है छह द्रव्यों के मध्य पंचास्तिकाय का निर्धारण किया है। काल द्रव्य का वर्णन तथा व्यवहार काल और निश्चय काला का विवेचन किया गया है। संसारी और सिद्ध आत्म का स्वरूप बताकर जीव के गुण, स्वभाव भेद, देह प्रमाण, दो हांतर संचरण का कारण सिद्ध के अशरीर पना सिद्ध के कारण कार्य का अभाव सिद्ध किया है आनात्म रूप अभावात्मक मोक्ष मान्यता खंडन किया है। कर्म कर्मफल ज्ञान चेतना का विवेचन भी किया गया है। जीव का उपयोग लक्षण है अतः ज्ञानोपयोग दर्शनोपयोग नाम कथन भेद किया है। व्यपदेश, संस्थान, संख्या विषय की अपेक्षा भेद होता है। ज्ञान और ज्ञानी में सर्वथा भेद आमान्य किया है। ज्ञान और ज्ञानी के समवाग संबध रूप मान्यता का खंडन किया है। द्रव्य और गुण दो अलग अलग पदार्थ नहीं है। कर्तापन का वर्णन जीव के भाव में कर्म के निमित्त भावों के कर्ता माना है। समवाप नाम पृथक पदार्थ की मान्यता का खंडन किया है।

जीव के कर्तापन, का पूर्व पक्ष और उसका निराकरण किया गया है तथा जीवास्तिकाय के भेदों का कथनोपरान्त पुद्गल अस्तिकाय के स्कंध परमाणु की व्याख्या के उपरान्त पृथ्वी आदि जाति भेद का निषेध किया तथा ध्वनि/शब्द को पुदगल की पर्याय सिद्ध किया हैं एक परमाणु में रसादि की संख्या बताने के बाद पुद्गलस्तिकाय का उपसंहार किया हे धर्मस्तिकाय अधर्मस्तिकाय आकाश से धर्म अधर्म अस्तिकाय का कार्य नहीं होता है धर्मादि के पृथक पने की सिद्धि के साथ पंचास्तिकाय/षड् द्रव्य थोड़ा कथन किया है।

व्यहार मोक्षमार्ग से प्रारंभ करके जीवादि नवपदार्थों का नाम उल्लेख के साथ जीव का स्वरूप भेद, जीव परिभ्रमण के कारण पुण्य पाप का स्वरूप, पुण्यास्रव, पापास्रव, संवर निर्जरा पदार्थ का कथन तथा निर्जरा का कारण ध्यान बताते हुए बंध पदार्थ और मोक्ष मार्ग की व्याख्या की है गाथा 137 में अनुकम्पा का लक्षण भूखों को भोजन प्यासे को पानी देना माना है। प्रशस्त राग अरिहंत सिद्ध साधु में भक्ति धर्म में चेष्टा गुरु का अनुगमन को कहा है।

प्रस्तुत ग्रंथ के तीसरे अधिकार में मोक्ष स्वरूप स्वसमय परसमय की व्याख्या करने पर चरित और स्वचरित का स्वरूप बताया हैं। निश्चय मोक्ष मार्ग का साधन व्यवहार मोक्ष मार्ग कहा है। आत्मा के दर्शन ज्ञान चारित्र माना है सभी संसारी जीव के मोक्षमार्ग की योग्यता का निषेध किया हैं। सूक्ष्म परसमय अज्ञान रूप बताया है। अरिहंत सिद्ध चैत्य प्रवचन मुनि समूह में भक्ति को पुण्य बंध का कारण माना है कर्मक्षय का नहीं स्वसमय प्राप्ति में राग को बाधक माना है। पर द्रव्य से ममत्व रहित परिणाम को स्वसमय माना है। अरिहंतादि की भक्ति परसमय रूप है परम्परा मोक्ष का कारण है। पंचास्ति काय ग्रंथ का तात्पर्य मोक्षमार्ग का सार दिखाना हैं। ग्रंथ के अन्त में पंचास्तिकाय ग्रंथ लिखने का उद्देश्य बताते हुए आचार्य कुंद कुंद देव ने लिखा है मेरे द्वारा पंचास्तिकाय संग्रह में सूत्रों को कहा है। प्रवचन सार है प्रवचन भक्ति से प्रेरित होकर मार्ग प्रभावना के लिए कहा गया। इस अधिकार से कुल 22 गाथाएँ है।

प्रस्तुत ग्रंथ की 5 टीकायें उपलब्ध है आचार्य अमृतचंद की तत्वदीपिका, आचार्य जयसेन की तात्पर्य वृति, आचार्य प्रभाचंद की भट्टारक ज्ञानचंद की टीका और पाँचवी टीका बालचंद मुनि की कर्नाटक वृत्ति है। भाषानुवाद पं. राजमल्ल का, पं. हेमराज जी का ,जहाना बाद के कवि हीरचंद का तथा विधिचंद जी ने किया है इस तरह 8 भाषानुवाद हुए है। पंचास्तिकाय पदार्थ विज्ञान अध्यात्म दर्शन सिद्धांत का अनूठा ग्रंथ है।

कविता

सदलगा नगर से आये गुरु

❊ रचियता : कांतिकुमार जैन (करूण खिमलासा) ❊

सदलगा नगर से आये, आचार्य श्री विद्यासागर।
अजमेर नगर में दीक्षा ली, गुरु मिले ज्ञानसागर॥
पायी है शिक्षा गुरुवर से,हो गया धन्य अजमेर नगर।
वैयावृत्त करी गुरुवर की, त्यागा जग का आड़म्बर॥

समता को धारज किया और, पाने को अपना ही निजधर।
सदलगा नगर से आये गुरु, आचार्य श्री विद्यासागर॥
आये थे गुरु बुन्देलखण्ड,चर्या की कितनी औ सुन्दर।
मिल गये बहुत श्रावकगण थी,कितने थे वन गये हैं मुनिवर॥

संघ बढ़ा निरन्तर माताएं, ऐलक, क्षुल्लक औ, हैं मुनिवर।
सदलगा नगर से आये गुरु, आचार्य श्री विद्यासागर॥
हो गयी धन्य नगरी नगरी,प्रवचन देते करते विहार।
जहां जहां गये वे तीर्थ क्षेत्र,निर्माण कार्य करते विचार॥

जीवन को सफल बनाया है, यह मेष दिगम्बर को धर कर।
सदलगा नगर से आये गुरु, आचार्य श्री विद्यासागर॥
अध्यात्म के ऐलक कविवर,साहित्य लिखा कितना भारी।
सब गुरुवर मिलकर एक रहे,एक बात हृदय में है धारी॥

एक दिगम्बर गुरुवर है, सब एक रहें गुरुवर मिलकर।
सदलगा नगर से आये गुरु, आचार्य श्री विद्यासागर॥

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
जून 2018
गज चढ़ दीक्षा को चले

प्रथम-

सन् उनीस सौ अडसठ
शहर अजमेर के बीच
दर्शन ज्ञान चरण लहा
धोय मोह की कीच
विद्याधर वैराग्य ले
राग द्वेष मन से टले
तन भव भोग उदास हो
गजचढ़ दीक्षा को चले

श्रीमति रजनी जैन राहतगढ़

द्वितीय-

भार लगी सज्जा सभा
आभूषण वन गेह
ज्ञान ध्यान तप मन बसी
छोड़ जगत का नेह
परिजन छोड़े अब सभी
बीज वैरागी मन पले
ज्ञान गुरु आशीष ले
गज चढ़ दीक्षा को चले

श्रीमति इन्द्रा जैन इन्दौर

तृतीय-

मल्लप्पा का लाड़ला
श्रीमति का लाल
मोह शत्रु का लड़न की
ठोकी जिसने ताल
भव तन भोग अभिर लगे
गुरुवर ही लगते भले
शिक्षा से सम्पन्न हो
गज चढ़ दीक्षा को चले

श्रीमति सुनीता जैन इन्दौर

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
मई 2018 के विजेता

प्रथम : श्रीमान अरूण कुमार (नरसिहंपुर)
द्वितीय : श्रीमति शशि प्रभा लुहाडिया (इन्दौर)
तृतीय : श्री कपूर चंद्र जैन बंसल (टीकमगढ़)

वर्ग पहेली क्र. 225
मई 2018 के विजेता

प्रथम : श्रीमति शकुन्तला जैन (शिक्षक नगर देवास)
द्वितीय : श्रीमति कमला जैन (नूतन नगर खरगोन)
तृतीय : व्रती बी.एल.जैन. श्रुतधाम बीना (दिल्ली)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : जून 2018 का हल

01. सागर
02. 1981
03. 1985
04. 1987
05. 1983
06. 11
07. 12
08. गढ़ाकोटा
09. 25
10. 7
11. द्रोणगिरी
12. छह
13. तीन
14. दो
15. 28 फरवरी 5 मार्च 1979
16. 20 से 26 जनवरी 1981
17. 21 से 27 फरवरी 1982
18. 22 से 27 जनवरी 1985
19. 7 से 11 मार्च 1986
20. 8 से 12 फरवरी 1987
21. 8 से 13 दिसम्बर 1989
22. 17 से 22 फरवरी 1990
23. 4 से 8 मार्च 1990
24. 5 से 7 अक्टूबर 1990
25. 25 से 30 जनवरी 1991
26. 10 से 16 फरवरी 1993
27. 17 से 19 सितम्बर 1993
28. श्रीमति रंजना दिलीप जैन
29. 14 से 21 फरवरी 2000
30. 6 से 13 मार्च 2000
31. 16 सें 21 जनवरी 2002
32. 22 से 27 फरवरी 2002
33. 20 से 25 जनवरी 2004
34. 20 से 27 जनवरी 2008
35. 23 से 28 नवम्बर 2002
36. 15 से 21 अप्रैल 2008
37. 16 से 21 जनवरी 2010
38. 22 से 27 नवम्बर 2010
39. 24 से 29 दिसम्बर 2012
40. श्री कुशल कुमार जैन को
41. 6 से 12 मार्च 2015
42. 30 से 6 दिसम्बर 2015
43. 8 से 14 दिसम्बर 2015
44. 15 से 20 जनवरी 2016
45. 17 से 23 मार्च 2016
46. 29 नवम्बर से 5 दिसम्बर 17
47. 13 से 18 जनवरी 2017
48. 9 से 15 नवम्बर 2017
49. 11 से 18 फरवरी 2018
50. 23 से 29 मार्च 2017

पुराण प्रेरणा

धर्म महिमा

धर्मात्सुखमधर्माच्च दुःखमिव्यनिगानतः।
धर्मैकपरतां धत्ते बुधोऽनर्थजिहासया॥

धर्म से सुख प्राप्त होता है और अधर्म से दुःख मिलता है यह बात निर्विवाद प्रसिद्ध है इसीलिए तो बुद्धिमान पुरुष अनर्थों को छोडने की इच्छा से धर्म में ही तत्परता धारण करते हैं।

धर्म प्राणिदया सत्यं शान्तिः शौचं वितृष्णता।
ज्ञानवैराग्य संपत्तिधर्मस्तद्विपर्ययः ॥

प्राणियों पर दया करना, सच बोलना क्षमा धारण करना, लोभ का त्याग करना, तृष्णा का अभाव करना, सम्यग्ज्ञान और वैराग्यरूपी सम्पत्ति का इकट्ठा करना ही धर्म है और उससे उल्टे अदया आदि भाव अधर्म हैं।

तनोति विषयासंगः सुखसंतर्षमङ्गिनः।
स तीव्रमनुसंधत्ते दीप्त इवानलः ॥

विषयाशक्त जीवों के इन्द्रिय जन्य सुख की तृष्णा बढ़ती है इन्द्रिय जन्य सुख की तृष्ण प्रज्जवलित अग्नि के समान भारी संताप पैदा करती है।

धर्म प्रपाति दुःखेभ्यो धर्म शर्म तनोत्ययम्।
धर्मो नैः श्रेयसं सौख्यं दत्ते कर्मक्षयोद् भवम्॥

यही जैन धर्म ही दुःखों को रक्षा करता है यही धर्म सुख विस्तृत करता है और यही धर्म कर्मों कें क्षय से उत्पन्न होने वाले मोक्ष सुख को देता है। **(आदि पुराण से)**

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. ई र् इ ई न म् उ श् आ अ स् ग् र् अ ज् आ प् र म् ण् अ
2. ई र् इ ई न म् उ श् आ अ स् ग् र् अ ज् ता अ स् अ म् आ
3. ई र् इ ई न म् उ श् आ अ स् ग् र् अ ज् थ क् उ न् उ
4. ई र् इ ई न म् उ श् आ अ स् ग् र् अ ज् इ ज् अ त् अ
5. ई र् इ ई न म् उ श् आ अ स् ग् र् अ ज् आ प् र श् त् अ न्

परिणाम :

जून 2018: (1) मुनि श्री नियम सागर जी (2) मुनि श्री वृषभ सागर जी (3) मुनि श्री अभिनंदन सागर जी (4) मुनि श्री प्रबोध सागर जी (5) मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी

कला संरक्षण

केरियर

कला संरक्षण- वर्तमान युग बहुमुखी प्रतिमा का युग है चारों और अपनी रूचि अनुसार कार्य के अवसर उपलब्ध है। यदि आपकी दृष्टि पारखी है और आप कला प्रेमी हैं तो कला संरक्षण में अपना कैरियर बना सकते हैं कला सदैव ही एक गौरवपूर्ण संपत्ति होती है । कोई भी कलाकृति धन का बेहतरीन निवेश होने के साथ ही राष्ट्र की अमूल्य संपत्ति होती है। यद्यपि यह सत्य है कि वस्तु के निर्माण के साथ ही क्षय प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है, लेकिन कुछ विशेष प्रयासों से क्षय की प्रक्रिया को धीमा किया जा सकता है। बहुमूल्य कलाकृतियों और सौंदर्यबोधक वस्तुओं को क्षय होने से रोकने वाली प्रक्रिया संरक्षण कहलाती है। कोई भी व्यक्ति जिसे कला के प्रति लगाव हो और वह धैर्यवान तथा दृढ़ निश्चयी हो तो वह कला संरक्षण विशेषज्ञ बन सकता है तथा इससे संबधित पाठयक्रम में प्रवेश ले सकता है।

संरक्षण व्यवहार एवं सिद्धांत में चित्रफलक या कागज पर कला कार्य के साथ ही तकनीकी परीक्षा में संकलन, स्वच्छता, वार्निश हटाना, संघटित करना, मरम्मत-तकनीक, अनुशोधन, भराव, फ्रेमिंग, आरोपण संग्रह और पर्यावरण नियंत्रण शामिल है।

जिज्ञासु व्यक्ति प्रशिक्षण प्राप्त कर संग्रहालय, कला दीर्घा और संग्रहालय सेवा के किसी भी क्षेत्र में कार्य करने के लिए समर्थ बन सकते हैं, तथा स्वतंत्र भी कार्य कर सकते हैं कार्य प्रारंभ करने के पूर्व कला संरक्षक के निर्देशन में सूक्ष्म भेदों को जान लेना नितांत आवश्यक है। हमारे देश का इतिहास समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास है तथा जागरूकता के अभाव में कारण बहुमूल्य कलाकृतियों उपेक्षित हैं। लेकिन अनेक युवाओं द्वारा इस पेशो को अपनाने से वर्तमान परिदृश्य बदल रहा है। कोई भी युवा संग्रहालय में संग्राहक बन सकता है जैसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ASI भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक धरोहर न्यास INTACH अथवा निजी संरक्षक।

कला संरक्षण केन्द्र - भारत में मुख्य दो कला सरंक्षण केन्द्र हैं- राष्ट्रीय संग्रहालय केन्द्र और आइ.एन.टी.ए.सी.एच. कला संरक्षण केन्द्र । राष्ट्रीय संग्रहालय केन्द्र लखनऊ, दिल्ली कोलकाता में स्थित हैं, राष्ट्रीय संग्रहालय केन्द्र अपनी कलाकृतियों एवं अन्य राज्यों के संग्रहालयों की देख-रेख करता है । इनकी सेवा सरकारी संग्रह तक सीमित होती है। अन्य राष्ट्रीय विरासत के कार्यों हेतु निजी कार्य सेवकों की सेवाएं ली जाती हैं।

दूसरी ओर आइ. एन. टी.ए.सी.एच. के कला सरंक्षण केन्द्र निजी संग्राहकों को और संस्थानों को न्यूनतम फीस पर कला

संरक्षण सेवा उपलब्ध कराता है।

एक कला संरक्षण बनने का केवल एक उपाय सिद्धांत एवं व्यवहार दोनों स्तरों पर कठोर प्रशिक्षण है । सिद्धांत प्रशिक्षण के लिए विभिन्न विश्वविद्यालायों में स्नातक स्तर पर ललित कला कार्यक्रम उपलब्ध है। उदाहरण के लिए- दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट, पश्चिम बंगाल में शांति निकेतन, भुवनेश्वर कॉलेज ऑफ आर्ट, नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ डिजाइन अहमदाबाद, लखनऊ कॉलेन ऑफ आर्ट, मद्रास, बडौदा जैसे कुछ संस्थान हैं जो कला संरक्षण का पाठयक्रम संचालित करते हैं स्नातकोत्तर पाठयक्रम हेतु नेशनल म्यूजियम इंस्टीटयूट ऑफ हिस्ट्री एण्ड आर्ट कंजर्वेशन ऐंड म्यूजियोलॉजी दिल्ली में प्रतिष्ठित विश्व विद्यालय है।

इस क्षेत्र हेतु केवल शैक्षिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है। जब तक कि प्रशिक्षु को संस्कृति और विरासत के प्रति स्वाभाविक रूप से गौरव का एहसास न हो। संरक्षक को किसी के कार्य के पूर्व गहन अनुसंधान की आवश्यकता होती है जो किसी भी कला के उचित संरक्षण के प्रयासों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। संरक्षण के किसी भी अंतिम निर्णय से पूर्व काल के व्यापक अध्ययन की आवश्यकता होती है। विशेष सावधानी भी अपेक्षित है। जिससे कि मूल कार्य नष्ट न हो पूरी तरह अक्षुण्ण रहे।

शैक्षिक पाठयक्रम- शैक्षिक सत्र में अन्य विषयों के साथ ही कार्वनिक व अकार्वनिक रसायन के पाठ भी शामिल किये जाते हैं। छात्रों को पेटिंग के मूलभूत पक्षों और कला तकनीक के विकास एवं रंजको के प्रयोग का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। यह पर्यावरण में कैसी प्रतिक्रिया करते हैं इस हेतु प्रशिक्षित नेत्रों की आवश्यकता है।

कला के क्षेत्र में कैरियर बहुत लाभप्रद है। यह धन और भौतिक लाभों के अलावा प्रतिष्ठा व सम्मान भी प्रदान करता है। प्रशिक्षु में कलात्मक झुकाव वाला मस्तिष्क, अच्छी वस्तुओं को परखने की दृष्टि चाहिए।

पारिश्रमिक- शिला कलाकृतियों का मूल्य अत्यन्त अधिक होता है । इसके संरक्षण के लिए कठोर प्रयासों तथा रख-रखाव के लिए अधिक लागत खर्च करनी पड़ती है । इस हेतु संरक्षकों को आर्कषक भुगतान किया जाता है । विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने देश की सांस्कृतिक धरोहर को संभालने के प्रति जागरूकता आने के कारण इस क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा संभावनाएँ बढ़ रही हैं । एवं इसे युवा पूर्णकालिक आजीविका केरूप में अपना रहेहैं।

संस्थान - 1. नेशनल म्यूजियम सेंटर जनपथ, नई दिल्ली 11001

2. इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एडं कंजर्वेशन ऑफ हेरिटेज INTACH हूमायूँ टॉम के निकट, निजामुद्दीन पूर्व, नई दिल्ली 110013

3. अन्नामलाई विश्वविद्यालय तमिलनाडु

4. गांधीग्राम सरल इंस्टीट्यूट गांधी ग्राम तमिलनाडू उपलब्ध पाठ्यक्रम डिप्लोमा इन आर्कीव्स एडं डॉक्यूमेंटेशन

कविता

मजदूर

✻ नरेश कुमार दुबे (खाईखेड़ा नटेरन)✻

बूंद पसीने की माथे पर, एक नया उत्साह जगाऐ ।
फोकट की चिकनी चुपड़ी से, श्रम की रूखी सूखी भाऐ ॥
रैन दिवस जी तोड़ परिश्रम, फिर भी सदा जेब है खाली ।
न कोई छुट्टी नहीं हांफ डे, होली हो चाहे दीवाली ॥
प्रातः काल को निकले घर से, देर रात पग धारें ।
बीबी बाट जोहती रहती, बच्चे राह निहारें ॥
ताजमहल का निर्माता तू, तूने किले बनाऐ ।
तूने ही तो प्राची युग से, गली गांव और नगर बसाऐ ॥
रेलों की पटरियां बिछाएँ, काम करे करखानों में ।
कभी खान पत्थर की फोडे, कभी खेत खलिहानों में ॥
नरसी मौंसम में बेपरबा, सर्दी बारिश या हो घाम ।
नित्य निरंतर कर्म करे तू, है तुझको आराम हराम ॥

■1 मई

- वाट्स एप के सी ई ओ जेन कूम ने अपने पद इस्तीफा दिया।

- दूर संचार आयोग ने विमान में मोबाईल इन्टरनेट के प्रयोग की स्वीकृति दी।

- ज्यादा शराब पीने से सतपुड़ा भवन में असिस्टेंट डायरेक्टर सुरेन्द्र छारी की मौत हुई। शराब दुकान के सामने कार में लाश मिली।

■ 2 मई

- मुम्बई : सात साल पुराने जेडी पत्रकार हत्याकांड में छोटा राजन सहित 9 लोगों को उम्रकैद की सजा मकोका कोर्ट ने दी।

- व्यटिहार- जिले एस पी सिद्धार्थ मोहन जैन ने विदाई पार्टी में सर्विस रिवाल्वर से 10 राउण्ड गोली चलाई।

- जम्मू कश्मीर- शोपियाँ में 80 बच्चों से भरी बस पर पत्थर बाजों का हमला हुआ 1 बच्चे का शिर फटा।

■ 3 मई

- यूपी म.प्र. उत्तराखंड पंजाब राजस्थान झारखंड सहित 6 राज्यों में आंधी तूफान का कहर मचा 100 लोगों की मौत हुई अकेले आगरा में 80 लोग मरे

- राष्ट्रीय फिल्म पुरुस्कार समारोह में राष्ट्रपति के हाथों मात्र 11 पुरुस्कार दिलाने से खफा 55 विजेताओं ने समारोह का बहिस्कार किया

- वाशिंगटन : जार्जिया में सेना का मालवाहक विमान दुर्घटना ग्रस्त हुआ 9 की मौत हुई।

■ 4 मई

- सिंगापुरः भारतीय मूल की छात्रा विजयकुमार रागवी को जेनेटिक हार्ट डिसीज ने रिसर्च के लिए एक स्टार टेलेंट सर्च अवार्ड दिया गया।

- ट्विटर ने बग अटैक के बाद तैतीस करोड़ यूजर्स से कहा पासवर्ड बदल लें।

- अमेरिका के हवाई द्वीप में 24 घंटे में 250 भूकंप के झटके महसूस किये गये ये पाँच रेक्टर की तीव्रता से थे।

■ 5 मई

- श्रीनगर : सुरक्षा बलों ने मुठभेड़ मे 3 आंतकी मार गिराये सुरक्षा बल के पीछे से लोगों ने पत्थर फेंके।

- मुबंई : जस्टिस शाहरूख जे कथा वाला ने 16 घंटे में 135 केश सुने और 156 साल का रिकार्ड तोड़ा।

- म्यांमार के सेना प्रमुख ने कहा रोहिग्यां अपने निर्धारित स्थान पर सुरक्षित रहेंगे।

■ 6 मई

- 36 घंटे पहले आतंकी बना डॉ. रफीभट्ट सहित 5 आतंकियों को सेना ने मार गिराया।

- इस्लामाबाद : पाकिस्तान के बलुचिस्तान प्रांत में दो कोयला खदानों में हुए विस्फोट में 23 लोग मारे गये।

- काबुल : तालीवान में 7 भारतीय इंजीनियरों का अपहरण किया।

■ 7 फरवरी

- शिवपुरी : अनाथ आश्रम संचालिका शैला अग्रवाल एवं उनके पिता के. एम. अग्रवाल को विशेष अदालत में 6 नाबालिग अनाथ बच्चियों से दुष्कर्म के मामले में उम्र कैद की सजा सुनाई।

- सुप्रीम कोर्ट ने यूपी के 6 पूर्व मुख्य मंत्रियों को आवास खाली करने को कहा। आजीवन आवास देने के कानून को रद्द किया।

- अमेरिका के हवाई में स्थित किलुआ ज्वालामुखी फटा।

■ 8 मई

- कश्मीर के पहाड़ों और उत्तराखण्ड के अधिकांश हिस्सों में हिमपात होने से चार धाम यात्रा बाधित हुई।

- सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा के खिलाफ महाभियोग नोटिश खारिज करने को चुनौती देनेवाले कांग्रेस सांसदों ने मंगलवार को अपनी याचिका वापिस ली।

- पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ पर भारत में करोड़ो रूपये का काला धन जमा करने का आरोप लगा।

■ 9 मई

- जम्मू कश्मीर पुलिस व सेना की टीम ने आतंकी संगठन लश्कर ऐ तैयबा के चार आतंकियों छह मददगारों सहित कुल 10 लोगों को गिरफ्तार किया।

-दिल्ली के लुटियंस जोन ने अकबर रोड के साइनबोर्ड पर किसी ने महाराण प्रताप मार्ग का पोस्टर चिपका दिया।

-रांची बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और चारा घोटाला में सजायाफ्ता लालू प्रसाद यादव को कोर्ट ने 5 दिन की पैरौल दी।

■ 10 मई

- सेना की मालगाड़ी बेंगलुरु से फैजाबाद जा रही स्पेशल ट्रेन में बैतूल से इटारसी के बीच हादसा हुआ ओ.एच.ई. केबल से टकराया सामान शॉर्ट सर्कि ट से लगी आग 4 ट्रक खाक

- नई दिल्ली : भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद एक दिवसीय दौरे पर सियाचिन पहुँचे।

- एजेंसी कुआलालंपुर : राजनीति में रिटारयरमेंट की कोई उम्र नहीं होती है मलेशिया के 93 साल के नेता डॉ. महातिर मोहम्मद ने प्रधानमंत्री पद का चुनाव जीता

■ 11 मई

- महराष्ट्र के पूर्व एटीएस प्रमुख हिंमाशु राय ने मुबंई सर्विस रिवाल्वर से चेहरे पर गोली मारकर खुदकुशी कर ली।

- सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने एक बार फिर उत्तराखंड हाइकोर्ठ के सीजे के एम जोसेफ को सुप्रीम कोर्ट जज बनाने की सिफारिस भेजने का फैसला कर लिया।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 2 दिन के दौरे पर नेपाल पहुँचे शुरुआत जनकपुर से हुई।

■ 12 मई

- प्रधानमंत्री पद से बर्खाश्त हो चुके नवाज शरीफ ने पहली बार माना कि उनका देश आंतकियों को पनाह देता है।

- तीन माह चार दिन की बच्ची के साथ दुष्कर्म के बाद हत्या के दोषी को इंदौर की जिला अदालत ने अजय गड़के को मौत की सजा सुनाई।

- औरंगाबाद : पानी के अवैध कनेक्शन

काटने में दो समुदायों के बीच भेदभाव की अफवाहों को चलते दंगा भड़क गया।

■ 13 मई

- प्रसिद्ध साहित्यकार और कवि बालकवि बैरागी का निधन हो गया वे 87 वर्ष के थे।

- बिटेन के अमीरों की सूची में भारतीय मूल के श्रीचंद और गोपीचंद हिन्दुजा पहले से दूसरे स्थान पर आ गये।

- पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में एक लकड़ी का पुल ढ़ल गया। नीलम वैली इस हादसे में तीन छात्रों की मौत हुई 15 लापता।

■ 14 मई

- केन्द्रीय वित्तमंत्री अरूण जेटली का सोमवार को एम्स में गुर्दा प्रत्यारोपण सफल रहा।

- रेलमंत्री पीयूष गोयल को वित्त मंत्रालय का अतिरिक्त प्रभार सोंपा गया

- पश्चिम बंगाल में पंचायत चुनाव के दौरान बड़े पैमाने पर हुई हिंसा में 12 लोग मारे गये 50 से ज्यादा लोग घायल है।

■ 15 मई

- कर्नाटक में भाजपा 104 सीटे जीतकर 112 से आठ सीट पीछे रह गई।

- वाराणसी ब्यूरो : शहर के सबसे व्यस्तमत इलाके में निर्माणाधीन पुल का बडा हिस्सा गिर गया। हादसे में 16 लोगों की मौत 50 से अधिक लोग दबे।

- उत्तर प्रदेश के स्कूलों में अब बच्चे जयहिन्द बोलकर अपनी हाजरी दर्ज कराएंगे।

■ 16 मई

- स्वच्छ सर्वेक्षण 2018 का रिजल्ट फिर से इंदौर पहले स्थान पर रहा।

- विदेश राज्यमंत्री बी के सिहं उत्तर कोरिया पहुँचे।

- पटना : राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद इलाज के लिए मिली छह सप्ताह की अंतरिम जमानत पर पटना पहुँचे।

■ 17 मई

- सुप्रीम कोट में रात भर चलाये गये हाई वाल्टेज ड्रामे के बाद गुरुवार सुबह बी एस योद्दियुरप्पा ने कर्नाटक के मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली।

- अब साबुन शैम्पू टूथ पेस्ट फेसवॉश हेयर डाइ जैसे कास्मेटिक्स के पैकेट पर भी हरे और लाल रंग के निशान दिखा करेंगे।

- चार साल की मासूम बच्ची की ज्यादती के बाद हत्या करने वाले 19 साल के आरोपी करण को मनावर की एडीशनल सेशन कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाई।

■ 18 मई

- सुप्रीम कोर्ट ने कर्नाटक के मुख्यमंत्री बीएस योद्दियुरप्पा को शनिवार शाम 4 बजे बहुमत साबित करने का आदेश दिया है।

- 16 साल की शिवांगी पाठक ने एवरेस्ट की चोटी फतह की।

- एक बोरे में छह टुकडों में मिली कविता रैना को आखिर किसने मारा यह सवाल पौने तीन साल बाद फिर खड़ा हो गया। महेश बैरागी को जिला कोर्ट ने दोष मुक्त कर दिया।

■ 19 फरवरी

- कर्नाटक में 55 घटे के मुख्यमंत्री येद्दियुरप्पा ने शनिवार शाम फ्लोर टेस्ट से पहले ही इस्तीफा दे दिया।

- गुजरातः भावनगर में सीमेन्ट की बोरी से लदा ट्रक पलटने की घटना में दबकर 19 लोगों की मौत हो गई।

- दिल्ली की ऐडिशनल सेशंस कोर्ट ने पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आई एस आई को गोपनीय सूचनाएं लीक करने की दोषी पूर्व राजनयिक माधुरी गुप्ता को तीन साल जेल की सजा सुनाई।

■ 20 मई

- भारतीय उपग्रह कार्यक्रमों के जनक प्रो. यू आर राव के नाम पर इसरो उपग्रह केन्द्र का नाम करण किया गया।

- मुंबई का बिरजू किशोर सल्ला 37 पांच साल विमान में नहीं बैठ पायेगा वह देश का पहला व्यक्ति है जिसे नेशनल नोफ्लाई लिस्ट में डाला है।

- दंतेवाड़ा माओवादियों ने 50 किलोग्राम विस्फोटक से धमाका कर पुलिस की गश्ती जीप को उड़ा दिया।

■ 21 मई

- केरल के कोझिकोड़ में निपाह वायरस (एनआईवी) से संक्रमित होकर 11 लोगों की मौत हुई।

- जर्मनी अपने बच्चों के साथ छुट्टी मनाने निकले 10 अभिभावकों पर पुलिस ने 80-80 हजार रूपये का जुर्माना लगा दिया।

- रूस के सोचि में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकत हुई।

■ 22 फरवरी

- भोपालः भोपाल कलेक्टर रह चुके एम ए खान को आयकर विभाग ने बेनामी संपत्ति एक्ट के तहत नोटिस जारी किया उनकी 30 करोड़ रूपये से अधिक की संपत्ति अटैच की है।

- भोपाल राज्य सरकार ने 2010 के आइ पी एस आशुतोष प्रतापसिंह को संचालक जनसंपर्क बनाया है।

- काबुल : अफगानिस्तान के दक्षिणी कंधार प्रांत में विस्फोटकों से लदे एक वाहन में विस्फोट से 16 लोगों की मौत हो गई।

■ 23 मई

- भोपाल / मंदसौर : सुवासरा से कॉग्रेस विधायक हरदीप सिंह डंग समेत सौ से ज्यादा नेताओं ने इस्तीफा दे दिया।

- कर्नाटक में जद (ध) नेता एच डी कुमार स्वामी के नेतृत्व में नई सरकार ने सत्ता संभाल ली।

■ 24 मई

- सीहोर के छोटे से गांव भोज नगर की 24 वर्षीय मेघा परमार ने बुधवार सुबह 10.45 बजे विश्व की सबसे ऊँची 29029 फीट चोटी माऊंट एवरेस्ट को फतह कर लिया।

- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने उत्तर कोरिया के शासक किंमजोंग उन से 12 जून को सिंगापुर में होने वाली मुलाकात रद्द कर दी।

- दिल्ली की एक कोर्ट ने सुनंदा पुष्कर की मौत का मामला स्पेशल कोर्ट को सोंप दिया।

■ 25 मई

- कर्नाटक में एच डी कुमार स्वामी के नेतृत्व वाले जद (ध) कांग्रेस गठबंधन की

सरकार को विश्वास मत प्राप्त हो गया।

- यूपी में लू की चपेट में आकर कानपुर में छह लोगों की मौत हो गई जबकि 23 लोगों का अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

- इटली के एक कोर्ट ने एक माता पिता को उनकी बेटी का नाम बदलने का आदेश दिया।

■ 26 मई

- सी बी एस ई की 12 वीं के नतीजे में नोएडा की मेघना 500 में 499 अंक लाकर देश में प्रथम रही ।

- नई दिल्ली : कारोबारी अशोक गुप्ता से 5 करोड़ की फिरौती मांगने के मामले में गैंगस्टर अबू सलेम को दोषी करार दिया।

- सेना ने उत्तर कश्मीर के जंगलों में विदेशी आंतकियों की घुसपैठ नाकाम की सेना ने 5 आंतकियों को मार गिराया।

■ 27 मई

- हैदराबाद वाट्स एप पर बच्चा चोर के अफवाह के बाद हुए हमले में एक ट्रांसजेंडर की मौत हो गई जबकि 4 घायल हैं।

- उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशवप्रसाद मौर्य को तबीयत खराब होने के बाद एम्स में भर्ती कराया

- लंदन आयरलैंड में 66 फीसदी से ज्यादा लोगों ने गर्भपात पर लगा प्रतिबंध हटाने के पक्ष में वोट दिया।

■ 28 मई

- रोम : इटली के नामित प्रधानमंत्री जुसेप कोंते ने गठबंधन सरकार का गठन करने में विफल रहने के बाद इस्तीफा दे दिया।

- पंजाबी गायक नवजोत सिहं (23) की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

- सतनाः मैहर शारदा देवी मंदिर परिसर में खड़े वाहनों में अचानक आग भड़क गई देखते ही देखते तीन वाहन जलकर खाक हो गये।

■ 29 मई

- इंदौर : पूर्व राज्यपाल उर्मिला सिहं (71) का निधन हो गया।

- ग्वालियर : जयारोग्य अस्पताल के ट्रॉमा सेंटर के आईसीयू में भर्ती तीन मरीजों की मौत हो गई

- कॉग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने अपराधिक मानहानि के मामले में केन्द्रिय मंत्री नितिन गड़करी से माफी मांग ली।

■ 30 मई

- दिल्ली के मालवीय नगर में एक रबर गोदाम में लगी भीषण आग पर काबू पाने में वायुसेना के एम आई 17 हेलीकाप्टर को भी लगाया गया।

- सीबीआई ने दिल्ली के स्वास्थ्य और ऊर्जा मंत्री सतेन्द्र जैन के आवास पर छापा मारा।

- आरडी गार्डी उज्जैन मेडिकल कॉलेज के आईसीयू में एक मरीज की ऑक्सीजन मास्क में आग लगने से मौत हो गई।

■ 31 मई

- 14 सीटों पर हुए उपचुनाव में भाजपा और उसकी सहयोगी पार्टिया सिर्फ चार सीट पर ही जीत सकी।

- कर्नाटक में जद (ध) और कॉंग्रेस के बीच विभागों के बटवारे पर सहमति बन गई वित्त विभाग जद (ध) के पास रहेगा, गृह कॉंग्रेस के पास।

- स्टॉकहोम डेनमार्क की संसद ने सार्वजनिक स्थानों पर बुर्के पहनने पर प्रतिबंध के लिए कानून पारित कर दिया।

इसे भी जानिये

राष्ट्रकूट राजवंश

- राष्ट्रकूट राजवंश का संस्थापक दीन्तदुर्ग (752 ई) था। शुरुआत में वे कर्नाटक के चालुक्य राजाओ के अधीन थे।
- इसकी राजधानी मनीकर या मान्यखेत (वर्तमान मालखेड़ शोलापुर के निकट) थी।
- राष्ट्रकूट वंश के प्रमुख शासक थे कृष्ण प्रथम ध्रुव, गोविन्द तृतीय, अमोधवर्ष, कृष्ण II, इन्द्र III एवं कृष्ण III।
- एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण कृष्ण प्रथम ने करवाया था।
- ध्रुव राष्ट्रकूट वंश का पहला शासक था जिसने कन्नौज पर अधिकार करने हेतु त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया और प्रतिहार नरेश वत्सराज एवं पाल नरेश धर्मपाल को पराजित किया।
- ध्रुव को धारावर्ष भी कहा जाता था।
- गोविन्द्र तृतीय ने त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लेकर चक्रायुद्ध एवं उसके सरंक्षक धर्मपाल तथा प्रतिहार वंश के शासन नागभद्र II को पराजित किया।
- पल्लव, पाण्डय, केरल एवं गंग शासकों के संघ को गोविन्द III ने नष्ट किया।
- अमोघवर्ष जैनधर्म का अनुयायी था। इसमें कन्नड़ में कविराजमार्ग की रचना की।
- आदिपुराण के रचनाकार जिनसेन गणितसार संग्रह के लेखक महावीराचार्य एवं अमोघवृत्ति के लेखक सत्कायना अमोघवर्ष के दरबार में रहते थे।
- अमोघवर्ष ने तुंगमुद्रा नदी में जल-समाधि लेकर अपने जीवन का अंत किया।
- इन्द्र III के शासन काल में अरब निवासी अलमसूदी भारत आया इसने तत्कालीन राष्ट्रकूट शासकों को भारत का सर्वश्रेष्ठ शासक कहा।
- राष्ट्रकूट वंश का अंतिम महान शासक कृष्ण था। इसी के दरबार में कन्नड़ भाषा के कवि III पोन्न रहते थे जिन्होंने शान्तिपुराण की रचना की।
- कल्याणी के चालुक्य तैलप III ने 973 ई.में कर्क को हराकर राष्ट्रकूट राज्य पर अपना अधिकार कर लिया और कल्याणी के चालुक्य वंश की नीवं डाली।
- एलोरा एवं एलिकेंटा (महाराष्ट्र) गुहामन्दिरों का निर्माण राष्ट्रकूटों के समय ही हुआ।
- राष्ट्रकूट शैव, वैष्णव, शाक्त सम्प्रदायों के साथ-साथ जैन धर्म के भी उपासक थे।
- राष्ट्रकूटों ने अपने राज्यों में मुसलमान व्यापारियों को बसने तथा इस्लाम के प्रचार की स्वीकृति दी थी।

दिशा बोध

शिक्षा की उपेक्षा

1. पर्याप्त ज्ञान के बिना सभा मंच पर जाना वैसा ही है, जैसा कि बिना चौपड़ के पाँसे खेलना।
2. उस अनपढ़ व्यक्ति को देखो, जो प्रभावशाली वक्ता बनने की वांछा कर रहा है। उसकी वांछा वैसी ही है, जैसे कि बिना उरोजवाली स्त्री का पुरुषों को आकर्षित करने की इच्छा करना।
3. विद्वानों के सामने यदि अपने को मौन बनाये रख सकें, तो मूर्ख आदमी भी बुद्धिमान् गिना जायेगा।
4. अनपढ़ व्यक्ति चाहे जितना बुद्धिमान् हो, विज्ञजन उसकी सलाह को कोई महत्व नहीं देंगे।
5. उस व्यक्ति को देखो, जिसने शिक्षा की अवहेलना की है और जो अपने ही मन में बड़ा बुद्धिमान है, सभा-गोष्ठी में वह अपना भाषण देते ही लज्जित हो जायेगा।
6. अनपढ़ व्यक्ति की दशा उस ऊसर भूमि के समान है, जो खेती के लिए अयोग्य है। लोग उसके बारे में केवल यही कह सकते हैं, कि वह जीवित है, अधिक कुछ नहीं।
7. विद्वान का दरिद्र होना निस्सन्देह बहुत बुरा है, किन्तु मूर्ख के अधिकार में सम्पत्ति का होना तो इससे भी अधिक बुरा है।
8. सूक्ष्म तथा शुभ तत्वों में जिसकी बुद्धि का प्रवेश नहीं, उसकी सुन्दर देह मिट्टी की अलंकृत मूर्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।
9. उच्चकुल में जन्म लेने वाले मूर्ख का उतना आदर नहीं होता, जितना निम्नकुलोद्भव विद्वान् का।
10. मनुष्य पशुओं से जितना उच्च है, अशिक्षितों से शिक्षित भी उतना ही श्रेष्ठ है।

नाम कर्म प्रकृति व शरीर संरचना

❊ अनिल जैन (राजधानी) ❊

यथार्थतः कर्म का मूल है क्रिया। यह संसारी जीव मनसा वाचा कर्मणा कुछ न कुछ करता रहता है। यह सब उसकी क्रिया या कर्म है। और इसके माध्यम हैं उसके मन वचन और काया। इन्हें ही जीव कर्म या भाव कर्म कहते हैं। यहाँ तक सभी दर्शन इस बात को स्वीकार करते हैं। परन्तु इस भाव कर्म से प्रभावित होकर कुछ सूक्ष्म जड़ पुदगल स्कंध जीव के आत्म प्रदेशो में प्रवेशित होकर उससे समबद्ध होते हैं। यह बात सिर्फ जैन दर्शन ही ज्ञापित करता है। ये सूक्ष्म गड़ पुदगल स्कंध, द्रव्य कर्म कहलाते हैं इन्हें ही अजीव कर्म भी कहते हैं। और रूप रस आदिक के धारक मूर्तिक कहलाते हैं। जीव जैसे-जैसे कर्म करता है वैसी ही प्रकृति को लेकर ये द्रव्य कर्म सम्बद्ध होते हैं और कालांतर में परिपक्व होकर उदय में आते हैं। उनसे प्रभावित होकर आत्मा के ज्ञानादि गुण तिरोभूत होते हैं। यही फलदान है। इसे ही कर्म परिणाम कहा है। ये सूक्ष्मता के कारण दृष्टिगत नहीं होते हैं। आगामानुसार कर्म की परिभाषा बताते हुये जैन धर्म प्रवेशिका में बताया हैं कि जीव के रागद्वेषादिक परिणामों के निमित्त से वर्गणा कर्मणा रूप जो पुद्गल स्कंध जीव के आत्मप्रदेशों से सम्बंद्ध होते हैं उन्हें कर्म कहते हैं। अथवा जीव के रागादि विभावों का निमित्त प्राप्त करके कर्मरूप से परिणत उन कार्माण वर्गणाओं को कर्म कहते हैं। ये द्रव्य कर्म आठ प्रकार के होते हैं ।1. ज्ञानावरण 2. दर्शनावरण 3. वेदनीय 4. मोहनीय 5. आयु 6. नाम 7. गौव और 8. अंतराय। इन आठ कर्मों में नाम कर्म ही ऐसा कर्म है जो भिन्न भिन्न गति के भिन्न भिन्न शरीरों को चित्र विचित्र रूप में रचता है या सरंचना करता है। नाम कर्म की कुल प्रकृतियां 93 हैं। इनमें पिंड प्रकृति 14 प्रकार की जो प्रमोद करने पर 65 हो जाती हैं और अपिंड प्रकृति कुल 28 होती है। हमारी दृष्टि में जो अनेकानेक प्रकार के शरीर देखने में आते हैं इन ही प्रकृतियों के परिणाम हुआ करते हैं। 14 पिंड प्रकृतियों 1. गति- 4, 2. जाति-5, 3. शरीर-5, 4.आंगोपांग-5, 5.बंधन-5, 6. संघात-6, 7. संस्थान-3, 8. संहनन-6, 9.वर्ण-5, 10. गंध-2, 11. रस-5, 12. स्पर्श-8, 13.आनुपूर्वी-4,14. विहायोगति के प्रकार -2, कुल 65 प्रकृति के रूप में है और अपिंड प्रकृति 1. अगुरु लघु 2. उपघात 3. परघात 4. उच्छवास 5. आतप 6. उद्योत 7. रस 8.स्थावर 9. पर्याप्त 10. प्रत्येक शरीर 11.स्थिर 12. शुभ 13. सुभग 14. सुस्वर 15. आदेय 16 यश कीर्ति 17. निर्माण 18.तीर्थंकर 19. स्थावर 20. सूक्ष्म 21.अपर्याप्त 22. साधारण 23. अस्थिर 24. अशुभ 25. दुर्भग 26. दुःस्वर 27.अनादेय 28. अयशः कीर्ति।

जिन कर्मोदय वशात् आहार वैजस और कार्माण वर्गणा के पुद्गल स्कंध शरीर योग्य परमाणुओं के द्वारा परिणत होते हुये, आत्मा के साथ सम्बद्ध होते हैं उसे शरीर नाम कर्म कहते हैं। इनके 5 भेद हैं। 1. औदारिक 2. वैक्रियक 3. आहारक 4. तैजस और 5.कार्माण।

जिस कर्म के उदय से आहार वर्गणा के पुद्गल स्कंध औदारिक शरीर रूप परिणत होते हैं उसी औदारिक शरीर नाम कर्म एवं जिस कर्म के उदय से आहार वर्गणा के पुद्गल स्कंध वैक्रियक शरीर रूप से परिणत होते हैं उसे वैक्रियक शरीर नाम कर्म कहते हैं इसी तरह

शेष में समझना चाहिये। जिस कर्मोदय से शरीर हेतु आये पुद्गल स्कंधो का परस्पर में बंध होता है उसे बंधन नाम कर्म कहा जाता है। और जिस कर्म के उदय से शरीर विषयक पुदगल स्कंधो का रहित संश्लेष होता है उसे संघात नाम कर्म कहते हैं। शरीर को आकार देने वाला कर्म संस्थान नाम कर्म है। इसके छः भेद हैं। 1. समचतुरस संस्थान 2. न्यग्रोध परिमंडल 3. स्वाति 4. कुब्जक संस्थान 5. वामन और 6. दण्डक संस्थान

ऊपर नीचे और मध्य से समभाग वाला समचतुरस संस्थान होता है। वड़वृक्ष के परिमण्डल के समान शरीर होना न्यग्रोध परिमण्डल संस्थान है। नाभि से नीचे बड़ा और ऊपर सकराया हीन शरीर स्वाति संस्थान वाला है। कुवड़ा शरीर कुब्जक संस्थान के नाम से जाना जाता है।

वौना शरीर वामन संस्थान नाम कर्म का लक्षण है। जो शरीर विभिन्न प्रकार का या विषमता लिये होता है वह दण्डक संस्थान नाम कर्म का लक्षण है।

जिस कर्म के उदय से शरीर की अंग और उपांगो की रचना होती है उसे अंगोपांग नाम कर्म कहते हैं। ये औदारिक आदि 3 प्रकार के है जिस कर्म के उदय से औदारिक शरीर की आंगोपांग उत्पन्न होते हैं वह औदारिक आंगोपांग नामकर्म है ऐसे ही शेष दो शरीर के भी जानना चाहिये। शरीर में 2 पैर, 2 हाथ, मस्तक, हृदय, पीठ और नितम्न ये आठ अंग तथा नाक कान आँख, जीभ, अंगुली, आदि उपांग होते हैं।

जिस कर्मोदय वशात् शरीर में अस्थियों और संधियों की संरचना होती है उसे संहनन नाम कर्म कहते हैं ये छह प्रकार के हैं। 1. वज्रवृषभ नाराच 2. वज्र नाराच 3. नाराच 4. अर्द्धनाराच 5. कीलक ओर 6. असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन।

जिस शरीर में वज्रमय हड्डियाँ, वज्रमय वेष्टन से वेष्टित होती हैं तथा वज्रमय नाराच से कीलित होती हैं वह वज्रवृषभ नाराच संहनन वाला शरीर कहलाता है। जिस कर्म के उदय से हड्डियाँ वज्रमय वेष्टन से वेष्टित नहीं होती उसे वज्रनाराच संहनन कहते हैं। एवं जिसके उदय से कीलों रहित हड्डियाँ हो किन्तु वज्रमय न हो उसे नाराच संहनन कहते हैं।

जिसके उदय से हड्डियों की संधिया नाराच से आधी विधी रहती हे। उसे अर्द्धनाराच संहनन तथा जिसके उदय में अस्थियाँ आपस में कीलित हों उसे कीलक संहनन और जिस कर्म के उदय से अस्थियाँ अलग-अलग शिरा से वंधी या जुड़ी रहती हैं उसे असंम्प्राप्ता सृपाटिका संहनन नामकर्म कहा जाता हैं।

जिन कर्मों के कारण में स्वयं की जाति अनुसार काला पीला नीला आदि रंग उत्पन्न होता है उसे वर्णनाम कर्म कहते है इसके 3 भेद है गंधनाम कर्म के उदय पर शरीर स्वयं की जाति अनुसार निश्चय गंध प्राप्त होती हैं वही गंधनाम कर्म कहलाता हैं जिस कर्म के कारण जीव को प्राप्त शरीर में खट्टा मीठा कड़वा आदि रस उत्पन्न होता हें वह रस नाम कर्म हैं। जिन कर्मों के उदय से जीव के शरीर में उसकी अपनी जाति के अनुसार हल्का भारी, सूखा चिकना आदि नियत स्पर्श गुण प्रकट होता हैं उसे स्पर्श नामकर्म कहते हैं।

जिस कर्म के उदय से जन्म के पहिले और मरण के बाद बीच के एक, दो और तीन समय में अर्थात विग्रह गति में, जीव के प्रदेशों के आकार, मरण से पहिले शरीर के आकार रूप होता है उसे आनुपूर्वी नाम कहते हैं। विशेष बात यह है कि संस्थान नाम कर्म का उदय शरीर ग्रहण के पहिले समय से होता है

जबकि आनुपूर्वी नामकर्म का उदय विग्रहगति में होता है। आनुपूर्वी के उदय पर जीव नियत गति में गमन करता है। आनुपूर्वी नाम कर्म का काम आकार विशेष बनाये रखना तथा इच्छित गति में गमन कराना है।

अगुरु लघु नाम कर्म के उदय पर शरीर न तो लोहे के गोले के समान भारी ओर न ही आक की रूई के समान हल्का होता है। जिस कर्म के उदय से जीव को पीड़ा देने वाले शारीरिक अव्यय प्राप्त होते हैं उसी उपघात नाम कर्म का उदय समझना चाहिये। जैसे वारह सिंघा हिरण के सींघ। और जिस कर्म के उदय पर पर घातक शारीरिक अवयव प्राप्त होते हैं उसे परघात नाम कर्म कहते हैं। जैसे सर्प की दाढ जहर, विच्छू का डंक, और शेर के नख व दांत।

जिस कर्म के उदय होने पर जीव के शरीर में आताप होता है उसे आतप नामकर्म कहते हैं। जैसे पृथ्वीकायिक जीवों की शरीर अप सूर्यमण्डल में आतम पाय जाता है। उद्योत नाम कर्म की उदय से शरीर उद्योत प्राप्त होता है। जैसे चन्द्रमा -जुगनू। जिस कर्म की उदय से जीव का आकाश से गमन होता है वह विहायो गति नामकर्म है। तिर्यंच और मनुष्य का भूमि पर गमन विहायोगति नाम कर्म के कारण ही होता है। दो इन्द्रिय आदि पर्याय का प्राप्त होना स्थावर नाम कर्म कहलाता जिस कर्म के उदय पर जीव वादर काय में उत्पन्न होता है। वह वादर नामकर्म एवं जिसके उदय पर जीव सूक्ष्म काय मे उत्पन्न होता है वह सूक्ष्म नाम कर्म है। जीव को पर्याप्तियों को पूर्ण करने की क्षमता पर्याप्ति नामकर्म एवं पर्याप्तियों को पूर्ण न कर पाना अपर्याप्ति नाम कर्म की उदय पर होता है। जिस कर्म के उदय पर एक शरीर में एक ही जीव पाया जाता है वह प्रत्येक नाम कर्म तथा जिसमें जीव साधारण शरीर वाला होता है वह साधारण नाम कर्म के उदय पर होता है।

शरीर में रूधिर रस आदि की स्थिरता जिस कर्म के कारण होती है वह स्थिर नाम कर्म और जिससे अस्थिरता रहती है वह अस्थिर नाम कर्म है। सुंदर रूप या मनोहर आंगोपांग की प्राप्ति शुभ और कुरुप या वैडौल आंगोपांग की प्राप्ति अशुभ नाम कर्म के उदय पर होती है।

जिस कर्म के उदय पर सौभाग्य प्रकट होता है उसे सुभग तथा जिसके प्रकट होने पर दुर्भाग्य प्रकट होता है वह दुर्भग नाम कर्म है। मधुर या मीठे के स्वर की प्राप्ति सुस्वर नाम कर्म उदय पर तथा कर्कश स्वर की प्राप्ति दुस्वर नामक के उदय होने पर होती है। तथा जिस कर्मोदय पर जीव बहुमान्य होता है वह आदेय तथा जिसके उदय पर अनादेय अथवा अपमान प्राप्त करता है वह अनोदय नाम कर्म कहलाता है। जिन कर्मो के उदय पर विद्यमान अथवा अविद्यमान गुणों को भी प्रकट दिया जाता है तो वह यशकीर्ति और विद्यमान तथा अविद्यमान दुर्गुणों को प्रकट दिया जाता है तो वह अयशःकीर्ति नाम कर्म का उदय कहलाता है। मान की नियमता को निर्माण कहते हैं।

वह निर्माण 1. प्रमाण निर्माण ओर स्थान निर्माण दो भेद वाला है। कंद्या , शिर, हाथ आदि अवयावों के प्रमाण के नियामक कर्म को प्रमाण निर्माण कर्म कहते हैं और आंख, नाक, कान आदि अनेक उपांगो का अपने अपने स्थान का नियामक जो कर्म हो उसको स्थान निर्माण कर्म कहते हैं।

तथा जिस कर्म के उदय में जीव लोक में त्रिलोक पूज्य तीर्थंकर प्रकृति को प्राप्त करता है वह तीर्थंकर नाम कर्म प्रकृति है।

इस प्रकार शरीर संरचना में नाम कर्म की प्रकृति कारण भूत है। ऐसा जानकर हमें कर्माश्रव की विधि समझकर अपने में शुभाश्रव का ही आश्रव करने का उपाय करना चाहिये।

आओ सीखे : जैन न्याय

आलौकिकार्थ ख्याति विपर्यवाद की समीक्षा

विपर्यय के सन्दर्भ में कोई भी ख्याति ठीक से नहीं होती। अतः आलौकिकार्थ ख्याति को ही स्वीकार करना चाहिये। आलौकिक का अर्थ है – अन्तः अथवा बाह्य रुप से जिसका निरुपण नहीं हो सके, उसे आलौकिक अर्थ ख्याति कहते है। इस आलौकिक अर्थ ख्याति वाद से असहमत जैनाचार्य आलौकिक के संभावित आशयों से बाधा प्रस्तुत करते हुये कहते हैं–

क्र.	आलौकिक के संभावित आशय	उनमे बाधा
1.	अर्थ का अन्य रुप होना	इसमें सत्य रुप प्रतिभासित होता है। वैसा ही असत्य रुप प्रतिभासित होता है। यदि अन्यरुप प्रतिभासित होने का नाम आलौकिक है तो विपरीत अर्थ का नाम ही आलौकिक होगा।
2.	अन्य क्रिया करना	यदि अन्य अर्थ का काम करने लगे तो उसके लिये अन्य कारणों की परिकल्पना करना व्यर्थ हो जायेगा। और एक ही कारण सब कार्य करने लगेंगे।
3.	अन्य कारण से उत्पन्न होना	यह पक्ष असंगत है।
4.	बिना कारण से उत्पन्न होना	तो यह विपरीत अर्थ ख्याति ही होगी, आलौकिक ख्याति नहीं, क्योंकि बिना कारण के कार्य सत् रुप होता है असत् रुप यदि सत् रुप में तो कार्य नित्य हो जायेगा। यदि असत् रुप है तो चाँदी है, यह कथन रुप प्रतीति क्यों होती है? इस प्रकार विधि रुप प्रतीति नहीं होगी

निष्कर्ष– अतः आलौकिकार्थ ख्यातिवाद श्रेयस्कर नहीं है।

कहानी

शकीला

विवेक दोपहर के दो बजे अपनी दुकान पर बैठा था सावन का त्योहार होने से रिमझिम फुहार के साथ दुकान पर भी ग्राहकों की भर मार चल रही थी कि उसी समय विवेक के पिताजी विनय ने अपनी दुकान की अलमारियों की तरफ दृष्टि डालकर एक परचा तैयार कर दिया व विवेक से कहा बेटा ये परचा है इस परचे के अनुसा तुम्हें सब सामान खरीदकर लाना है । और साथ में बीस हजार रूपये भी दे दिये विवेक दुकान के बाहर जामघाट से रहली की ओर जाने वाली बस की प्रतिक्षा करने लगे लेकिन उस दिन जितनी भी बसे व जीपें जो भी निकल रही थी वे सब सागर की ओर निकल रही थी। यदि कोई इक्की दुक्की रहली की ओर जाने वाली गाड़ी निकलती भी थी तो वे विवेक रोकने पर भी रूकती नहीं थी जब करीब एक घण्टा वाहन कि प्रतीक्षा करते करते हो गया तो विवेक के पिता जी खीज उठे और वे बोले क्या तुम अभी यहीं खड़े हो विवेक ने कहा मैं क्या करू जितनी भी गाड़िया निकल रही हैं उन सबको मैं रोक रहा हूँ परन्तु वे सब फर्राटे दार स्पीड़ में चली जा रही हैं विजय ने अपने पास में खड़े हुए सरजू तिवारी से कहा सरजू भाई कुछ करो यार बहुत जरूरी काम है विवेक को रहली भेजना व खरीदी करके फिर वापिस बुलवाना भी है बहुत सारे लोग परेशान हो रहे है त्यौहार की दुकानदारी है मैं अगर रोड़ पर खड़ा हो जाऊँ गा तो ग्राहकों को सामान कौन देगा तभी यह जब बात चल ही रही थी तभी सागर की ओर से एक एम्बेसडर गाड़ी चली आ रही थी सरजू ने उसे हाथ का संकेत दिया तो कार रूक गई सरजू ने ड्रायवर से बात की तो उसने हाँ कह दिया। सरजू ने विवेक से कहा लो विवेक बैठो गाड़ी में चले जाओ विवेक को ड्रायवर ने अपनी सीट के बगल में ही बिठा लिया ड्रायवर ने विवेक का नाम पूछा साथ ही पढ़ाई लिखाई के बारे में जानकारी ली। थोड़ी ही देर में विवेक ने भी पूछ लिया अंकल जी आपका नाम क्या है तो उन्होंने कहा बेटा मेरा नाम पुरुषोत्तम पटेल है मैं गढ़ाकोटा में रहता हूँ विवेक ने पूछा अंकल ती आप क्या करते हैं। तब पुरुषोत्तम पटेल ने कहा बेटा मैं पीडब्लू विभाग में इंजीनियर हूँ मेरी अभी साईट बमौरी में चल रही है विवेक ने कहा अंकल जी आप अकेले खुद ही गाड़ी चलाते हैं पुरुषोत्तम पटेल ने कहा हां बेटा मैं अपना काम स्वयं अपने ही हाथ से करना ही पसन्द करता हूँ।

विवेक ने फिर अपनी एक जिज्ञासा पुरुषोत्तम पटेल के सामने रखदी और कहा अंकल जी आप धीरे गाड़ी चलाते हैं या तेज गाड़ी चलाते हैं ? तब पुरुषोत्तम पटेल जी ने कहा कि बेटा पहले में बहुत तेज गाड़ी चलाता था एक दिन कि घटना ने मुझे तेल गाड़ी चलाने से रोक दिया और मेरा मन परिवर्तित हो गया और उस दिन से मैं यह संकल्प लिया कि आज से मैं अपनी गाड़ी को साठ किलोमीटर की गति से अधिक नहीं चलाऊँगा विवेक ने पूछा अंकल जी आपका ऐक्सीडेंट किससे हुआ था।

पुरुषोत्तम पटेल ने कहा बेटे में जब अपनी साइड से गांव जा रहा था कि जैसे ही रहली को पार किया वैसे ही मेरा पैर ऐक्सीलेटर पर दबाब बनाता गया गाड़ी की स्पीड़ बढती गई और ठण्डी ठण्डी हवा लगने से मुझे अचानक कब झपकी आ गई कि मुझे पता नहीं चला परन्तु तुंरत मेरी झपकी खुली जैसे ही खुली मैंने देखा दस मीटर दूर पर ही एक स्टूडेंट चला जा रहा है मैने तुरंत अपना स्टेरिंग घुमाया व बचाने कि कोशिश की ब्रेक भी लगाया परन्तु वह स्टूडेंट मेरी गाड़ी की चपेट में आ ही गया और उसकी साइकिल फिक गई

विवेक ने कहा अंकल जी फिर तो आपने अपनी गाड़ी रोक कर उसे स्टूडेंट को उठाया होगा और अस्पताल ले गयें होंगे।

पुरुषोत्तम पटेल ने कहा नही बेटे आज का जमाना बहुत खराब है होम करो और हाथ जलते हैं क्योंकि अगर हमने गाड़ी रोकली व किसी को भी उठाने की कोशिश की और किसी पर भी करूणा दिखाई मानवता का व्यवहार किया तो आसपास के लोग एकत्रित हो जाते हैं और वे सज्जनता के स्थान पर दुर्जनता का व्यवहार करते हैं बड़ी गाड़ी वाले को हमेशा दोषी ठहराते हैं भलेही छोटी गाड़ी वाला राँग साईड चल रहा हो अथवा कितनी भी गलती पर क्यों न हो फिर भी लोग बड़ी गाड़ी के चालक को ही निर्दयता पूर्वक मारते पीटते हैं इसलिए मैंने उस स्टूडेंट को देखा तक नहीं और अपनी गाड़ी उसी स्पीड में आगे बढ़ा दी। भले ही मैंने गाड़ी आगे बढ़ा दी पर मेरा मन पीछे मुड़कर यही सोचता रहा कि उस बेचारे का क्या हुआ होगा इसी पछतावें में मुझे पूरी रात नींद नहीं आई मैं यही सोचता रहा मैं इंसान नहीं हैवान हूँ जो तड़फते हुए बच्चे को छोड़ कर निष्ठुरता पूर्वक आगे बढ़ गया सिर्फ एक डर और चमड़ी बचाने के लिए हृदय शून्य बन गया। विवेक ने पूछा अंकल जी आपका एक्सीडेंट कहां हुआ था पुरुषोत्तम ने कहा बेटा खमरिया रोड़ पर जब विवेक और पुरुषोत्तम पटेल की यह सब चर्चा चल रही थी तब पुरुषोत्तम पटेल का ध्यान और दृष्टि विवेक की दाढ़ी पर गई तब पुरुषोत्तम ने पूछा क्यों विवेक ये तुम्हारी दाड़ी कही कटी सी नजर आ रही हैं कही गिर पड़े थे क्या या शैतानी कर रहे थे क्योंकि बचपन की शैतानी के निशान जवानी में दिखाई देते हैं उन्हें कितना भी कोई छिपाने की कोशिश करे तो भी वे छिपते नहीं है।

तब विवेक ने कहा नहीं अंकल जी मेरा भी एक एक्सीडेंट हो गया था मैं अपनी साइकिल से कोंचिग के लिए रहली आया था कोंचिग पढ़ने के बाद मेरा मन हुआ कि चलो आज साइकिल पर कुछ मौज मस्ती कर लें और मैंने गढ़ाकोटा की ओर अपनी साइकिल को मोड़ दिया और जैसे ही मैं खमरिया के पास पहुँचा तभी एक पीछे से कार आई और मैं

उसकी चपेट में आ गया बहुत तेज स्पीड़ में वह दौड़ रही थी मैं उसकी चपेट में कैसे और कब आया मुझे पता नहीं है मैं खून से लथपथ होकर वही रोड़ पर गिर गया थोड़ी देर के बाद में मैं अचेत हो गया मुझे पता नहीं मै अस्पताल कैसे पहुँच गया पर जब मुझे अस्पताल में होश आया तो एक लड़की वहां खड़ी थी और उसके दुपट्टे से मेरा आधा मुँह बंधा था वह कह रही थी कि डॉक्टर साब इस बेचारे का इलात कर दीजिए ये बेचारा बच्चा रोड पर पड़ा था खून वह रहा था सारे लोग देखकर चले जा रहे थे किसी ने भी जरा सी इंसानियत नहीं दिखाई और न इस बच्चे को उठाकर न तो आंसू पोछे न तो इलाज कराने की बात सोची मेरे अब्बा ओर मैं घर से निकली मैं तो आटा पिसाने के लिए मुझे अपने अब्बा पर भी तरस आया कि वे नवाज पढ़ने मस्जिद तो चले गये पर इस बच्चे की तरफ उन्होंने देखा भी नहीं मुझे उनके इस वर्ताव पर खूब तरस आया मैंने गेहूँ का पीपा वही सड़क किनारे चक्की पर बाद में रखा पहले अपने दुपट्टे से इस बच्चे का खून रोकने का प्रयास किया ओर अब मैं आपसे यह कहना चाहती हूँ कि आप इसका इलाज कर दीजिए मेरे पास जो भी पैसे हैं वो पूरे पैसे में आपको दे सकती हूँ तब डॉक्टर ने मेरे से कहा तुम्हारा कौन हैं तब उस लड़की ने कहा कि कोई भी रहा हो आपको इससे क्या लेना देना आपके इलाज का जो भी पैसा लगे वो मैं दूंगी।

डॉक्टर ने कहा बिटियां बात ये नहीं है कुछ कानूनन खाना पूर्ति होती है इसका नाम क्या है ये कहां का रहने वाला है तभी मेरे कान में ये बात पड़ी तो मैंने बहुत धीरे से कह दिया जामघाट तब डॉक्टर ने अपना फोन जामघाट विनोद साहू के पास लगाया व मैने ये भी बता दिया कि मैं जैन हूँ। तब जामघाट में जैन का परिवार सिर्फ ए क था तत्काल विनोद ने मेरे पाप को सूचना दी मेरे पिता जी ने तुरंत मेरे चाचा को सूचना दी मेरे चाचा संजय तुरंत अस्पताल पहुंचे मेरी हालात देखकर वे थोड़ी देर के लिए वे ठिटक गये तब डॉक्टर ने टांके डालना शुरु कर दिया इसके पहले ही जो डॉक्टर ने परचा दिया था उसके अनुसार वह लड़की पूरी दवाईयां खरीदकर अपने पैसे से लाई थी। जब वो लेकर के लौटी तो मेरे चाचा की नजर उस लड़की पर पड़ी तो उन्हें बहुत ताज्जुब हुआ और वे सोचने लगे कि इस लड़की से मेरे भतीजे का कौन सा पूर्व जन्म का सबंध होगा जो इसने बिना किसी वजह के इतना सब कार्य कर दिया। चाचा ने उसे पैसे देने की कोशिश की तो उसने खूब मना करने के बाद पैसे लिए पुरुषोत्तम पटेल ने पूछा क्यों विवेक ये घटना कबकी है तब विवेक ने कहा 1 फरवरी 2011 की विवेक का उत्तर सुनते ही पुरुषोत्तम पटेल ने गाड़ी पर ब्रेक लगा दिया और एक साइड में गाड़ी लगाकर स्टेरिंग पर सिर रखकर तिरछी नजरों से विवेक की ओर देखते रहे और उन्हें वह दिन याद आ गया कि जब वे किसी साइकिल सवार बच्चे को अपनी गाड़ी की चपेट में लेकर भागे थे वह दिन भी 1 फरवरी 2011 का था उन्हें मन में ऐसा लगा कि अब इस बालक से मांफी मांग जी जाये कि मैं ही एक ऐसा दुष्ट इंसान था जो तुझे तड़फता हुआ छोड़कर गया था उन्होंने विवेक से मन ही मन क्षमा मांगते हुए पूछा बेटे उस लड़की का क्या नाम था जिसने तुम्हें अस्पताल पहुँचाया विवेक ने कहा अंकल जी शकीला

गोम्मटसार में कषाय मुक्ति प्रक्रिया का विवेचनः मानवीय मूल्यों के संदर्भ मे

❊ डॉ. वीरचन्द्र जैन, उदयपुर ❊

अनादिकालीन परिभ्रमणशील संसार में, अनंतानंत जीव राशि है। जो सुख प्राप्त करना चाहते हैं तथा उसके उपाय अनेक प्रकार के कार्य करता है। जिसमें उसे सच्ची समझ न होने से वह अंधविश्वास, हिंसा एवं कषायों में प्रवर्तन करता हैं।

भगवान महावीर का जन्म हुआ जब चारों और अंधविश्वास, कुरीतियों की कालिख, का पिशाच अपने हिंसक हाथों से क्रूरता की कलम लेकर संसार की स्याही से हत्या व हाहाकार का इतिहास लिख रहा था। येन केन प्रकारेण धन कमाने की लालसा ने अनैतिकता और आपाधापी की ऐसी आंधी उठा दी थी कि सात्विक संस्कार तिनकों की तरह तहस-नहस हो रहे थे । सभ्यता की सरिता और मनुजता की महानदी, हिंसा के प्रचण्ड ताप के कारण सूख जायेगी, परन्तु तीर्थंकर महावीर के जन्म के बाद समाज की दशा और सभ्यता तथा संस्कृति की दिशा में अमूल-चूल परिवर्तत आया।

भगवान महावीर ने वैभव विलास और भौतिकता की तृष्णाओं की तिलांजलि देकर त्याग व तपस्या के जिस कठिन मार्ग को अपनाकर अतुलित आत्मबल से अहिंसा की अर्चना तथा सत्य की साधना करके ब्रह्मचर्य, अचौर्य और अपरिग्रह का जो आदर्श प्रस्तुत किया, वह तात्कालीन दिग्भ्रांत समाज के लिए प्रेरणीय और अनुकरणीय है।

अनादिकालीन दिग्भ्रांति का कारण मोहनीय कर्म है। मोनीय कर्म क्या है ? तो गोम्मटसार कर्मकाण्ड, गाथा -21 के भावार्थ में कहा है कि जो मोहे अर्थात् अचेत करे वह मोहनीय कर्म है। मोहनीय कर्म दो प्रकार का है- दर्शन मोहनीय और चारित्र मोहनीय । (गोम्मटसार गाथा-26/27 में)

दर्शन मोहनीय का बंधन जीव को सत्मार्ग की अवहेलना करने से और असत्यमार्ग का पोषण करने से ,आचार्य उपाध्याय, साधु व सत्य के पोषक आदर्शों का तिरस्कार करने से दर्शन मोहनीय कर्म का बन्ध होता है। (तत्त्वार्थसूत्र अध्याय 6 सूत्र 13)

स्वयं कषाय करने से अर्थात् क्रोध, मान, माया, लोभ आदि प्रवृत्ति करने से जगत उपकारी साधुओं की निन्दा करने से धर्म के कार्यों में अंतराय करने से मद्य, मास आदि का सेवन करने से निर्दोष प्राणियों में दूषण लगाने से, अनेंक प्रकार के संक्लेश परिणामों से चारित्रमोहनीय कर्म का बंध होता है । (राजवार्तिक पेज 525, गो. कर्म. गाथा - 786 में) चारित्र मोहनीय कर्म की पच्चीस प्रकृतियां हैं- अनंतानुबंधी 16 और हास्यादि नो कषाय -9(गोम्मटसार कर्मकाण्ड, गाथा -33 के भावार्थ में) जो संयम के मार्ग में व्यधान उत्पन्न करते हैं और जिससे सत् मार्ग का द्वार नहीं खुल पाता है।

वर्तमान समय में कोई भी परिवार व समाज इन कषाय भावों से मुक्त नहीं है। इन की प्रबलता का कारण राग-द्वेष भाव है । गोम्मटसार कर्मकाण्ड गाथा-2 में कहा है कि-

पयडी सील सहावो जीवंगाणं अणाइसंबंधो।

कणयोवले मलं वा ताणत्थित्तं सयं सिद्धं॥

कारण के बिना वस्तु का जो सहज स्वभाव होता है उसको प्रकृति शील अथवा स्वभाव कहते हैं । जैस अग्नि का स्वभाव ऊपर जाना उसी प्रकार प्रकृति में यह स्वभाव जीव व कर्म का ही लेना चाहिये। जीव का स्वभाव रागादि रूप परिणमने का है और कर्म का स्वभाव रागादि रूप परिणमाने का है। अर्थात् राग से सहित होकर यह जीव अनेक प्रकार के पाप कार्यों में प्रवर्तन करता है वह इष्ट-अनिष्ट का विचार तक नहीं करता है।

गोम्मटसार कर्मकाण्ड गाथा-2 के भावार्थ में राग से पीड़ित व्यक्ति को शराब या भांग के नशे से पीड़ित बताया गया है कि जिस प्रकार शराबी व्यक्ति नशे में होने पर माता को पत्नि व पत्नि को बहिन कहता है उसी प्रकार राग-द्वेष से पीड़ित व्यक्ति को कषाय के उत्पन्न होने पर इष्टजन, पूजनीय गुणीजनों का विचार भी नहीं रखता है और मन में उत्पन्न अनेक गलत विचारों का वाचन कर देता है। जिससे अपनी हि सज्जनता पद दाग लगता है, जो कि मानवीय मूल्यों का हनन है, मानव समाज में क्रोध के विपरीत क्षमाभाव, दया, करूणा, वात्सल्य पूर्णभाव करना चाहिए और यह कार्य तभी संभव है। जब हम गुणीजनों को देखकर के अपने हृदय में खुशी का भाव उत्पन्न करेगा।

तब हम अन्य जीवों के प्रति दया दृष्टि कर सकेंगे व क्रोध कषाय पर विजय प्राप्त होगी।

आचार्य कल्प टोडरमल जी ने मोक्षमार्ग प्रकाशक के पेज 53 पर क्रोध कषाय के उदय होने के बारे में कहा है कि -

1. क्रोधी व्यक्ति हृदय को घात करने वाली गाली आदि रूप वचनों को बोलता है।
2. अपने अंगो से तथा शास्त्र पाषाणादि से घात करता है।
3. अनेक कष्ट सहकर तथा धनादि खर्च करके व मरणादि द्वारा अपना बुरा करके अन्य का बुरा करने का विचार करता हे।
4. अपने द्वारा बुरा न होने पर अन्य से बुरा करवाता है।
5. यदि किसी का कुछ नहीं कर पाये तो स्वयं का भी घात कर लेता है।

इस प्रकार इन कषायों के द्वारा यदि जीव मरण को प्राप्त होता है तो नियम से संक्लेश परिणाम सहित होने से नरक की प्राप्ति करता है। ऐसा हि कथन (छहढ़ाला की प्रथम के पद-9) में वर्णित है। यहां तक कि हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान रामचन्द्र शुक्ल ने अपने क्रोध नामक निबंध में कहा है कि क्रोध एक शान्ति भंग करने वाला मनोविकार है अतः क्रोध नाम कषाय के अभाव पूर्वक ही मानवीय मूल्य प्रकट होता है।

गोम्मटसार जीवकाण्ड गाथा-293 में कृष्ण-नील लेश्याओं के द्वारा होने वाले आयु के बंधन से नरक आयु का फल प्राप्त होता है। प्रथम दो लेश्याओं वाले जीव अनंतानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषाओं से सहित होते हैं । वही तत्वार्थ सूत्र में आचार्य उमास्वामी चारित्र मोहनीय के स्वरूप को वर्णन करते हैं कि

कषायोदयात्तीव्रपरिणामस्चारित्रमोहस्य॥14॥

कषाय के उदय से होने वाले वाला आत्मा का तीव्र कलुषित परिणाम होने से चारित्र मोहनीय कर्म के आश्रव का कारण है यही आश्रव नरकायु का कारण है सूत्र-15 इस प्रकार क्रोध के अभाव पूर्वक क्षमा धर्म प्रकट होता है क्षमावान व्यक्ति के ही संयम

त्याग धर्म आदि गुण प्रकट होते हैं । जिससे क्रोध कषाय का अभाव मानवीय मूल्यों के आधार से होता है।

1. हमें अपने आगामी परिणाम व उसके फल का विचार करना चाहिये।
2. क्रोधी व्यक्ति के क्रोध उत्पन्न होने पर सामने वाले व्यक्ति को शांत रहना चाहिए जब तक वह शांत नहीं हो जाता है।
3. क्रोध के आवेश में हमें जवाब नहीं देना चाहिये।
4. कर्म के उदय का विचार करें कि हमारे कर्म के कारण हमें क्रोध कषाय उत्पन्न हुई है।
5. क्रोधी के क्रोध शांत होने पर क्षमा मांगे।
6. क्रोधी के भावना के अनुरूप सम्यक् प्रवर्तन करने का प्रयास करें ।
7. क्रोध कषाय के कारण जिन्होंने दुःख भोगे ऐसे व्यक्तियों के जीवन वृत्त का विचार करें। जैसे : 1. तुकारी (स्त्री) को कोई तु नहीं कह सकता था। 2. द्वैपायन मुनि
8. क्रोध के आवेश में लिया गया निर्णय ठीक नहीं होता है।
9. क्रोध अन्धा होता है।
10. क्रोध हमेशा पर वस्तु पर होता है।

अभिमान के कारण दूसरे के प्रति नमनें की वृत्ति न होना मान है । मान भी अनन्तानुबंधी अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण और संज्वलन के भेद से चार प्रकार का है जो उत्तरोत्तर मन्द होता जाता है । इसकी उपमा, शैल, अस्थि, काष्ठ और बेंत से दी जाती है। इनका फल क्रमशः नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देवगति की प्राप्ति है।

आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धांत गोम्मटसार जीवकाण्ड में गाथा-285 में इसी तरह के भेद बताते हैं मान भी चार प्रकार का होता है । पत्थर के समान, हड्डी के समान, काठ के समान तथा बेंत के समान। ये चार प्रकार के मान भी क्रम से नरक, तिर्यंच, मनुष्य औद देव गति में उत्पन्न होते है।

मान कषाय के कारण जीव अनेक प्रकार के विचार करता है आचार्य कल्प पं. टोडरमल जी ने मोक्ष मार्ग प्रकाशक के तीसरे अध्याय, पेज 53 पर चारित्रमोहनीय के प्रकरण में मान कषाय के कारण दुःखी होकर जीव क्या करता है। जो कहते हैं ।

1. अपनी प्रशंसा व अन्य की निन्दा करना।
2. अनेक कष्टों से धन संग्रह किया उसे विवाहादि कार्यों में खर्च करना।
3. कोई सम्मान न करे तो उसे भय दिखाकर सम्मान करवाना।
4. जब कोई उसका सम्मान नहीं करता है तो वह अपना घाटा तक कर लेता है।

आचार्य समन्तभद्र रत्नकरण्ड श्रावकाचार श्लोक 25 में मान के आठ भेद बताते है।

ज्ञानं पूजां कुलं जातिं बलमृद्धि तपो वपुः।
अष्टावाश्रित्य मानित्वं स्मयमाहुर्गतस्मयाः॥

ज्ञान, पूजा, कुल, जाति, बल, ऋद्धि, तप और शरीर इन आठ वस्तुओं के आश्रय से जो मान किया जाता है उसे भगवान ने मान कहा है। अर्थात् क्रोध, मान कोई हवा में नहीं होता, किसी न किसी के आश्रित होता है। उसी प्रकार मान भी किसी वस्तु के आश्रित होता है और जिस वस्तु के आश्रित मान होता है उसे आचार्य ने आठ भागों में बाँटा है।

गोम्मटसार जीवकाण्ड गाथा 285 में कहा गया है कि मान के उदय से अधोगति की प्राप्ति होती है। इस सन्दर्भ में मेरे विचार इस प्रकार है जिससे मान कषाय का अभाव

मानवीय मूल्यों के आधार से होता है।

1. स्व-पर का ज्ञान होने पर हम मान कषाय से बच सकते हैं जैसे हम किराये के घर पर रहते हैं लेकिन कभी अभिमान नहीं करते कि ही यह हमारा घर है।

2. सब जीवों का सामान्य स्वरूप विचार करने पर जीव दूसरे जीव के प्रति अपमान का विचार भी नहीं करता है।

3. स्वभाव विचार करने पर मान नहीं होता परन्तु तत्कालीन वस्तु को देखने पर मान होता है। छोटा बड़ा दिखाई देता हे।

4. पर्याय की क्षणभंगुरता पर विचार करने पर मान उत्पन्न नहीं होता है। जैसेः बारहभावना कहां गये चक्री जिन जीता भरत खण्ड सारा।

5. मानियों के चरित्र का विचार करने पर मान नहीं होता-जैसे : रावण, सिकन्दर।

दूसरी तरह विचार करे तो पाते है कि मानी मान करते हुए भी मानवीयता प्रकट करता है।

1. गरीब-भूखे को अन्न दान देना, ठंड के दिनों में आवास देना आदि मानवीय मूल्य है।

2. मंदिर धर्मशाला, निःशुल्क विद्यालय खुलवाना आदि मानवीय मूल्य।

3. पशुओं के लिए सुरक्षित स्थान देना, पक्षियों के लिए जगह-जगह पानी दाना देना आदि।

माया कषाय- गोम्मटसार जीवकाण्ड गाथा 286 में माया का अर्थ कुटिलता, मायाचार, छपकपट है तथा सर्वार्थसिद्धि अध्याय-6 सूत्र-16 की टीका मे कहा गया है- आत्मनःकुटिलभावो माया निकृतिः माया का दूसरा नाम निकृति या बंचना है माया कषाय भी अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान,प्रत्याख्यान, संज्वलन के भेद से चार प्रकार की है इनकी उपमा आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती गो जीवकाण्ड गाथा-286 में करते है -माया कुटिलता की अपेक्षा बांस की जड़ के समान, मेढ़े के सींग के समान, गोमूत्र के समान, खुरपा के समान। इस प्रकार जीव को क्रमशः नरक, तिर्यंच, मनुष्य तथा देवगति की प्राप्ति होती है।

आचार्य शुभचन्द्र ज्ञानावर्ण के उन्नीसवे सर्ग में कहते हैं कि-

जन्मभूमिरविद्यानाम कीर्तेर्वासमन्दिरम्।
पपपंक महागर्तो निकृति : कीर्तिता बुधैः ॥58॥

अर्गले वापवर्गस्य पदवी श्वभ्रवेश्मनः।
शीलशालवने वह्निर्मायेयमवगम्यताम् ॥59॥

माया को इस प्रकार जानो कि वह अविद्या की जन्मभूमि अपयश का घर, पापरूपी कीचड़ का बड़ा भारी गड्ढा मुक्ति द्वार की अर्गला, नरकरूपी घर का द्वार और शीलरूपी शालवृक्ष के वन को जलाने के लिए अग्नि है।

तत्वार्थ सूत्र अध्याय 6 सूत्र -16 में कहा है कि **-माया तैर्यग्योनस्य माया** तिर्यंचगति का कारण है । इसलिए माया कषाय का अभाव मानवीय मूल्यों के आधार से इस प्रकार है -

1. मायाचारी का घर, परिवार, समाज कोई विश्वास करता । अतः मायाचार त्यागना चाहिए।

2. मायाचारी किसी तथ्य को अधिक समय तक छिपाकर नहीं रख सकता ऐसा विचार कर मायाचार का त्याग करना।

3. मायाचार से किसी तथ्य को छिपाने के लिए झूठ का सहारा लेना पड़ता है और एक

झूठ को छिपाने के लिए सौ झूठ बोलने पडते हैं इतने पर भी वह इसे छिपाने में असमर्थ रहता है।

4. मायाचारी के हृदय में सत्य एवं त्याग धर्म को प्रवेश नहीं होता क्योंकि मायाचार झूठ अथवा छल कपट के बिना नहीं होता है। जैसे - रत्नाकरण्ड श्रावकाचार में कहा है कि जिस तरह टेडे म्यान में सीधी तलवार प्रवेश नहीं कर सकती उसी प्रकार जिनेन्द्र का सरल (सीधा) धर्म मायाचारी के वक्र (हृदय) में प्रवेश नहीं कर सकता है।

5. मायाचार करने से नीच गति एवं स्त्री पर्याय की प्राप्ति होती है । ऐसे शास्त्र वचन भी याद रखना चाहिए।

6. हमें अपने उपदेशों में मायाचार से होने वाली हानियाँ से जनता को अवगत करना चाहिए ताकि लोग मायाचार से मुक्त होकर मानवीय मूल्यों को बड़ा सकें।

7. किसी तथ्य को छिपाकर उपदेश नहीं करना चाहिए क्योंकि उसका भेद खुलने पर मानवीय मूल्यों का हास होता है।

8. निजी स्वार्थ के लिए कपट नहीं करना चाहिये।

9. मायाचार पूर्वक जाति, कुल आदि को नहीं छिपाना चाहिए क्योंकि उससे मानवीय मूल्य खत्म होता है।

लोभ कषाय :- धन आदिकी तीव्र आकांक्षा या गृद्धि लोभ है । यह भी अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण और संज्वलन के भेद से चार प्रकार का है इनकी उपमा क्रमशः किरमजी का दाग, पहिये की कीचड़ काजल हल्दी के रंग से दी गई है इसका प्रभाव उत्तरोत्तर मन्द होता जाता है । इसका फल भी क्रमशः नरक, तिर्यंच, मनुष्य तथा देवगति की प्राप्ति होती हे। (गो. जीवकाण्ड गाथा -287)

आचार्य शुभचन्द्र ज्ञानार्णव के उन्नीसवे सर्ग में कहते है कि-

स्वामिगुरुबन्धुवृद्धानबलावालांश्च,
जीर्णदीनादीन्।
व्यापाद्य विगतशंको, लोभार्तो वित्तमादत्ते ॥70॥

ये केचित्सिद्धान्ते दोषाः श्वभ्रस्य साधकाः।
प्रभवन्ति निर्विचारं तेलोभदेव जन्तूनाम्॥71॥

इस लोभकषाय से पीड़ित हुआ व्यक्ति मालिक, गुरु, बन्धु, वृद्ध स्त्री बालक तथा क्षीण, दुर्बल, अनाथ दीनादि को भी निःशंकाता से मारकर धन को ग्रहण करता है। नरक ले जाने वाले जो-जो दोष सिद्धांत शास्त्रों में कहे गये वे सब लोभ से प्रकट होते हैं।

आचार्य कल्प टोडरमल जी मोक्षमार्ग प्रकाशक पेज 53 पर कहते है कि जब इसके लोभ कषाय उत्पन्न होती है। तब इष्ट पदार्थ के लाभ की इच्छा होने से उसके साधनरूप वचन बोलता है। शरीर की अनेक चेष्टा करता है। बहुत कष्ट सहता है सेवा करता है विदेश गमन करता है। जिसमें मरण होना जाने वह कार्य भी करता है। इस प्रकार लोभी व्यक्ति व्यवहार करता है । इसलिए लोभ कषाय का अभाव मानवीय मूल्यों के आधार से इस प्रकार है -

1. लोभ के कारण व्यक्ति अनेक पापों में प्रवर्तन करता है।

2. लोभी अनेक प्रकार के सावद्य कार्यों में प्रवर्त होता है। जिसमें अनंत जीवों का घात होता है जैसे :- अनावश्यक पेड़ काटना,अग्नि लगाना, पर्यावरण को दूषित करता और पेड़ों को काटकर, पेड़ों से होने वाले लाभों से वंचित करता है।

3. लोभ व्यक्ति अपने लोभ के कारण ऐसे उद्योग, व्यापार, कत्लखाने खोलकर, लाखों-करोड़ों बड़े-बड़े जीवों का घात करके वातावरण को प्रदूषित करता ही हे। साथ ही अनेक जन्मों के पापों का संचय करता है।

4. लोभी अनादि के लोभ के खातिर मारना, चोरी करना, अपने निकटस्थ लोगों को मारने की सुपारी देना आदि असामाजिक कार्यों में प्रवर्त होता है।

5. पैसे का लोभी नावालिंग लड़कियों को कैद रखना, वैश्यावृत्ति करवाना आदि कुसामाजिक कार्यों में प्रवर्त होकर मानवीय मूल्यों को ह्रास करता है।

6. ळोभी धनादि के लोभ वश दूसरों की देखा-देखी धार्मिक कार्यों में भी प्रवृत्त होता है किन्तु उसका परिणाम मलिन होने से उसे लाभ के वजह हानि ही होती है। जैसे :- देखा देखी दान देना, देखा देखी अन्य धार्मिक क्रियाएँ करना।

7. लोभ चाहे किसी चीज का क्यों न हो बुराई ही है। धन, सम्पत्ति, स्त्री, जमीन आदि का लोभ तो बुरा है इसे सारी दुनिया कहती है किन्तु शास्त्र में तो पुण्य के लोभियों की भी निन्दा की है क्योंकि पुण्य का लोभी अन्य भव में अच्छे धन वैभव की प्राप्ति निरोग शरीर, दीर्घ आयु चाहता है। जो जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं, जीवन का अंतिक लक्ष्य तो समस्त प्रकार की कषायों की निवृत्ति का मार्ग मोक्ष है।

अतः लोभ कषाय सर्वथा त्यागने योग्य है जो हमारे मानवीय मूल्यों के अन्तर्गत है। इस संदर्भ में भगवती आराधना के श्लोक-1436 में कहा गया है कि पुण्य रहित मनुष्य को धन मिलता नहीं और लोभ न करने पर भी पुण्यवान के धन की प्राप्ति होती है। आगे भगवती आराधना के सूत्र 1437 व 1438 में कहा कि अनंतबार धन की प्राप्ति हुई है अतः इस धन के बारे में सोचना भी व्यर्थ ही है।

इस लोक और परलोक में कषाय दुःख ही देने वाली है गोम्मटसार जीवकाण्ड गाथा 288 में कहा है कि क्रोध, मान, माया, लोभ के कारण क्रमशः नरक, तिर्यच, मनुष्य देवगति की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार मानवीय मूल्यों के अन्तर्गत, संयम, तप, स्वाध्याय, चिंतन तभी सार्थक है जब हम इन कषायों से मुक्त हो जायेंगे। अतः प्रयोजन के लिए कषाय भाव हुआ है वह प्रयोजन की सिद्धि हो तो मेरा यह दुःख हो और सुख हो ऐसा विचार कर उस प्रयोजन की सिद्धि होने के अर्थ उपया करना ही श्रेष्ठ हैं। इस प्रकार के विचार हमारेअंदर में होने पर ही मानवीय मूल्यों को अपने जीवन में उतार सकगें।

सन्दर्भ ग्रंथ :-

1. गोम्मटसार कर्मकाण्ड- आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती
2. गोम्मटसार जीवकाण्ड- आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती
3. तत्वार्थ सूत्र- आचार्य उमा स्वामी
4. सवार्थसिद्धि- आचार्य पूज्यपाद स्वामी
5. राजवार्तिक- श्री अकलंक भट्टाचार्य
6. रत्नकरण्ड श्रावकाचार- आचार्य समन्तभद्राचार्य
7. ज्ञानार्णव- आचार्य शुभचन्द्र
8. मोक्षमार्ग प्रकाशक- आचार्य कल्प पं. टोडरमल जी
9. भगवती आराधना- आचार्य शिवार्य

आचार्य कुन्दकुन्द की दृष्टि में श्रमण और श्रावक

❊ प्रो. फूलचन्द्र जैन प्रेमी, वाराणसी ❊

आध्यात्मिक विकास की पूर्णता में श्रावकाचार या गृहस्थधर्म पूर्वाद्ध है और श्रमणाचार या मुनिधर्म उत्तरार्द्ध है। क्योंकि श्रमणाचार की नींव श्रावकधर्म पर मजबूत होती है। इस तरह जैनधर्म में आचार की दृष्टि से दो प्रकार का धर्ममार्ग बतलाया है। प्रथम सागर या गृहस्थ धर्म, जिसे श्रावकाचार कहा जाता है। दूसरा श्रमणाचार हैं, जिसमें मुनिदीक्षा पूर्वक श्रमण धर्म स्वीकृत किया जाता है। इसीलिए अहिंसादि व्रतों का सम्पूर्ण रूप में पालन करने वाला महाव्रती, मुनि, यति, अनगार, साधु या श्रमण कहा जाता है तथा इन्हीं अहिसादि व्रतों का लघु, अणु या एकदेश रूप में पालन करने वाला अणुव्रती श्रावक (व्रती गृहस्थ) उपासक या सागर कहलाता है।

आचार्य कुन्द कुन्द ने दो प्रकार के आचार का प्रतिपादन करते हुए कहा है -

दुविहं संजमचरणं सायारं तह हवे णिरायारं।
सायारं सग्गंथे परिग्गहरहियं णिरायारं॥

अर्थात् चारित्राचार के दो भेद हैं सागार और निरागार। सागर चारित्राचार परिग्रह-सहित गृहस्थ के होता है और निरागार अर्थात् अनगार चारित्राचार परिग्रह रहित मुनि के होता है।

श्रमण एवं उसका आचार:- प्राचीन जैन साहित्य में श्रमण के लिए अनेक नाम प्रयुक्त हुए हैं। जैसे- समण, संयत, ऋषि, मुनि,साधु, वीतराग, अनगार, भदन्त, दान्त, यति 2. क्षान्त, भिक्षु, निर्ग्रन्थ, विरत, माहण, ज्ञानी, कृती, चरण-करण पारविद् गुप्त, मुक्त, विद्वान, तीरार्थी 3 आदि। ये सभी शब्द पर्यायवाची होते हुए भी श्रमण की विभिन्न विशेषताओं और उसकी आचार संहिता के विविध पक्षों को अभिव्यक्त करते हैं। इन सभी नामों का ऐतिहासिक विकासक्रम में अध्ययन किया जाए तो श्रमण और निर्ग्रन्थ शब्द अधिक प्राचीन प्रतीत होते हैं। वैदिक-साहित्य के कई ग्रन्थों में भी ये शब्द जैन साधुओं के लिए प्रयुक्त हुए हैं। आचार्य कुन्द कुन्द ने श्रमण की परिभाषा देते हुए कहा है -

समसत्तुबंधुवग्गो समसुहदुक्खो पसंसणिंदसमो।
समलोट्ठकंचणो पुण जीविदस्मरणे समो समणो॥

अर्थात जो शत्रु और बन्धु वर्ग में, सुख और दुःख में, प्रशंसा और निन्दा में, लोष्ट ओर कंचन में तथा जीवन और मरण में सम-भाव है, वह श्रमण कहा जाता है। इस प्रकार श्रमण सभी प्राणियों आदि के प्रति समताभाव रखने वाले तथा आत्मचिन्तन करने वाले होते हैं। आचार्य कुन्दकुन्द ने तो श्रमणों का आगमचक्षु के रूप में प्रतिष्ठित करते हुए कहा है- **आगमचक्खू साहू इंदीयचक्खूणि सव्वभूदाणि** - अर्थात मुनि आगम रूपी नेत्रों के धारक हैं, संसार के समस्त प्राणी इन्द्रियरूपी चक्षुओं से सहित हैं। ज्ञान और ज्ञेय के परस्पर संवलन (मिलन) से भिन्न करना अशक्य होने पर भी उस आगम चक्षु द्वारा स्व-पर का विभाग कर, महामोह रूपी नेत्रों के धारक हैं, संसार के समस्त प्राणी इन्द्रियरूपी चक्षुओं से सहित हैं। ज्ञान और ज्ञेय के परस्पर संवलन (मिलन) से भिन्न करना अशक्य होने पर भी उस आगम

चद्धु द्वार स्व-पर का विभाग कर महामोह का भेदन करते हुए, परमात्मा को प्राप्त कर वे हमेशा ज्ञाननिष्ठ ही रहते हैं। आगे आगम को श्रमण की एकाग्रता का मूल साधन बताते हुए कहते हैं।

एयग्गगदो समणो एयग्गं णिच्छिदस्स अत्थेसु।
णिच्छित्ती आगमदो आगमचेट्ठा तदो जेट्ठा।।

श्रमण वही है जो एकाग्रता को प्राप्त है, एकाग्रता उसी के होती है जो जीवाजीवादी पदार्थों के विषय में निश्चित है अर्थात संशय-वीर्ययादि रहित सम्यग्दर्शन का धारक है और पदार्थों का निश्चय आगम से होता है इसलिए आगम के विषय में चेष्टा करना-आगम का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उद्योग करना श्रेष्ठ है।

श्रमण के भेदः- श्रामण्य अर्थात श्रमणधर्म, कषायों का उपशमन, राग-द्वेष की निवृत्ति तथा शान्ति और समतारूप है। इसे प्राप्त करने उद्देश्य से श्रमण जीवन में चारित्र को सर्वोपरि माना गया है। आचार्य कुन्द कुन्द ने कहा है वास्तव में चारित्र ही धर्म है, जो धर्म है वह साम्य है और ऐसा मोहक्षोभरहित आत्मा का परिणाम है।

मुनि (श्रमण) दीक्षा ग्रहण की पूर्व तैयारी- मुनि दीक्षा असाधारण मार्ग है। इसकी पूर्व तैयारी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आचार्य कुन्दकुन्द ने प्रवचनसार के चारित्राधिकार में इसका बहुत ही सजीव चित्रण किया है। वस्तुतः जब सुयोग्य साधक अपने को मुनिदीक्षा के योग्य बना लेता है तब दीक्षा ग्रहण के पूर्व वह सभी आत्मीयजनों से किस प्रकार आज्ञा आदि प्राप्त करता है, इसका चित्रण इस प्रकार है-

आपिच्छ बंधुवग्गं विमोइदो गुरु-कलत्त-पुत्तेहिं।
आसिज्ज णाण-दंसण-चरित-तव वीरियायारं।।
समणंगणिंगुणड्ढंकुलरूववयोविसिट्ठमिट्ठदरं।
समणेहि तं पि पणदो पडिच्छ में चेदि अणुगहिदो।।
णाहं होमि परेसिं ण मे परे णत्थि मज्झमिह किंचि।
इदि णिच्छिदो जिदिंदो जादो जधजादरूवधरो।।

अर्थात् मुनि दीक्षा लेने का इच्छुक सर्वप्रथम अपने परिवार के बंधुवर्ग से पूछता और विदा माँगता है ।तब अपने परिवार के दादा, दादी, माता-पिता आदि सभी बड़ों से आज्ञापूर्वक पुत्र तथा पत्नी से विमुक्त होकर ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार-इन पांच आचारों को अंगीकार करके उस गणी (दीक्षा प्रदाता आचार्य) के पास दीक्षार्थी पहुँचता है। जो श्रमण हो, श्रामण्य का आचार करने एवं कराने में गुणाढ्य अर्थात् अनेक गुणों से युक्त हो, कुल, रूप एवं अवसथा में विशिष्ट हो तथा अन्य सभी श्रमण जिसे अत्यन्त चाहते हो -ङन विशेषताओ से युक्त दीख प्रदाता गणी आचार्य को प्रणत होता हुआ वह कहे प्रभो ! मुझे अंगीकार कीजिए।

यह कहकर वह उन गणी के द्वारा अनुग्रहीत हो अपनी भावना इस प्रकार प्रकट करे कि -मैं दूसरों का नहीं हूँ, दूसरे मेरे नहीं है। इस लोक में भी मेरा कुछ नहीं है- ऐसा निश्चयवान और जितेन्द्रिय होता हुआ सद्योजात बालक के समान आचार्य द्वारा विधिपूर्वक मुनि दीक्षा लेकर यथाजात दिगम्बर वेष धारण करता है। ऐसा मुनि सभी

प्रकार के परिग्रहों से मुक्त अपरिग्रही बनकर, स्नेह से रहित, शरीर संस्कार जिनेन्द्र भगवान द्वारा प्ररूपित धर्म को अपने साथ लेकर चलता है।

आचार्य कुन्दकुन्द ने बोधपाहुड़ में कहा है कि जो निवास स्थान (घर) और परिग्रह के मोह से रहित है, बाईस परिषहों को जीतने वाली है, कषाय से रहित है तथा पाप के आरम्भ से अथवा पापपूर्ण खेती आदि के आरम्भ से मुक्त है ऐसी दीक्षा कही गई है। जो शत्रु और मित्र में सम है, प्रशंसा, निन्दा, अलाभ और लाभ में सम है तथा तृण ओर सुवर्ण में समभाव रखती है, ऐसी दीक्षा कही गयी है। जो उत्तम मध्यम घरों एवं निर्धन ओर धनवान के विषय में निरपेक्ष है तथा जिसमें समस्त योग्य घरों में आहार ग्रहण किया जाता है -ऐसी दीक्षा कही गई है।

श्रमण के मूलगुण- दीक्षा ग्रहण के साथ ही श्रमणाचार का प्रारम्भ अट्ठाईस मूलगुणों से होता है। आध्यात्मिक विकास के द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के लिए व्यक्ति अपनी आचार संहिता के अन्तर्गत जिन गुणों को धारण करके जीवन पर्यन्त पूर्ण निष्ठा से इनके पालन करने का संकल्प ग्रहण करता है, उन गुणों को मूलगुण कहा जाता है। वृक्ष की मूल (जड़ या बीज) की तरह ये गुण श्रमणाचार के लिए मूलाधार हैं । इसीलिए श्रमणों के प्रमुख या प्रधान- आचरण होने से इनकी मूलगुण संज्ञा है। आचार्य कुन्दकुनद ने इन मूलगुणों का विवेचन प्रवचन सार में इस प्रकार किया है - व्रत, समिति, इन्द्रियनिरोध, लोच, आवश्यक, अचेलकत्व, आस्नान, भूमिशयन, अदंत-धावन, स्थिति भोजन, और एक भक्त -ये मूलगुण जिनवरों ने कहे हैं। इनमें जो प्रमाद करता है, वह श्रमण छेदोपस्थापक होता है। 10 मूलगुणों का विस्तृत विवेचन मूलाचार के प्रथम मूलगुणाधिकार में भी विशेष मिलता है।

अट्ठाईस मूलगुणः

1. पंच महाव्रत -हिंसाविरति (अहिंसा), सत्य, अदत्तपरिवर्जन (अचौर्य) ब्रह्मचर्य और संगविमुक्ति (अपरिग्रह)।

2. पांच समिति- ईया, भाषा, एषणा, निक्षेपादन और प्रतिष्ठापनिका।

3. पांच इन्द्रियनिग्रह- चक्षु, क्षोत्र, घ्राण, जिह्वा ओर स्पर्श इन्द्रिय का निग्रह।

4. छह आवश्यक- कुन्दकुन्दाचार्य ने नियमसार में कहा है जो अनय के वश नहीं है वह अवश, उस अवश का कार्य आवश्यक है। यह कर्मों का विनाशक योग एवं निर्वाण का मार्ग होता है। ये हैं- समता (सामायिक) स्तव, वंदना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और विसर्ग (कायोत्सर्ग)

5. सात अन्य मूलगुण - लोच (केशलोच), आचेलक्य, अस्नान, क्षितिशयन, अदन्तधर्षण, स्थितिभोजन ओर एकभक्त।

उपयुक्त मूलगुण श्रमणधर्म की आधारशिला हैं । दिगम्बर जैन परम्परा में सम्पूर्ण मुनिधर्म इन अट्ठाईस मूलगुणों से सिद्ध होता है। इनमें लेशमात्र की न्यूनता साधक को श्रमणधर्म से च्युत बना देती है, क्योंकि श्रमण के लिए आत्मोत्कर्ष हेतु निरन्तर प्रयत्नशील रहना ही श्रेयस्कर होता है। आचार्य कुन्दकुनद ने कहा भी है -

मरदु व जियदु व जीवो अयदाचारस्स णिच्छिदा हिंसा।
पयदस्स णत्थि बंधो हिंसामेत्तेण समिदीसु।।

अर्थात् जीव मरे या जीये, अयत्नाचारी को हिंसा का दोष अवश्य लगता है। किन्तु जो समितियों में प्रयत्नशील है उसको

बाह्य हिंसा मात्र से कर्मबन्ध नहीं होता। पांच व्रतों के साथ ही पांच समितियाँ चारित्र के क्षेत्र में प्रवृत्तिपरक होती हैं। इन समितियों में प्रवृत्ति से सर्वत्र एवं सर्वदा श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति तथा हिंसा आदि पापों से निवृत्ति होती है। आचार्य कुन्दकुन्द ने चारित्रपाहुड़ में कहा भी है कि -

पंचिंदियंवरणं पंचवया पंचविंस किरियासु।
पंचसमिदि तयगुत्ती संजमचरणं निरायारं।।

अर्थात् मुनियों के संयम चारित्र में पंचेन्द्रियों को वश में करना, पच्चीस क्रिया ओं के रहते हुए पंचमहाव्रत धारण करना, पंचसमितियों का पालन करना और तीन गुप्तियों को धारण करना, मुनियों का संयम चारित्र है। उत्तरगुणः श्रमण के जिन अट्ठाईस मूलगुणों का विवेचन यहाँ किया गया है, इन मूलगुणों बाद पालन करने योग्य उत्तरवर्ती जिन गुणों के पालन का विधान है, वे सब उत्तरगुण में सम्मिलित माने जाते हैं। उत्तरगुणों की संख्या निश्चित नहीं है, अनेकानेक हैं। फिर भी मुख्यतः इनमें बारह तप, बाईस परीषह, बारह भावनायें, दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप और बल- ये पाँच, उत्तम-क्षमा, मार्दव, आर्जन आदि दस धर्म तथा योगादि और भी अनेक वे सभी गुण सम्मिलित हैं।

श्रावक एवं उनका आचार :- वस्तुतः श्रावक भी एक गृहस्थ होता है उसे सांसारिक और पारिवारिक जीवन के संघर्ष में कई प्रकार के कार्य करने पड़ते हैं। त्याग और भोग इन दोनों के समन्वय को दृष्टि में रखकर, श्रावक आध्यात्मिक विकास में अग्रसर होता है, इसीलिए समाज और देश के अभ्युत्थान में श्रावक की सीधी भूमिका प्रमुख होती है, वह समाज की रीढ़ है। श्रावकाचार परम्परया मोक्ष का हेतु है और श्रावकाचार, श्रमण धर्म-मुनिधर्म की आधार शिला है। कुन्दकुन्दाचार्य ने प्रवचनसार में चारित्तं खलु धम्मो द्वारा आचरण की शुद्धता के साथ सददृष्टि ज्ञान को ही धर्म का स्वरूप माना है। श्रावक का विवेकपूर्ण ज्ञान ही शुद्ध आचरण की परिपुष्ट कता है, यही उसका श्रावकाचार है, श्रावकधर्म है।

रयणसारमें प्रतिपादित श्रावकाचार- आचार्य कुन्दकुन्द के रयणसार ग्रन्थ में भी श्रावकाचार का निरूपण है। 72 गाथाओं में श्रावकधर्म पर चिन्तत किया है। इसके कुछ उदाहरण प्रस्तु है।

भय विसणमलविवज्जिय संसारशरीर भोगणिव्विण्णो।
अट्टगुणंगसमग्गो दंसणसुद्धो हु पंचगुरुभक्तो।।

अर्थात् सम्यग्दर्शन से शुद्ध होने पर व्यक्ति पर सात प्रकार के भय (इहलोक, परलोक, व्याधि, मरण, असंयम, अरक्षण और आकस्मिक,) सात प्रकार के व्यसन और पच्चीस प्रकार के दोषों से रहित हो जाता है। तथा संसार शरीर और भोगों में उसकी आसक्ति नहीं रह जाती है। वह सम्यग्दर्शन के निःशंकितादि अष्टगुणों से युक्त तथा पंचपरमेष्ठी गुरु का भक्त होता है।

मयमूढमणायदणं संकाइवसण भयमईयारं।
जेसिं चउदालेदे ण संति होंति सद्दिट्ठि।।

अर्थात् जिनके आठ प्रकार के मद (अहंकार), तीन मूढ़ताएँ (लोकरूढ़ियाँ), छह अनायतन (कुसंसर्ग), शंकादिक आठ दोष, सात व्यसन (कुटेव) सात तरह के भय और नियम-व्रत आदि के उल्लंघनस्वरूप पाँच प्रकार के अतिचार मिलाकर चवालीस दूषण नहीं होते हैं, वे सम्यग्दृष्टि होते हैं। आगे गाथाओं में कहा है।

देवगुरु समयभत्ता संसार सरीरभोगपरिचित्ता।
रयणत्तयसंजुत्ता ते मणुया सिवसुहं पत्ता।।

जो मनुष्य देव, गुरु और शास्त्र के भक्त हैं तथा संसार, शरीर और भोग में अनासक्त हैं, वे रत्नत्रय (सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र) से युक्त होकर (भेद और अभेद रत्नत्रय की संविति से संयुक्त हो) मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं।

दाणं पूया सीलं उववासं बहुविहं पि खवणं पि।
सम्मजुदं मोक्खसुहं सम्मविणा दीहसंसारं।।

सम्यग्दर्शन से युक्त मनुष्य के लिए दान-पूजा, शील उपवास तथा अनेक प्रकार के व्रत कर्मक्षय के कारण तथा मोक्ष सुख के हेतु हैं। सम्यग्दर्शन (विवेक की जाग्रति) के बिना ये ही दीर्घ संसार के कारण होते हैं।

दाणु ण धम्मु ण चागु ण भोगु ण बहिरप्प जो पयंगो सो।
लोहकसायग्गिमुहे पडियो मरियो ण संदेहो।।

जो गृहस्थ दान नहीं देता है धर्म तथा त्याग नहीं करता है और न्यायपूर्वक भोग नहीं भोगता है, वह भौतिक पदार्थों को आत्मा समझने वाला बहिरात्मज्ञ पतंगे के समान है, जो लोभवश अग्नि (रूप, चमक-दमक) के मुंह में पड़कर मर जाता है, इसमें सन्देह नहीं है। रयणसार में आगे की गाथाओं में कहा है।

जिणपूया मुणिदाणं करेइ जो देह सत्तिरूवेण।
सम्मइट्ठी सावय धम्मी सो होइ मोक्खमग्गरओ।।

जो शक्ति के अनुसार जिनदेव की पूजा करता है मुनियों का दान देता है, वह मोक्षमार्ग में रत धर्मात्मा सम्यग्दृष्टि श्रावक होता है।

इह णियसुवित्तवीयं जो ववइ जिणुत्तसत्तखेत्तेसु।
सो तिहुवणरज्जफलं भुंजदि कल्लाणपंचफलं।।

इस संसार में जो भव्यजीव न्यायपूर्वक अर्जित अपने श्रेष्ठ धनरूप बीज को जिनदेव के द्वारा कहे गए सात क्षेत्रों (जिन पूजा, मन्दिर आदि की प्रतिष्ठा, तीर्थयात्रा मुनि आदि पात्रों को दान देना, सहधर्मियों को दान देना, भूखे प्यासे तथा दुःखी जीवों को दान देना, अपने कुल व परिवार वालों को सर्वस्व दान करना) में बोता है, वह तीनों लोकों के राज्य के फल सुख को प्राप्त करता है।

सीदुण्हवाउपउिलं सिलेसिमं तह परीसमव्वाहिं।
कायकिलेसुव्वासं जाणिज्जे दिण्णए दाणं।।

गृहस्थ को मुनि की बात, पित्त, कफ प्रकृति तथा शान्त भाव से सहन करने वाले उनके दुःख रोग देह-पीड़ा और उपवास (आदि) को समझकर दान देना चाहिए।

पत्त विणा दाणं य सुपुत्त विणा बहुधणं महाखेत्तं।
चित्त विणा वय गुण चारित्तं णिक्करणं जाणे।।

जिस प्रकार सुपुत्र के बिना बहुत धन और बड़े-बड़े खेतों का होना व्यर्थ है, उसी प्रकार अच्छे पात्र के बिना दान देना भी निरर्थक है। इसी प्रकार भावों के बिना व्रत, गुण और चारित्र का पालन भी निष्फल है।

ग्यारह प्रतिमाएं- आचार्य कुन्दकुन्द ने श्रावक को अष्टमूलगुण धारण करने पड़ते है साथ ही सप्तव्यसनों का त्याग आवाश्यक होता है। तभी सम्यक् दर्शन की सम्यक् रक्षा हो पाती है। आचार्य कुन्दकुन्द ने ग्यारह प्रतिमाओं का निर्देश करते हुए लिखा है

दंसण वय सामाइय पोसह सचित्त

रायभत्तेय।

बंभारंभ परिग्गह अणुमण उद्दि देसिविरदो य।।

अर्थात् 1. दर्शन, 2. व्रत, 3. सामायिक, 4. प्रोषध, 5. सचित्त त्याग, 6. रात्रिभुक्तित्याग, 7. ब्रह्मचर्य, 8. आरम्भ त्याग, 9. परिग्रहत्याग, 10. अनुमति त्याग, 11. उद्दिष्टत्याग- से सब देशविरत अथवा सागर चारित्र हैं। इन्हीं को श्रावक ही ग्यारह प्रतिमाएँ कहते हैं । सामान्य रूप से प्रथम दर्शन प्रतिमाचारी श्रावक को आठ मूलगुण धारण करने पड़ते हैं, सात व्यसन का त्याग करना पड़ता हैं और सम्यग्दर्शन की भली प्रकार रक्षा करना होती है।

आचार्य कुन्द कुन्द ने चारित्रपाहुड ग्रन्थ में बहुत ही संक्षेप में मात्र छः गाथाओं में श्रावकाचार का प्रतिपादन किया है। पहले सागारसंयमाचरणं गृहस्थों में होता है। उसके पश्चात् ग्यारह प्रतिमाओ के नाम बताये हैं । उसके पश्चात सागारसंयमाचरण को पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत के नाम निर्देश हैं । आचार्य कुन्दकुन्द ने सल्लेखना को चतुर्थ शिक्षाव्रत माना है। पर उन्होंने देशावकाशिक व्रत को न गुणव्रतों में स्थान दिया है और न शिक्षाव्रतों में ,उनके अभिमतानुसार दिक्परिमाण, अनर्थदण्डवर्जन और भोगोपभोगपरिमण - ये तीन गुणव्रत हैं, सामायिक प्रौषण अतिथिपूजा और संल्लेखना ये चार शिक्षाव्रत हैं।

चारित्रपाहुड में वे कहते हैं

पंचेवणुव्वयाइं गुणव्वयाइं हवंति तह तिण्णि।

सिक्खावय चत्तारि यसंजमचरणंय सायारं॥

अर्थात पांच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत ये बारहव्रत गृहस्थ के संयमाचरण हैं ।

थूले तसकायवहे थूले मोसे अदत्तथूले य।

परिहारो परमहिला परिग्गहारंभपरिमाणं।।

अर्थात् स्थूल त्रसवध, स्थूल असत्य कथन, स्थूल चोरी और परस्त्री का परिहार तथा परिग्रह और आरम्भ का परिमाण ये पाँच अणुव्रत हैं।

दिसिविदिसिमाण पढमं अणत्थदंडस्स वज्जणं विदियं

भोगोपभोगपरिमा इयमेव गुणव्वया तिण्णि।।

अर्थात दिशाओं और विदिशाओं का प्रमाण करना पहला गुणव्रत है। अनर्थदण्ड का त्याग करना दूसरा गुणव्रत है और भाग तथा उपभोग का परिणाम करना तीसरा गुणव्रत है। इस प्रकार ये तीन गुणव्रत हैं।

समाइयं च पढमं विदियं च तहेव पोसहं भणियं।

तइयं अतिहिपुज्जं चउत्थ सल्लेहण अंते।।

अर्थात् सामायिक प्रोषध, तीसरा अतिथि-पूजा और मरणकाल में सल्लेखना धारण करना-ये चार शिक्षाव्रत हैं।

प्रमुख आचार्यों द्वारा प्रतिपादित बारह व्रतों का तुलनात्मक स्वरूप :- श्रावकाचार विषयक शास्त्रों के कर्त्ता विभिन्न आचार्यों गुणव्रत और शिक्षाव्रत के नामों में अलग-अलग मत प्राप्त होते हैं । सर्वप्रथम कुन्द कुन्दाचार्य ने दिग्व्रत, अनर्थदण्डव्रत और भोगोपभोग परिमाण इन तीनों को गुणव्रत माना है । इसी मत का उल्लेख आचार्य समन्तभद्र ने किया है परन्तु तत्त्वार्थसूत्रकार आचार्य उमास्वामी ने दिग्व्रत, देशव्रत और अनर्थदण्डव्रत को गुणव्रत माना है। प्रायः यही मान्यता उत्तरवर्ती आचार्यों ने स्वीकृत की है।

आचार्य कुन्दकुन्द के मतानुसार चार शिक्षाव्रतों के नाम इस प्रकार हैं - सामायिक-प्रोषधोपवास, अतिथि-संविभाग और सल्लेखना। आ. समन्तभद्र ने देशावकाशिक, सामायिक, प्रोषाधेवपास भोगोपवास परिमाण और अतिथि-संविभाग को शिक्षाव्रत कहा हैं। आ.कुन्दकुन्द ने देशव्रत का उल्लेख गुणव्रतों में किया है और सल्लेखना को शिक्षाव्रत मानने सम्बंधी आचार्य कुन्द कुन्द की मान्यता अन्य आचार्यों को मान्य नहीं हुई क्योंकि सल्लेखना मरणकाल में ही धारण की जाती है और शिक्षाव्रत सदा धारण किये जाते हैं। इस दृष्टि से अन्य आचार्यों ने सल्लेखना को बारह व्रतों के अतिरिक्त माना है। इस के स्थान पर आचार्य उमास्वामी ने अतिथिसंविभाग को और आचार्य समन्तभद्र ने वैय्यावृत को शिक्षाव्रत स्वीकार किया है। वैसे वैय्यावृत्त शब्द भी अतिथिसंविभाग का ही विस्तार है।

श्रावक के अन्याय कर्त्तव्य :- श्रावक के पूर्वोक्त बारह व्रतों के अतिरिक्त अन्य अतिआवश्यक कर्त्तव्य भी हैं जिनके द्वारा जैन धर्म दर्शन, साहित्य, कला, संस्कृति, समाज, परिवार एवं धर्मायतनों की मात्र रक्षा के ही कर्तव्य नहीं अपितु इनके पोषण और विकास के उत्तरदायित्व की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। श्रमणसंघ की पूरी तरह निर्विघ्न संयम साधना का प्रमुख दायित्व भी श्रावक पर निर्भर रहता है।

परवर्ती साहित्य में श्रावक के प्रमुख छह कर्त्तव्यों का उल्लेख मिलता है। यथा-

देवपूता गुररूपास्ति स्वाध्यायसंयमस्तपः।

दानं चेति गृहस्थानां षट् कमार्णि दिने दिने।।

अर्थात् देवपूजा, गुरूपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान- ये श्रावक के प्रतिदिन किये जाने योग्य छह कर्त्तव्य हैं । श्रावकाचार विषयक शास्त्रों में इनका काफी विवेचन उपलब्ध होता है । किन्तु आचार्य कुन्द कुन्द ने भी अपने साहित्य में स्फुट रूप में श्रावक के इन कर्त्तव्यों का प्रसंगानुसार विवेचन किया हैं।

भावपाहुड़ में कहा है कि पूजा आदि शुभ क्रियाओं में व्रत सहित जो प्रवृत्ति है वह पुण्य है तथा मोह और क्षोभ से रहित आत्मा को जो भाव है वह धर्म। इसलिए जो भव्य जीव उत्कृष्ट भक्ति तथा अनुराग से भी जिनेन्द्र देव के चरण कमलों को नमस्कार करते हैं वे उत्कृष्ट भाव रूपी शस्त्र के द्वारा जन्मरूपी बेल की जड़ को उखाड़ देते हैं। इसी तरह नियमसार में कहा है कि जो श्रावक अथवा मुनि सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र में भक्ति करता है, उसे निर्वाणभक्ति मुक्ति की प्राप्ति होती है । शीलपाहुड़ में तो अरहंत परमेष्ठी के प्रति शुभ भक्ति को होना सम्यक्त्व बतलाया है । यह सम्यक्तव तत्त्वाथ श्रद्धान से अत्यंत शुद्ध है और विषयों से विरक्ति को शील कहा है। इन दोनों की ही ज्ञान बतलाया है। इसी तरह स्वाध्याय, संयम, तप आदि कर्तव्यों का भी निर्देश किया है।

इस प्रकार सम्पूर्ण श्रावकाचार के अध्ययन से स्पष्ट है कि जैनधर्म का आचारपक्ष आत्मानुलक्ष्यी है। **अप्पा सो परमप्पा** अर्थात् इस प्रकार आत्मा ही परमात्मा है- इस अवधारणा के आधार पर यहाँ परमात्मपद की प्राप्ति हेतु प्रत्येक मनुष्य को स्वयं अपना पुरुषार्थ करना होता है, किसी दूसरे के या ईश्वर अथवा अन्यान्य देवी-देवताओं के भरोसे नहीं रहना होता है । इसकी प्राप्ति स्वयं रत्नत्रयात्मक मार्ग पर चल कर ही सम्भव है।

कविता

पावन नाम तुम्हारा

❊ डॉ. शिवसेन जैन संघर्ष (शहडोल)❊

पूज्य आचार्य श्री 108 श्री विद्यासागर जी महाराज के संयम स्वर्ण जयंती के वर्ष में विशेष

पावनता में बढ़ चढकर है, पावन नाम तुम्हारा।
स्वीकारो निर्मल भावों का, सादर नमन् हमारा।।

जीवन के सच्चे अर्थों से, तुमने प्रीति लगाई।
गुरु के चरणों में जा करके, आतम ज्योत जलाई।।

जिनवाणी के शब्द शब्द को, जीवन में स्वीकारा।
स्वीकारो निर्मल भावों का, सादर नमन् हमारा।।

आभा खोती जिन संस्कृति को, जीवन नूतन देकर।
हम सब के सौभाग्य जगाये, संयम व्रत को लेकर।।

तेरे त्याग तपस्या बल से, दूर हुआ अंधियारा।
स्वीकारो निर्मल भावों का, सादर नमन् हमारा।।

कुंद कुंद कि परम्परा को, तुमने नमन् दिलाया।
जिनवाणी के यश वैभव को , जग भर में फैलाया।।

अपने शील प्रेम करूणा से, बने नयन का तारा।
स्वीकारो निर्मल भावों को, सादर नमन् हमारा।।

बहती हुई हवाये तेरी, खुशबू लेकर आती।
पुष्प लगाये इस धरती की, तेरे गीत सुनाती।।

मेरे रोम में जागे, गुरु वैराग्य तुम्हारा।
स्वीकारो निर्मल भावों का, सादर नमन् हमारा।।

नई-नई प्रतिभाओं ने में जो, तुमसे जीवन पाया।
उसका स्वर्णिम अंक्षर अक्षर, इतिहासों में आया।।

धरती से अम्बर तब तेरा, गूँज रहा जयकारा।
स्वीकारो निर्मल भावों का , सादर नमन् हमारा।।

धर्म काव्य विज्ञान सभी को, देकर नई दिशाये।
बदला हे इतिहास समय का, बोकर के आशायें।।

धन्य हुआ किसना का जीवन ? पा स्पर्श तुम्हारा।
स्वीकारो निर्मल भावों का, सादर नमन् हमारा।।

चल पाये हम तेरे पथ पर,ऐसी शक्ति देना।
मेरे मन के अंधियारे को, है गुरुवर हर लेना।।

भटकी शिव की जीवन नैया, देना उसे सहारा।
स्वीकारो निर्मल भावों का, सादर नमन् हमारा।।

हमारे गौरव

चालुक्य सम्राट पुलकेशन

चालुक्य सम्राट पुलकेशन द्वितीय सत्याश्रय पृथ्वीवल्लय (608-642ई.) वंश का सर्वमहान नरेश था। प्रायः पूरे दक्षिण भारत पर उसका अधिकार था और कन्नोज के सम्राट हर्षवर्द्धन का वह सबसे प्रबल प्रतिद्वन्दी था। हर्ष को पराजित करके ही उसे परमेश्वर उपाधि धारण की थी। ईरान के शाह खुसरो के साथ उसके राजनीतिक आदान प्रदान हुये थे। वह सर्वधर्म -समदर्शी था और जैन नहीं था। तथापि जैन धर्म का प्रबल पोषक था। सन् 634 ई. में अपनी दिग्विजय के उपरान्त जब नरेश ने राजधानी वातावी में प्रवेश किया तो उसके विशाल साम्राज्य की सीमा रेखा नदी को स्पर्श करती थी दक्षिण में समुद्र से समुद्र पर्यन्त उसका विस्तार था। समुद्र में स्थित अनेक द्वीपों का भी वही स्वामी था।पश्चिम में गुजरात और पूर्व में आन्ध्र प्रदेश को उसने अपने साम्राज्य में मिला लिया था। उस अवसर पर राजधानी में प्रवेश करने के उपरान्त सम्राट का सर्वप्रथम कार्य अपने गुरु जैन पण्डित रविकीर्ति को उनके द्वारा ऐहोल को मेगुती पहाड़ी पर निर्मापित जिनमन्दिर एवं अधिष्ठान के लिए उदार दान देकर सम्मानित करना था। इस समय सम्भवतया वहाँ किसी नवीन जिनालय का भी निर्माण एवं प्रतिष्ठा हुयी थी। रविकीर्ति भारी विद्वान एवं महाकवि थे उनकी काव्य-प्रतिमा की तुलना कालिदास और मारवि के साथ की जाती थी। इस दान के उपलक्ष्य में स्वयं रविकीर्ति ने सम्राट पुलकेशी की विस्तृत भाव एवं कलापूर्ण संस्कृत प्रशस्ति रची थी जो उक्त मन्दिर की दीवार पर उत्कीर्ण है और उस नरेश के चरित्र एवं कार्य कलापों के लिए सर्वप्रथम ऐतिहासिक आधार है। इसी वर्ष अदूर (धारवाड़) में नगर सेठ द्वारा निर्मापित जैन मन्दिर को भी सम्राट ने दान दिया था। इसी काल में अजन्ता और बादामी की बौद्ध एवं जैन गुफाओं के संसार-प्रसिद्ध भित्ति चित्रों का निर्माण हुआ था। चीनी-यात्री ह्वेनसांग के आँखो देखे विवरण से भी पुलकेशी की शक्ति, महत्ता , राज्यवैभव, प्रजा की सुख समृद्धि तथा विद्या एवं कला की साधना आदि पर अच्छा प्रकाश पड़ता हैं और यह भी स्पष्ट हो जाता है कि चालुक्य साम्राज्य में बौद्धों की अपेक्षा जैनों के मन्दिरों साधुओं ओर गृहस्थ अनुयायीयों की संख्या कही अधिक थी। पुलकेशी के अन्तिम वर्षों में नरसिंह वर्मन पल्लव के साथ उसके भीषण युद्ध हुये। अन्ततः एक युद्ध में ही पुलकेशी स्वयं वीरगति को प्राप्त हुआ।अपने छोटे भाई कुब्ज विष्णु वर्धन को उसने आन्ध्र प्रदेश का शासक नियुक्त कर दिया था जिससे वेंगी के पूर्वी चालुक्यों का वंश प्रारम्भ हुआ सम्भवतः पुलकेशी द्वितीय के शास्त्र काल सुप्रसिद्ध दार्शनिक जैनाचार्य भट्टा कलंक देव का जन्म हुआ।

हास्य तरंग

1. पत्नी गुस्से में पति पर बरसी- में पूछती हूँ कि ऐसा चोर नौकर क्यों रखा है ? पति- क्यों क्या बात हुई ? पत्नि बोली जो सोने की अंगुठी मैं शादी में चुराकर लाई थी, वह इसने गायब कर दी है।

2. कृष्णा के चिल्ला-चिल्ला कर बोलने पर उसकी मॉ ने डाटकर कहा- तुम शोर क्यों मचाती है। देखो तुम्हारा दोस्त भावित भी तुम्हारे साथ खेल रहा है, पर उसकी आवाज तक नहीं आ रही है। कृष्णा ने कहा माँ हम घर-घर का खेल रहे हैं जिसमे भावित पापा बना है।

3. डॉक्टर साहब- मेरी श्रवण शक्ति इतनी कमजोर पड़ गई हैं कि मुझे खुद की खांसनी की आवाज सुनाई नहीं देती।
मरीज बोला-डॉक्टर ने उसे एक गोलियाँ की शीशी दी और बोले-दो गोलियाँ सुबह शाम खाना है। मरीज आश्चर्य से तो मुझे सुनाई देने लगेगा। डॉक्टर गम्भीर स्वर में बोले नही पर इससे तुम्हारी खांसी की आवाज तेज हो जाने से जरूर सुनाई देगी।

4. अधिक माह होने पर कथा बांचते पंडित जी महान नारियों के बारे में बता रहे थे। बे बोले पुराने जमाने में सतयुग में ऐसी ऐसी महान नारियाँ हुई है कि जिन्होंने अपनी चतुरता, पराक्रम से युद्ध से राजाओं की जान बचाई है। तभी एक महिला खड़ी होकर बोली यह तो आज के युग में भी होता है। महिलाएँ पत्नियाँ अपने पक्तियों को बड़ी-बड़ी मुसीबतों से कुशलता पूर्वक उबार लेती हैं जो सरपंच से लेकर मुख्यमंत्री बनकर करती है।

जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर) इन्दौर

आयुर्वेद औषधिं कई परेशानियों में रामबाण

आयुर्वेद के अनुसार स्वास्थ्य शरीर, दिमाग, आत्मा और ज्ञान का एकीकरण हैं। यह बात पित्त और कफ ऊर्जाओं के बीच संतुलन बनाये रखता है, जिन्हें आयुर्वेद में दोष कहा जाता है और असंतुलित दोषों से बीमारियाँ शरीर को घेर लेती है। आयुर्वेद में ऐसी कई जड़ी बूटियाँ हैं जिनके प्रयोग से स्वस्थ रहा जा सकता है। साथ ही इनके कोई दुष्प्रभाव नहीं है। आइए जानते है इनके महत्व व उपयोग को

1. **गिलोय-** इम्यून तंत्र, मजबूत होता है, मौसमी बीमारियाँ जैसे स्वाइन फ्लू, चिकनगुनिया, डेंगू, घुटनों के दर्द, सुगर, वजन घटाने में व खुजली में उपयोगी है।

तरीका- इसके तने का 4-5 इंच का टुकड़ा लेकर उसे कूटकर एक गिलास पानी में उबाले। पानी की मात्रा 1/4 भाग बचे ठंडा करके छानकर पियें

2. **ग्वारपाठा-** (एलोवेरा) त्वचा, पेट, बालों की सुरक्षा, सुगर कब्ज में उपयोगी

तरीका- जलने पर जैल की तरह लगायें, जलन कम व होकर फफोलें नहीं पड़ेगे, चेहरे पर लगाने पर मुहां से दूर, चेहरा सुन्दर व साफ रहेगा। ग्वारपाठे के गूदे में नींबू का रस मिलाकर, बालों में लगायें एक घंटा बाद सिर धोले इससे बालों में डेन्ड्रफ नहीं होगा, बाल मजबूत सिल्की रहेगे। चेहरे पर लगाने पर चेहरे की चमक बनती है। कब्ज में इसके रस को पीने से आराम मिलता है। उसके अतिरिक्त अनेकों रोगों में उपयोगी है।

3. **हरश्रृंगार-** गठिया रोगों घुटनों में लाभदायक

तरीका- फूल व पत्तियों का काढ़ा बनाकर पीये एक घंटे तक कुछ भी नहीं खायें।

4. अमरवेल- चर्मरोगों, रक्त विकार और लिवर के रोगों में लाभदायक

तरीका- अमरवेल को पीसकर लेप शरीर पर लगाने चर्म रोगों में लाभ मिलता है।

इसके अतिरिक्त अनेकों जड़ी बूटियों प्रकृति में उपलब्ध हैं जिनका उपयोग अनुभवी व्यक्तियों चिकित्सक की सलाह लेकर जीवन को स्वास्थ्य निरोगी रखने में सहायता मिलती है।

जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर) इन्दौर

बाल कहानी

अनबन

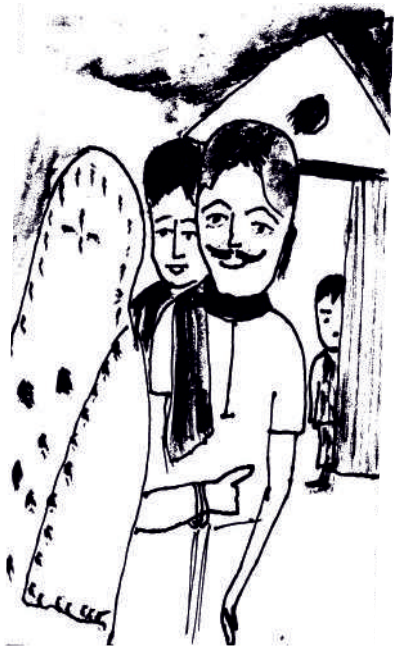

रीवा शह के बाहर दूर ललिता और सविता दो महिलाओं के परिवार वसे थे। ललिता और सविता में गहरी दोस्ती थी। उन दोनों के बीच में इतनी मधुरता थी कि लोग कहा करते थे। कि ज्यादा में कही कीड़े न पड़ जायें। सविता और ललिता दोनों ने शराब बेचना का काम शुरु कर दिया। दोनो एक साथ शराब बेचने का धन्धा किया करती थीं। एक दिन उनके पैसों के बटबारे को लेकर कहा सुनी हो गयी। बात इतनी बढ गयी कि दोनों की मधुरता खटास में बदल गयी। ललिता के अन्दर बदले की भावना भड़क गयी। क्योंकि उस सविता ने मुहल्ले की महिलाओं के सामने उसे बुरे-भला कह दिया था।

ललिता ने अपने बदले की पूरी योजना बना लो। गांव के ही वनदू और देबू विश्वकर्मा को समय समय पर मुफ्त में शराब पिलाने लगी। शराब पीकर मस्त हुये। बन्दू और देबू ललिता को अपनी देवी मानने लगे। ललिता जो कहती थी वे वह कार्य किया करते थे। एक दिन ललिता अपने घुटनों के बीच सिर रखकर बैठी थी। बन्दू और देबू ने कहा आन्टी जी आज आप ऐसे क्यों बैठी हो ? ललिता ने कहा कुछ नहीं। मैं सविता से बदला नहीं ले पा रही हूँ। बन्दू, देबू ने कहा मुझे ये काम सौंपो में सब कर दूंगा। ललिता सविता के बेटे संजय को वहला फूसलाकर घर ले आयी। बन्दू और देबू ने उसे खुरपा से मार डाला। और मारकर अरहर के खेत में फेक दिया। लोगों को गन्ध बदबू आयी तो पुलिस को खबर दी। और पुलिस ने जाँच पडताल कि और पोल खुल गयी। और हत्यारन ललिता पकड़ी गयी। और अन्त में पला चला कि अनवन के कारण संजय प्रेम सौहार्द मित्रता मारी गयी।

संस्कार गीत

सुन्दर फूल खिलाती

लगन शीलता सतत् साधना
सबको सफल बनाती
थके न पग बस बढ़ता जाओ
मंजिल तुम्हें बुलाती

1.
आये हजारों रोज मुसीबत
तो भी तुम मत डरना
मंजिल जब तक मिले नहीं
विश्राम नहीं तुम करना
मंजिल पाने की उत्कंठा
राह के कष्ट भुलाती

2.
नीयत नीति हो साफ तुम्हारी
निश्चित मिले सफलता
अडिग रहे संकल्प सदा ही
दूर रहे कायरता
धीरज धर्म बसे जिस मन में
वहीं सफलता आती

3
ईश्वर उनका बने सहायक,
जिनमें खुद की शक्ति
तुम प्रभु को आदर्श बनाओ
कर लो सच्ची भक्ति
प्रकृति सदा काँटो के भीतर
सुन्दर फूल खिलाती

बाल कविता

करूणा धर्म

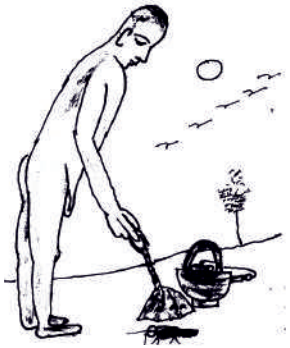

चीटीं जैसा जीव बचाते
दया धर्म का पाठ सिखाते
चार हाथ भू देखके चलते
ईर्या पथ का पालन करते
हित मित है जिनकी वाणी
लगती सबको सदा सुहानी
शोध शोध कर भोजन करते
नहीं देह का पोषण करते
ग्रह त्यागी गुरु निज में रमते
तप वृद्धि में लीन ही रहते
विन देखे नहीं धरें उठाये
सदा जीव पर दया दिखाते
जीव जन्तु से रहित धरा पर
मल मूत्र त्यागे नित लखकर
पाँच समिति का पालन करते
सब जीवों का करूणा रखते

श्रवणबेलगोला में महामस्तकाभिषेक महोत्सव का भव्य शुभारंभ राष्ट्रपति जी ने किया

❊ राजेन्द्र जैन महावीर (खरगोन) ❊

श्रवणबेलगोला । विश्व तीर्थ श्रवणबेलगोला में विगत 1037 वर्षो से जारी बारहवर्षीय महामस्तकाभिषेक महोत्सव का शुभारंभ भारतीय गणराज्य के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने किया। इस शुभ अवसर पर श्रीमति सविता कोविंद, कर्नाटक राज्यपाल श्री वजुभाई वाला, मुख्यमंत्री श्री सिद्धारभैया, पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच.डी. देवगौड़ा, मस्तकाभिषेक प्रभारी एवं कर्नाटक राज्यस्तरीय कमेटी के अधिकारी उपस्थित थे।

राष्ट्रगौरव आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज सहित 34 आचार्य 1 बालाचार्य, 1 एलाचार्य, 4 उपाध्याय, 101 दिगम्बर मुनि, 92 आर्यिका माताजी, ऐलेक क्षुल्लक, क्षुल्लिका माताजी अनेक त्यागी वृन्दों के साथ महामस्तकाभिषेक के नेतृत्वकर्ता **पूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वास्ति श्री चारूकीर्ति जी भट्टारक स्वामी जी,** कर्नाटक गौरव पदम विभूषण धर्माधिकारी डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े धर्मस्थल सहित हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने अपने भाषाण का प्रारंभ कन्नड़ के शब्द **सहोदरा सहोदरियरे तमगे एल्ली येप्पु नन्ना सप्रेम नमस्कारा गडु** से करते हुए कहा कि धर्म और अध्यात्म के साथ सांस्कृतिक चेतना का केन्द्र यह क्षेत्र सदियों से मानवता का सन्देश देता आ रहा हे। शांति, अहिंसा और करूणा के प्रतीक भगवान बाहुबली के दर्शन कर उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई। यह क्षेत्र आज देश-विदेश में आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। भगवान बाहुबली की यह विशाल प्रतिमा भारत की विकसित संस्कृति स्थापत्य कला, वास्तुकला और मूर्तिकला का बेजोड़ उदाहरण है। अहिंसा परमो धर्म का भाव इस प्रतिमा के मुखमण्डल पर पूर्ण रूप में दिखाई देता है। भगवान बाहुबली प्रकृति के साथ पूरी तरह एकाकार थे और जैन मुनियों ने यह परम्परा आज कायम रखी है। उन्होंने जैन दर्शन के आदर्शों को प्रकृति प्रिय बताते हुए कहा कि जैनधर्म के आदर्शों से हमें प्रकृति का संरक्षण करने की सीख मिलती है। शांति, अहिंसा, भाईचारा और नैतिक चारित्र के द्वारा ही विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा।

आचार्य भद्रबाहु व चन्द्रगुप्त की संल्लेखना का उल्लेख किया - राष्ट्रपति श्री कोंविद ने अपने तथ्यपूर्ण व सारगर्भित उदबोधन में श्रवणबेलगोला के प्रत्येक पक्ष का उल्लेख किया । श्रवणबेलगोला की ऐतिहासिकता के सन्दर्भ में उन्होंने कहा कि 2300 वर्ष पूर्व मध्यप्रदेश के उज्जैन से जैन आचार्य भद्रबाहु यहाँ आए थे उनके साथ मौर्य सम्राट चन्द्रगुपत भी अपनी शक्ति के शिखर पर रहते हुए भी सारा राजपाट अपने पुत्र बिंदुसार को सौंपकर यहाँ आ गए थे, और एक मुनि का जीवन अपनाकर तपस्या करते हुए सल्लेखना का मार्ग अपनाया। उन्होंने शांति करूणा पर आधारित परम्परा की नींव यहां डाली, धीरे-धीरे पूरे देश से यहाँ लोग आने लगे। जैन दर्शन की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि जैन परम्परा की धाराएँ पूरे देश को जोड़ती है । श्रवणबेलगोला धर्म, अध्यात्म और भारतीय बाहुबली चाहते तो अपने भाई भरत के स्थान पर राजसुख भोग सकते थे लेकिन उन्होंने अपना सबकुद त्यागकर तपस्या का मार्ग अपनाया और परी मानवता के कल्याण

के लिए हम सबके लिए उनके आदर्श प्रस्तुत किए।

लगभग 12 मिनिट के प्रेरणादायी उद्बोधन में राष्ट्रपति जी ने श्रवणबेलगोला के महामस्तकाभिषेक का साक्षी बनने का सौभाग्य बताया वही विहार के राज्यपाल रहने के दौरान भगवान महावीर की जन्मभूमि वैशाली व निर्वाणभूमि पावापुरी जाने का उल्लेख भी किया। वहीं सम्यकदर्शन-ज्ञान-चारित्र को भी आवश्यक बताते हुए कहा कि श्रवणबेलगोला में मोबाईल अस्पताल नर्सिंग कॉलेज है, प्राकृत विश्वविद्यालय पर कार्य चल रहा है। धर्मपत्नी सविता कोविद के साथ आए राष्ट्रपति अपने निर्धारित समय पर श्रवणबेलगोला आ गए, मंच पर पूज्य भट्टारक स्वामी जी के साथ सपत्नीक सभी आचार्यों, मुनिराजों का आशीर्वाद लिया। पुलिस बैण्ड ने राष्ट्रगान के साथ शुभारम्भ किया। मंच पर पूज्य स्वामी जी के साथ राष्ट्रपति जी ने क्षेत्र क बार में जानकारी प्राप्त की।

सौम्या-सर्वेष जैन ने कन्नड़ में गोम्मटेश स्तुति प्रस्तुत की। स्वागत भाषण कर्नाटक सरकार के मंत्री व महामस्तकाभिषेक राज्य स्तरीय कमेटी के अध्यक्ष श्री ए.मंजू ने दिया।

अहिंसक युद्ध के जन्मदाता हैं बाहुबली स्वामी -आचार्य वर्द्धमान सागर जी- महामस्तकाभिषेक महोत्सव को लगातार तीसरी बार सानिध्य प्रदान करने वाला चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के पट्टाधीश आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज ने इस अवसर पर अपने सारगर्भित प्रेरणादायी उदबोधन में कहा कि भरत-बाहुबली में जब युद्ध की स्थिति बनी तो दोनों मोक्षगामी थे। प्रजा का नुकसान न हो इसलिए दृष्टि-जल-मल्लयुद्ध हुआ, जिसमें बाहुबली विजयी हुए। यह विश्व के लिए आदर्श व दर्शनीय है कि बाहुबली भगवान ने जो कहा कि हिंसा से कभी सुख नहीं हो सकता, संग्रह से कभी शांति नहीं मिल सकती इसलिए अहिंसा-त्याग आवश्यक है मैत्री प्रगति करती है वहीं ध्यान से सिद्धि हो सकती है। भगवान बाहुबली दक्षिण से उत्तर की ओर देख रहे है और विश्व को सन्देश दे रहे हैं। आचार्य श्री के दर्शनार्थ आए राष्ट्रपति को उन्होंने आशीर्वाद स्वरूप चारित्र चक्रवर्ती ग्रंथ भेंट किया।

भगवान बाहुबली की प्रतिमा में चैतन्यता का दर्शन करने आए है

-राज्यपाल श्री वजुभाई वाला

कर्नाटक प्रदेश के राज्यपाल श्री वजुभाई वाला ने कहा कि हम आप सभी यहाँ भगवान बाहुबली की पाषाण प्रतिमा का दर्शन करने नहीं प्रतिमा में सत्य-अहिंसा-अस्तेय-ब्रह्मचर्य व जैन शासन के सिद्धान्तों की चैतन्यता का दर्शन करने आए हैं। चैतन्यता के माध्यम से संस्कारित होकर जाए कि हमारा जीवन भी दर्शनमय बन जाए हम यहाँ से संस्कारों को स्टोरेज कारके जाए व बाहुबली के सन्देश को जन-जन तक पहुचायें। उन्होंने कहा कि देश की संस्कारिता को जागरूक करने के लिए भौतिकवाद को छोड़कर आध्यत्मिकता की ओर ध्यान देना पड़ेगा। राजदण्ड पर धर्म का दण्ड अवश्यक बताते हुए उन्होंने कहा कि गुरु भगवंतो के आशीर्वाद के बिना शासन अच्छा नहीं हो सकता। सभी दानवीर भामाशाह की तरह कुछ न कुछ समाज को समर्पित करें, दान अवश्य करें, सत्य-अहिंसा अपने जीवन में अपनाए। उल्लेखनीय है कि भगवान बाहुबली से प्रभावित राज्यपाल श्री वजूभाई ने उपस्थित जनसमुदाय से बाहुबली स्वामी की तीन बार जय-जयकार कराई व अपने चिंतनपूर्ण उदबोधन से उपस्थित जनों का मन मोह लिया।

महोत्सव का उद्घाटन राष्ट्रपति जी का अधिकार- पूज्य भट्टारक स्वामी जी

लगातार 50 वर्षों से श्री क्षेत्रों श्रवणबेलगोला की प्रगति ने आधार स्तम्भ चौथे महामस्तकाभिषेक में नेतृत्व प्रदान कर रहे पूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी जी ने कहा कि महामस्तकाभिषेक महोत्सव का उद्घाटन करना राष्ट्रपति जी का अधिकार है क्योंकि यह एक धर्म या समाज का नहीं बल्कि पूरे भारतवर्ष का कार्यक्रम है। मातृभक्त चामुण्डराय की माँ काललदेवी के दृढ़ संकल्प से इस विशाल प्रतिमा का निर्माण हुआ है। आज देश की प्रथम महिला राष्ट्रपति जी धर्मपत्नी श्रीमति सविता जी के आने से मातृत्व शक्ति मजबूत हुई है। पूज्य स्वामी जी ने राष्ट्रपति जी को स्मृति प्रतीक के रूप में रजत कलश व विंध्यगिरि पर्वत की प्रतिकृति भेंट की। श्रीमति सरिता जैन, सतीश जैन ने अभिनंदन पत्र भी भेट किया। सभी अतिथियों को स्मृति स्वरूप रजत कलश भेंट किए गये। डिप्टी कमिश्नर रोहिणी सिधूरी स्पेशल ऑफिसर राकेश सिहं, वर्किंग प्रेसिडेंट एस. जितेन्द्र कुमार ने स्वागत किया।

महामस्तकाभिशेक से विश्व शांति की कामना करेंगे -पदमविभूषण डी. वीरेन्द्र हेगडे- गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक महोत्सव कमेटी के परम संरक्षण व धर्मस्थल तीर्थ के धर्माधिकारी राजषि पदमविभूषण श्री वीरेन्द्र हेगड़े ने अपने मार्मिक उदबोधन में कहा कि हम बहुत पुण्यवान है जो हमें भगवान बाहुबली जी ने दर्शन करने को मिले हैं, सम्पूर्ण जैन समाज प्रतिदिन विश्वशांति के लिए प्रार्थना करता है। सम्पूजकानां प्रतिपालकानां को बताते हुए उन्होंने कहा कि पशु-पक्षी सहित प्राणीमात्र के कल्याण की कामना हम सभी करते हैं। महामस्तकाभिषेक के माध्यम से भी हम विश्व शांति की कामना करेगें।

हमारा सौभाग्य है कि हमें यह अवसर मिला है- मुख्यमंत्री सिद्धारभैया

कर्नाटक राज्य के मुख्यमंत्री थी सिद्धारभैया ने अपने व्यक्तव्य में कहा कि भगवान बाहुबली की प्रतिमा की भक्ति बातों से नहीं जीवन में उतारकर की जा सकती है। जीवन में त्याग होना चाहिए। बाहुबली सहित जितने भी महापुरुष दार्शनिक हुए त्याग से ही महान बने है। जाति नहीं त्याग मुख्य है, सर्वधर्म- सहिष्णुता का भाव होना चाहिए। मैं अत्यन्त धन्यता भाव से इस महोत्सवह में भाग ले रहा हूँ। हमारा सौभाग्य है कि हमें यह अवसर प्राप्त हुआ है, सरकार की ओर से हमने सहयोग किया है, सभी अधिकारी समिति के पदाधिकारी अभिनंदनीय है। पूज्य स्वामी जी हमारे लिए प्रेरणादायी है जो हमारा मार्गदर्शन करते हैं। भगवान बाहुबली के मंच से मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का भाव सभी में जागृत हो ऐसी कामना करते हैं।

पाण्डुकशिला पर बाहुबली जी के जिनबिम्ब का पूजन कर हुआ शुभारंभ- पूज्य जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी की अभूतपूर्व कल्पना अनुरूप पाण्डुकषिला पर बाहुबली स्वामी के जिनबिम्ब का अनावरण महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद व अतिथियों ने किया। पूज्य स्वामी जी ने उन्हें पूजन व आरती कराई, श्रद्धा से अभिभूत राष्ट्रपति ने सपत्नीक हाथ जोड़कर भगवान बाहुबली की वंदना की वहीं बाहर सैकड़ों नगाड़ो व बैण्डबाजों की स्वर लहरियों ने उदघाटन को आकाश में गुंजायमान कर दिया वही उपस्थितजनों ने करतल ध्वनि से अपनी अनुमोदना प्रकट ही।

उपरांत विशाल दीपक को प्रज्जवलित कर अतिथियों ने उदघाटन समारोह सम्पन्न किया।

अत्यन्त गरिमायी हुआ उद्घाटन समारोह- श्रवणबेलगोला की परम्परा अनुसार उदघाटन समारोह गरिमामय हुआ । मंच दक्षिण भारत के ऐतिहासिक परिपेक्ष्य को दर्शा रहा था, वहीं उपस्थित साधु संघ व रंग बिरंगी पोषाखों में उपस्थित जनसमुदाय की प्रसन्नता देखते ही बनती थी। मनमोहक मंच सज्जा व सुव्यवस्थित समारोह के लिए पूज्य भट्टारक स्वामी जी नेतृत्व क्षमता व उनका समन्वयकारी व्यक्तित्व की चर्चा हर जगह थी। समारोह में महोत्वस कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता एम.के.जैन कार्याध्यक्ष श्री एस. जितेन्द्र कुमार कमेटी के सर्व श्री सतीश जैन, सुरेश पाटिल, विनोद डोडण्णवर, जयकुमार जैन, प्रमोद जैन, राकेश सेठी, राजेश खन्ना, प्रो. नलिन के. शास्त्री, कलश आवंटन उपसमिति के राजकुमार सेठी, जमनालाल हपावत, अशोक सेठी, हसमुख गांधी प्रचार उपसमिति के स्वराज जैन, पी.वाय. राजेन्द्र कुमार, राजेन्द्र जैन महावीर , अजित जैन, दिनेश कोठिया, पंचकल्याण समिति के कमल ठोलिया, विधायक सी.एन.बालकृष्ण, भोजन समिति के विनोद बाकलीवाल, त्यागी समिति के श्रीपाल गंगवाल, विमुक्त जैन, तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री संतोश पेण्डारी, महासभा अध्यक्ष श्री निर्मल सेठी, शास्त्री परिषद अध्यक्ष डॉ. श्रेयांस जैन, विद्या विकास योजना के विजय जैन जवाहर लाल जैन, नीलम अजमेरा, भागचंद जैन सहित अनेक पदाधिकारी उपस्थित थे। पुलिस बैण्ड के राष्ट्रगान के साथ उदघाटन समारोह का समापन किया गया।

देशभर में उत्साह की लहर, महामस्तकाभिषेक में आने की होड़

2400 वर्ष प्राचीन तीर्थ पर ईस्वी सन् 981 में प्रथम महामस्तकाभिषेक हुआ था, प्रति बारह वर्ष में आयोजित होने वाले इस अन्तराष्ट्रीय आयोजन में 30 लाख लोगों के भाग लेने की सम्भावना है। 9 दिवस होने वाले महामस्तकाभिषेक में लगभग 55 हजार श्रद्धालु जल, दूध, हल्दी, केशर , अष्टागंध आदि से पंचामृत अभिषेक करेगें।

34 आचार्य सहित 350 से अधिक पिच्छीधारियों का सान्निध्य

दिगम्बर जैन जगत के महाकुंभ में सम्मिलित होने देश के प्रमुख आचार्य, मुनिराज, आर्यिका हजारों किलोमीटर का पैदल विहार कर पधारे है । प्रमुख सान्निध्य आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी के साथ आचार्य पुष्पदंतसागर जी, वसुपूज्यसागर जी, पद्मनन्दी जी, देवनन्दी जी, गुप्तिनंदी जी, देवसेन जी, विशुद्धसागर जी , मुनि अमितसागर सहित 34 आचार्य शतधिक मुनि,160 आर्यिका माताजी ऐलक क्षुल्लक महाराज सहित सैकड़ों त्यागीगण सम्मिलित हैं।

श्रद्धालु भेज रहे है भोजन साम्रगी

महामस्तकाभिषेक में पुण्य कमाने हेतु होड़ लगी है, कोई कलश बुक कर रहा है तो कोई खाद्य सामग्री पहुँचा रहा है तो कोई सेवा कर रहा है । सेक्रेटरी जयकुमार जैन ने बताया कि राजस्थान से श्रद्धालुओं ने गेहूँ भिजवाएं है । भोजन समिति के विनोद बाकलीवाल ने बताया कि तेल, घी, शक्कर मसाले आदि खाद्य सामग्री भिजवाकर श्रद्धालु व्यवस्थाओं में सहयोग कर रहे हैं।

श्रद्धा से सराबोर इस महामस्तकाभिषेक महोत्सव के प्रति उत्साह व उमंग श्रवणबेलगोला में महसूस किया जा सकती है कि मौन साधक गोम्मटेश्वर बाहुबली की प्रतिमा हजार वर्ष बाद भी अपने आप को सबके मन में जीवित रखे हुए है।

जैन तीर्थंकर अहिंसा के प्रेरणा स्त्रोत-उपराष्ट्रपति श्री वैंकेय्या नायडू श्रवणबेलगोला में राज्याभिषेक किया वैंकेय्या नायडू ने

❊ प्रो. फूलचन्द्र जैन प्रेमी, वाराणसी ❊

श्रवणबेलगोला। गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक महोत्सव के पंचकल्याणक में चौथे दिवस 10 फरवरी को राज्याभिषेक महोत्सव में भारत के उप-राष्ट्रपति श्री वैंकेय्या नायडू ने कहा कि **जीओ और जीने दो** से बड़ा कोई सन्देश नहीं हो सकता है। राष्ट्रपति महात्मा गांधी ने तीर्थंकरों से प्रेरणा लेकर अहिंसा का मार्ग अपनाया, भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिशेक महोत्सव हमें भगवान बाहुबली एवं तीर्थंकरो के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देगा। गुरुओं का आशीर्वाद लेना हमारी परम्परा रही है। गुरु हमें सदज्ञान व सदबुद्धि देने वाले हैं, पैदल धर्म का प्रबोधन करना मामूली कार्य नहीं है। जैनधर्म के त्रिरत्न सम्यकदर्शन, ज्ञान, आचरण बहुत जरूरी हैं। धार्मिक भावना हमारी पहचान है, पूजा पद्धति अलग-अलग हो सकती है लेकिन देश के लिए जीना हमारी जीवन पद्धति है। जैन समाज के लोग समाज के लिए खर्च करते हैं यह अच्छी बात है। आज पूरा विश्व भारत की ओर देख रहा है।अपनी रोटी बाँटकर खाना भारतीय संस्कृति है, मैं यहा आकर बहुत आनंद महसूस कर रहा हूँ, जीवन में शिक्षा फिर सेवाभाव व समाज में कुद करने का भाव होना मानव सेवा है।

लगभग 25 मिनिट के धाराप्रवाह उदबोधन में श्री नायडू ने कन्नड़, हिन्दी, अंग्रेजी भाषा में भारतीय संस्कृ ति, भगवान बाहुबली का सन्देश, सत्य, अहिंसा, श्रवणबेलगोला के इतिहास सम्राट चन्द्रगुप्त आचार्य भद्रबाहु चन्द्रगिरि पर्वत की चर्चा करते हुए कई आयामों को छुआ और कहा कि कोई जाति उच्च व नहीं होती, दूसरों की पूजा पद्धति की अवहेलना करना हमारी पद्धति नहीं । अलग भाषा, अलग वेष भारत हमारा देश एक रहा है । अपने विधायक कार्यकाल में श्रवणबेलगोला दर्शन का जिक्र करते हुए उन्हों ने जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी जी विगत 48 वर्षों से श्रवणबेलगोला के लिए समर्पित व्यक्तित्व बताया।

मंच पर पहुँचने के साथ ही उपस्थित राष्ट्रगैंरव आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज सहित 350 पिच्छीधारी आचार्य मुनिराज, आर्यिका माता जी को नमन कर उनका आशीर्वाद लिया।

मंच पर उपराष्ट्रपति श्री नायडू के साथ कर्नाटक राज्यपाल श्री वजूभाई वाला, केन्द्रीय रसायन एवं उर्वरक व संसदीय कार्यमंत्री श्री अनंत कुमार कर्नाटक राज्य सरकार के केबिनेट मंत्री श्री ए.मंजू कपड़ा मंत्री श्री रूद्रप्पा लमानी बैंगलोर, सेन्ट्रल सांसद श्री एस.पी. मोहन श्रवणबेलगोला विधायक श्री बालकृष्ण महोत्सव अध्यख श्रीमति सरिता एम.के.जैन. कार्याध्यख एस.जितेन्द्र कुमार डिप्टी कमिश्नर रोहिणी सिंधूडी उपस्थित थे।

राष्ट्रगान के साथ प्रारम्भ राज्याभिषेक समारोह में भगवान बाहुबली की स्तुति सोम्या-सर्वेष जैन ने प्रस्तुत की । स्वागत भाषण कर्नाटक राज्य महामस्तकाभिषेक कमेटी के अध्यक्ष व प्रभारी मंत्री श्री ए.मंजू ने दिया।

राज्याभिषेक कर शुभारम्भ हुआ समारोह- पूज्य जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी ने नेतृत्व में उपराष्ट्रपति श्री वैंकेय्या नायडू व अतिथियों ने सौधर्म इन्द्र श्री भागचंद-सुनिता देवी चूड़ीवाल गोहाटी के साथ सर्वप्रथम भगवान ऋषभदेव को मोती हार, मुकुट पहनाया व राज्याभिषेक किया । आरती के साथ उपराष्ट्रपति राज्यपाल व सौधर्म इन्द्र व अतिथियों ने चंवर ढुराये।

भारतीय ज्ञानपीठ की 108 पुस्तकों का विमोचन- महामस्तकाभिषेक में श्रुत साहित्य प्रकाशन व अप्रकाषित साहित्य को प्रकाशित करने की भावना अनुसार 108 पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। जिनका विमोचन उपराष्ट्रपति श्री नायडू ने पूज्य जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी जी के साथ किया। पूज्य स्वामी जी ने उन्हें पुस्तकें भेंट की । स्वामी जी ने कहा कि महामस्तकाभिषेक केवल जूलुस नहीं, उत्सव नहीं, पूजा नहीं यह जनकल्याण, शिक्षा, सांस्कृतिक सवंर्धन का कार्य भी है । एक करोड़ रूपये की लागत से उक्त कार्य सम्पन्न हुहा है।

श्रवणबेलगोला के प्राकृत संस्थान को विश्वविद्यालय के रूप में विकसित करेंगे - श्री अनंतकुमार

भारत सरकार में केन्द्रीय मंत्री श्री अनंत कुमार ने कहा कि आज विश्व को बाहुबली टेक्नालॉजी की आवश्यकता है अहिंसा-त्याग-शांति-मैत्री-प्रगति बहुत आवश्यक है । उन्होंने कहा कि पूज्य भट्टारक स्वामी जी की प्रेरणा से जो प्राकृत संस्थान चलाया जा रहा है उसे पहला विश्वविद्यालय भारत सरकार विकसित करेगी, केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने इस हेतु अपनी सहमति प्रदान कर दी है । भगवान महावीर जन्मभूमि वैशाली में भी प्राकृत विश्वविद्यालय होना चाहिए इस हेतु मैं विहार सरकार से भी चर्चा करूंगा । प्राकृत के दो विश्वविद्यालय सम्पूर्ण विश्व में दीप स्तम्भ का कार्य करेंगे । उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी व केन्द्रीय मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर भी महामस्तकाभिषेक मेंआएंगे।

सबसे ज्यादा दान देने वाला समाज है जैन समाज- राज्यपाल श्री वजूभाई वाला

कर्नाटक राज्य के राज्पाल श्री वजूभाई वाला ने कहा कि त्याग में जो आनंद है उपभोग में नहीं है, यहाँ जितने भी साधु संत विराजमान हैं उन्होंने त्याग किया है इसीलिए हम दर्शन करने के लिए आते हैं । सबसे सुखी सम्पन्न लोग, सबसे ज्यादा सम्पत्ति वाले जैनधर्म के लोग हैं तो सबसे ज्यादा दान देने वाला समाज भी जैन समाज है । जितनी ताकत हैं उतने पैसे कमाइये, लेकिन समाज को समर्पित भी कीजिए। राणा प्रताप में ताकत थी, भामाशाह के पास सम्पत्ति दोनों का मिश्रण हुआ विजय मिली । क्षमा वीरस्य भूषणम बताते हुए उन्होंने कहा कि वीर ही क्षमा कर सकता है कमजोर नहीं । गीता में लिखा है कि जो धर्म विरूद्ध कार्य करे उसे समाप्त कर दो । उल्लेखनीय है कि वजूभाई वाला ने जोरदार लगाकर बाहुबली की जय-जयकार उपस्थितनों से कराकर सबका मन मोह लिया।

साधुओं की जितनी भक्ति करें कम है- पूज्य भट्टारक स्वामी जी

सम्बोधित करते हुए पूज्य जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी जी ने कहा कि राज्याभिषेक बहुत पवित्र

कार्य है । साधु संत यहां दो हजार किलोमीटर का पद विहार करके आए हैं, इनकी जितनी भक्ति हम करें कम है । सन् 1981,1993, 2006 के महामस्तकाभिषेक का इतिहास बताते हुए स्वामी जी ने कहा कि संस्कृति संरक्षण के लिए कार्य करते हुए श्री नायडू यहाँ तक पहुंचे है । समाज को ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता हैं। केन्द्रीय मंत्री श्री अनंतकुमार के बारे में उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार से आवश्यक सहयोग आंमत्रण देने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है । श्रवणबेलगोला को उनका बहुत सहयोग प्राप्त होता है।

माँ भारती का सम्मान व वन्दे मातरम का गान होना चाहिए -आचार्य पुष्पदंत सागर जी

आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी महाराज ने कहा कि मेरा लक्ष्य है कि युद्ध रहित विश्व, संघर्ष सहित परिवार, विवाद रहित राज्य, स्वार्थ रहित राजनीति छलकपट मुक्त मैत्रीभाव होना चाहिए। मंगल ग्रह पर हम जाएँ न जाएँ लेकिन स्वामी जी जो भारतवर्ष के मंगल में लगे हैं उनके साथ जाना चाहिये। अहिंसा संस्कृति को मानने वाले हम लोगों ने कभी जनहानि हड़ताप नहीं की है। भगवान बाहुबली ने तो अपना सबकुद जीतकर भी सब कुछ त्याग दिया ऐसे बाहुबली स्वामी के तीर्थ श्रवणबेलगोला के आसपास पाँच किलोमीटर का क्षेत्र अहिंसक क्षेत्र होना चाहिए। साथ ही आचार्य जी ने कामना की कि माँ भारती का सम्मान होना चाहिए-नित्य वंदे मातरम् का गान होना चाहिए।

श्रुत प्रकाशन समिति के डॉ. वीरसागर शास्त्री नई दिल्ली ने कहा कि अज्ञानियों का गुरु बनने की बजाए ज्ञानी का शिष्य बनना श्रेष्ठ है आज राज्यभिषेक के साथ अक्षराभिशेक की परम्परा का शुभारंभ 108 ग्रंथों के विमोचन के माध्यम से हुआ है । उन्होंने उपराष्ट्रपति जी के सम्मान में अभिनंदन-पत्र का वाचन किया।

अतिथियों का स्वागत महोत्सव अध्यक्ष श्रीमति सरिता एम.के.जैन कार्याध्यक्ष एस.जितेन्द्र कुमार जनरल सेक्रेटरी सतीश जैन, सेक्रेटरी सुरेश पाटिल विनोद डोड़ण्णवर, जयकुमार जैन , राकेश सेठी, राजेश खन्ना, स्वराज जैन टाइम्स ऑफ इण्डिया आदि ने किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। राज्याभिषेक के दौरान दुदुंभि नाद कर हर्ष व्यक्त किया गया।

एक्यूप्रेशर नाड़ी प्रशिक्षण शिविर

डॉ. राजेश जी कोटा द्वारा विभिन्न स्थानों पर एक्यूप्रेशर नाड़ी शिविर संत शिरामेणि आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी के स्वर्णिम महोत्सव के उपलक्ष्य में लगाये गये । 3 से 5 जनवरी 2018 साकेत नगर दिल्ली, 23 से 25 जनवरी ज्योति कॉलोनी शहदरा दिल्ली, 27 नवम्बर से 29 सूर्यनगर गाजियाबाद उ.प्र., भोपाल चौक मंदिर, भोपाल रेल्वे स्टेशन मंदिर, ग्वालियर मेन मार्केट, बीना बजरिया, जबलपुर बजा जी, जबलपुर बडा फुहारा, दिल्ली शहदरा, रायपुर आदि स्थानों पर शिविर लगायें गयें।

चतुर्थकाल के मुनि आचार्य श्री विद्यासागर जी

❊ कैलाश चन्द्र शास्त्री (बनारस) ❊

ऐलाचार्य मुनि विद्यानन्द जी ने अपने भाषण में कहा था कि चतुर्थ काल के मुनि विद्यासागर जी हैं । उनका यह कथन यथार्थ हैं। रत्नकाण्डश्रावकाचार में समन्तभद्राचार्य ने कहा है-

विषयाशावशातीतो निरारम्भोऽपरिग्रह ज्ञानध्यान तपोरक्त स्तपस्वी सः प्रशस्यते।

अर्थ- जो विषयों की आशा के वश के रहित है, आरम्भ ओर परिग्रह से रहित है तथा ज्ञान ध्यान और तप में लीन रहता है वह साधु प्रशंसनीय है। आचार्य विद्यासागर जी में ये सभी बातें घठित होती है। उन्हें किसी भी लौकिक प्रतिष्ठा आदि की चाह नहीं है, वे किसी भी प्रकार का प्रारम्भ नहीं करते। उनके पास पीछी कमण्डलु के सिवाय कोई परिग्रह नहीं है न मोटर है और न एक पैसा है। उनके संघ के सब मुनि बाल ब्रह्मचारी युवा हैं । वे अपने संघ के साथ अनियत बिहार करते हैं । वे कब विहार करेंगे और कहां जायेंगे यह कभी भी किसी को मालूम नहीं होता। फिरोजाबाद मे हमे मालूम हुआ कि यहां उनसे किसी ने प्रश्न किया कि महाराज अतिथि किसे कहते हैं। उन्होंने कहा कि इसका उत्तर कल देंगे। और दूसरे दिन पीछी कमण्डलु लेकर विहार कर गये।

पुराने दिगम्बर जैन साधु तो वनों में रहते थे। आज तो प्रायः नगरों में रहते हैं। मगर आचार्य विद्यासागर जी नगर में निवास न करके प्रायः वाहर में ही निवास करते हैं। जबलपुर में चातुर्मास किया तो नगर में न रहकर मढिया जो में रहे। सागर में भी वर्णी भवन में ही रहे। खुरई में तो पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर ही उनके संघ का आवास था। आगम में कहा है- जिस घर में गृहस्थों का आवास हो गया उनके और साधु के आने जाने का मार्ग एक हो, साधु को वहाँ नही रहना चाहिए। जहां स्त्रियों का, पशुओं आदि का आना जाना हो ऐसे स्थान भी साधु निवास के लिए वर्जित है। प्राचीन काल में साधु नगर के बाहर बन गुफा आदि में रहा करते थे।

प्रवचन सार में कहा कि आगम में दो प्रकार के मुनि कहे हैं - एक शुभोपयोगी और एक शुद्धोपयोगी। इसकी टीका में आचार्य अमृतचन्द्र ने यह प्रश्न किया है मुनिपद धारण करके भी जो कषाय का लक्ष होने से शुद्धोपयोगी की भुमिका पर आरोहण करने में असमर्थ है उन्हें साधु माना जाये या नहीं ? इसका उत्तर देते हुए उन्होंने कहा है कि आचार्य कुन्द कुन्द धम्मेण परिणद्मा दव्यादि गाथा से स्वयं ही कहा है कि शुभोपयोग का धर्म के साथ एकार्थ समभाग है। अतः शुभोपयोगी के भी धर्म का सद्भाव होने से शुभापयोगी भी साधु होते है, किन्तु ये शुद्धोपयोगियों के समकक्ष नहीं होते। आचार्य कुन्दकुन्द ने श्रमणों की प्रवृत्ति इस प्रकार कही है - शुभोपयागी मुनि शुद्धात्मा के अनुरागी होते हैं । अतः वे शुद्धात्मपयोगी

श्रमणों का वन्दन उनके आने पर उनके लिए उठना, उनके पीछे-पीछे जाना, उनकी वैयावृत्त आदि करते हैं। दूसरों के अनुग्रह की भावना से दर्शन ज्ञान के उपदेश तथा जिन पूजा के उपदेश में प्रवृत्ति शुभापयोगी मुनि करते हैं। किन्तु जो शुभोपयागी मुनि ऐसा करते हुए अपने संयम की विराधना करता है यह गृहस्थ धर्म में प्रवेश करने के कारण मुनिपद से च्युत हो जाता है। इस लिए प्रत्येक प्रवृत्ति संयम के अनुकूल ही होना चाहिए क्योंकि प्रवृत्ति संयम की सिद्धि के लिए की जाती है। किन्तु जो निश्चय व्यवहार रूप मोक्ष मार्ग को नहीं जानते और पुण्य को ही मोक्ष का कारण मानते हैं। उनके साथ संसर्ग करने से हानि ही होती है। अतः शुभोपयोगी भी साधु लौकिक जनों के साथ संपर्क से बचते हैं ।

आज तो साधुगण शुभोपयोगी ही है आचार्य विद्यासागर जी शुभोपयोगी श्रमणों का कर्तव्य पालन करते है अतः लौकिक जनों से संपर्क से बचते हैं । आज के साधु तो प्रातः जिन पूजा के उपदेश में ही प्रवृत्ति न करके जिन पूजा में भी प्रवृत्ति करते हैं।

प्रतिदिन देवदर्शन, देवपूजा, जिनमन्दिर व मूर्तियों के निर्माण में श्रावकों का कर्तव्य श्रावकाचार में कहा है, किन्तु आज तो यह सब साधुगण भी करते हैं। उनका उपयोग आत्मोत्मुख न होकर वर्हिमुखी होता है।

किन्तु आचार्य विद्यासागर जी पूजा-पाठ के प्रबंध में नहीं है। ये तो अपने शिष्यों को पढ़ाते है स्वयं पढ़ते है और श्रावकों को दर्शन और ज्ञान का सदुपदेश देते हैं।

उन्हें प. सुमेर चन्द्र जी दिवाकर ने लिखा था आपके द्वारा जैनाजैनों में धर्म की प्रभावना हो रही है। लोग पूछते है आचार्य शांति सागर जी महाराज बाहर जाते समय अपना प्रोग्राम कहा दिया करते थे। उनके संघ में चलने वाले श्रावक समूह जिन प्रतिमा को लेकर चलते थे। जिससे मुनिराज और गृहस्थ दोनों कल्याण करते थे।लोग आपसे सविनय यह जानना चाहते है कि आप बिना बताये विहार कर जाते हैं तथा बता देने से महाव्रत में क्षति होगीं।

महाराज ने इसका कोई उत्तर नही दिया क्योंकि प्रोग्राम बताकर श्रावक प्रतिमा से कुछ साथ में चले यह तो इसी गुण की प्रवृत्ति है। आज मुनिगण स्वयं स्वर्ण अपने साथ मूर्तिया रखते हैं, जबकि आगम में इस तरह का कोई उल्लेख नहीं है। मुनि स्वयं आत्म स्वरूप के जानने के लिए ही श्रावक देव दर्शन करते हैं । जब साधुगण जंगलों मे रहकर विहार करते थे तब यह राम प्रवृत्ति नहीं थी। आज तो साधुगण मात्र शरीर से नग्न होते हैं किन्तु उनके अन्तरंग में अपनी पूजा प्रतिष्ठा की भावना रहती है। आचार्य विद्यासागर जी ने ऐसी भावना नहीं है, इसी से वे चतुर्थकाल के मुनि तुल्य हैं ।

एक नये नक्षत्र का उदय

❊ कैलाश चन्द्र शास्त्री (बनारस)❊

हमे अपने कुछ स्नेही मित्रों के अनुरोधवश मदनगंज किशनगढ़ जाना पड़ा। हमारे साथ डा. दरवारी लाल कोठिया भी थे। हम लोग 5 दिन वहां रहे। आचार्य विद्यासागर भी अपने संघ के साथ विराजमाने थे। 5 वर्ष पूर्व अजमेर में उन्हें प्रथम बार अपने गुरु आचार्य ज्ञानसागर जी के साथ नवमुनि के रूप में देखा था। एक छोटा-सा प्रवचन भी सुना था। उस समय यह सम्भावना भी सम्भव नहीं थी कि यह मुनि कुमार आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होकर एक सुवक्ता और सुमुनि के रूप में सामने आयेगा।

हमने 5 दिन दोनों समय उनके प्रवचन बड़ी रूचि और प्रसन्नता के साथ सुने। हमें किसी दिगम्बर मुनि या आचार्य के मुख से आचार्य कुन्दकुन्द समन्तभद्र, वीरसेन आदि की कृतियों के उद्धरण के साथ इतना सुसंगत भाषण सुनने का प्रथम अवसर था। उनकी शैली हृदयग्राही है, वाणी में रस है, मुद्रा आकर्षक है। उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट है। प्राकृत गाथाएँ, संस्कृत के श्लोक और स्वरचित हिन्दी पद्य बड़े मधुर कण्ठ से पढ़ते हैं। समझाने का ढंग इतना उत्तम है। कि साधरण श्रोता भी समझ सकता है। भाषण में व्यंग और विनोद की भी पुट रहती है। कहीं का ईंट, कही का रोड़ा जैसी बात नहीं है और न किस्से कहानी की ही बहार रहती है। आदि से अन्त तक पूरा भाषण जैन सिद्धान्त और जैन अध्यात्म के साथ चारित्र की त्रिवेणी को लेते हुए प्रवाहित होता है। हमने उनके किसी भी भाषण में पिष्टपेषण नहीं देखा। उन्हें कुन्द कुन्द और समन्तभद्र के ग्रन्थ प्रायः कण्ठस्थ जैसे है। गाथा और श्लोक बोलकर अन्वयार्थ सहित उपस्थित करते हैं। वे संस्कृत के तो विद्वान है ही प्राकृत के भी ज्ञाता है। अंग्रेजी भी जानते हैं। अंग्रेजी उच्चारण भी उतना ही स्पष्ट है जितना ग्रन्थ भाषाओं का।

आठ वर्ष पूर्व वह बेलगांव जिले से उत्तर भारत में आये थे। उस समय केवल अपनी मातृ भाषा कन्नड़ जानते थे। उनके गुरु आचार्य ज्ञानसागर जी बनारस के स्याद्वाद महाविद्यालय में पढ़े थे। उन्होंने अपने शिष्य को भी संस्कृत के माध्यम से पढ़ाकर न केवल संस्कृत भाषा का ही, किन्तु जैन सिद्धान्त, आगम और न्याय का भी ज्ञाता बना दिया। आज तो वह संस्कृत में कठिन पद्यात्मक ग्रन्थों की रचना करते हैं। और हिन्दी मे भी पद्य रचना करते हैं।

यह तो हुई उनकी ज्ञानविषयक योग्यता मुनिधर्म को दृष्टि से भी हमें उनमें कुछ वैशिष्ट्य प्रतीत हुआ। अभी उनकी अवस्था केवल अठ्ठाईस वर्ष है। शरीर दुबला-पतला है। सदा नीची दृष्टि किये ही बैठते है सभा में भी जब बोलते हैं तभी दृष्टि ऊपर उठाते हैं अन्यथा मौनपूर्वक नीची दृष्टि किये बैठे रहते हैं। न किसी से वार्तालाप करते है और न किसी आने जाने वाले की अपेक्षा करते हैं। अपने निवास स्थान पर भी हमने उन्हें सदा पद्मासन से नीची दृष्टि किये ही बैठे देखा। रात्रि में भी ऐसे ही बैठे रहते हैं। संकेत तक नहीं करते। कठोर सर्दी में घास तक का उपयोग नहीं करते। उनके दो क्षुल्लक शिष्य भी अपने गुरु का ही अनुकरण करते हैं। हम लोग गये तो उनके मुख पर कोई हर्ष या विवाद नहीं देखा। नमस्कार किया तो आशीर्वाद के लिए हाथ भर उठा दिया। विदा होते समय हमने कहा-आज हम लोग जा रहे तो बोले जाना आना तो लगा हुआ है।

हमारे सामने ही उनके गांव के दो नवयुवक आये जो उनके पास ही अध्ययन करेंगे। किन्तु उन्हें कोई उत्सुकता नहीं कि ये हमारे गांव से आये हैं हम इनसे उधर के समाचर जाने। हमने उन्हें कभी किसी से स्वंय बतियाते नहीं देखा। दिगम्बर युवा मुनि का यह निस्पृह औदासीन्य भाव सचमुच में हमारे लिए विस्मय कारक था। आज के कुछ आचार्य और मुनियों की प्रवृत्ति को देखकर हमारे मन में एक वितृण्णा का भाव आ गया था वह न केवल दूर हुआ किन्तु हमारी इस श्रद्धा को बल मिला कि इस युग मे भी सच्चे मुनि के रूप में रहा जा सकता है। भोजन में नमक, चीनी और घी का भी प्रश्न नहीं रहा। जिस दिन हम लोग मदनगंज से अजमेर आये उसके दूसरे दिन ही वे बिना किसी से कहे अपनी शिष्यमंडली के साथ विहार कर गये।

आज हमने उनके पास कुछ भी परिग्रह नहीं पाया उन्हें सदा ध्यान और अध्ययन से ही संलग्न पाया। किन्तु कल क्या होगा यह हम नहीं कह सकते । जैन समाज रूपी कूप में जो भांग पड़ी हुई है। उससे ये कब तक वचे रहेंगे यही चिन्त्य है। उनके गुरु का आचार्य पद कुछ लोगों की आलोचना का विषय रहा। और उन्होंने ही इन्हें अपना आचार्य पद दिया है अतः वह भी किन्ही के लिये आलोच्य हो सकता है। किन्तु आज के कई एक आचार्यों और मुनियों से आचार्य विद्यासागर हमें तो श्रेष्ठ ही प्रतीत हुए हैं। अभी तो वे किसी भी प्रपच्च मे नहीं है किन्तु भक्तगणों के प्रवच्चों में वे कब तक अपने को बचाये रहते हैं, यही देखना है। हम तो सब से यही प्रार्थना करते हैं कि वे इन्हें अपने सुपय पर चलने दें तथा किसी प्रकार की मृग मरीचिका में फँसाने की चेष्टा न करें। साधु और आचार्यों से भी प्रार्थना है कि वे उन्हें आशीर्वाद दें कि यह नया नक्षत्र आदर्श मार्ग का सच्चा प्रतीक बनकर हमारे जैसे मुनि आलोचकों को श्रद्धा का भी भाजन बने। किसी को भी उनसे किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए और उनकी निरीह वृत्ति को प्रोत्साहन देना चाहिए। उनके पास जाने पर उन्हें नमस्कारादि करने पर भी यदि वे उदासीन रहते हैं। तो इसे उनका अहंकार और अपना अपमान नहीं मानना चाहिए। सच्चे निस्पृही दिगम्बर साधु की यही वृत्ति होती है। आत्मकल्याण इसी वृत्ति से होता है। संसार के प्रपच्च में फसने के लिए गृहत्याग बृद्धिमानी नहीं है। यह तो वैसा ही है जैसे अपनी पत्नी को त्याग कर पत्नी के पोषण में जीवन बिताना। पुराने समय में इसी प्रपच्च से बचने के लिए साधुजन बन में निवास करते थे और वे सांसरिक प्रपच्च से बचे रहते थे। परिस्थिति बदलने से वह स्थिति कायम नहीं रही और बनवास आ स्थान नगरावास ने ले लिया। इससे ऐसी स्थिति आती जाती है कि साधु अपनी परिग्रह त्याग कर पराई परिग्रह के चक्कर में पडता जाता है। वह शरीर से नग्न अवश्य होता है किन्तु मन से नग्न नहीं रह पाता। रहना भी चाहे तो भक्त रहने नहीं देते। बहुत से भक्त उन्हें घेर लेते हैं। और साधु उनके चक्र में फँस जाता है।

यह नही भूलना चाहिए कि आज के वाता वरण में मोक्ष को भावना से साधु के पास कदाचित ही कोई जाता है। किन्तु साधु के पास आने जाने से अनायास हीं धर्मात्मा का पद प्राप्त हो जाता है। यह ख्याति भी लाभ ही है। फिर आज का युग अर्थयुग है। अर्थ ने सबको अपना दास बना लिया है । इसी अर्थ की आकांक्षा से धनी भी साधु की सेवा करके और भी धनी बनना चाहता है। इसके लिए वह साधु के निमित्त धन भी खर्च करता है। अब यदि साधु ने भी अपना व्यय भार बढ़ा लिया है संघ के नाम पर मोटर आदि इकट्ठी कर ली है। या कहीं कोई मंदिर मूर्ति या अपने नाम की संस्था आदि खोलली है या अपनी ख्याति, लाभ पूजा आदि की भावना रखता है तो वह धन के चक्र में फंसे बिना नहीं रहता। ऐसा साधू शरीर से नग्न रहता है किन्तु मन से नग्न नहीं रहता।

साधना के सुमेरु आचार्य श्री विद्यासागर महाराज

❊ डॉ. श्रेयांस कुमार जैन (बड़ौत) ❊

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की साधना और त्याग तपस्या इतनी उत्कृष्ट है कि वह शुभोपयोग और शुद्धोपयोग की साधिका है। इन जैसे साधक ही सच्चे सुख के भाक्ता होते हैं । पञ्चाध्यायी में भी कहा गया है-

शक्र-चक्र-धरादीनां केवलं पुण्य-शालिनाम्।
तृष्णाबीजं रतिस्तेषां सुखावाप्तिः कुतस्तनी।।

महान् पुण्यशाली इन्द्र चक्रवर्ती आदि का सुख तृष्णा का बीज है, इनको सच्चे सुख की प्राप्ति कैसे हो सकती है ? सच्चा सुख शुद्धोपयोगी परमवीतराग यथाख्यातचारित्रधारी मुनीश्वर को प्राप्त होता है।

आचार्य श्री ज्ञान-विद्या के सागर हैं , इन्होंने साहित्य समृद्धि में अकल्पनीय योगदान किया है। आचार्य श्री की प्रज्ञा प्रतिभा और अपूर्व मेधा का ही सुफल मूकमाटी, नर्मदा के नरम कंकर, डूबो मत डुबकी, तोता क्यों रोता है, निजानुभवशतक, मुक्तशतक, दोहाशतक, पूर्णोदयशतक, सर्वोदयशतक, विविध स्तुतियों एवं भजन आदि रचनाएँ हैं। इनमें आचार्य श्री की कारयित्री और भावयित्री दोनों प्रतिभाएँ स्पष्ट ज्ञात होती है । इन स्वतंत्र रचनाओं के साथ पद्यानुवाद रूप जैनगीता, कुन्दकुन्द का कुन्दन, निजामृतपान, द्रव्यसंग्रह, अष्टपाहुड़, नियमसार, द्वादशानुप्रेक्षा, समन्तभद्र की भद्रता, गुणोदय, रयणमंजूषा, आप्तमीमांसा, गोमटेश, अष्टक, कल्याण मन्दिर स्त्रोत, नन्दीश्वर भक्ति, समाधि सुधा शतकम, योगसागर, एकीभावस्तोत्र, आदि कृतियाँ लोक विश्रुत हैं। जिनमें मूल की सरंक्षा के साथ अदभुत लालित्य प्रदान किया है। काव्य के सघः परानिवृति रूप प्रयोजन की सिद्धि होती है। संस्कृत शतकों में सिद्धान्त की गहराई के साथ-साथ काव्य का अपूर्व सौष्ठव है। इनके कृतित्व और व्यक्तित्व से सम्पूर्ण राष्ट्र और समाज प्रभावित है। ये जैनधर्म, समाज और राष्ट्र की अनुपम निधि हैं । सांसारिक वैभव और सुख इन्हें किंचित भी ईष्ट नहीं है और इन्द्रिय जनित सुख रूप विभाव परणति से भी सर्वथा दूर हैं। सांसारिक सुखों के प्रति सदैव अनासक्त रहने वाले हैं। मात्र आत्मानन्द के भोक्ता हैं, वही सच्चा सुख है। जैसे तिल में तैल व्याप्त है उसी प्रकार शरीर में आत्मा व्याप्त है । निज की आत्मा निज का अवश्य मिलेगी, इसी लक्ष्य को बनाकर निरन्तर आत्मसाधना में संलग्न हैं। उन्हें प्रबोध है कि आत्मोत्थान और आध्यात्मिक शान्ति के अनुपमस्रोत जिनमन्दिर, जिनार्चा, स्वाध्या और मंत्रोच्चार हैं। इन साधनों का आलम्बन ही जीवन को सुख शान्तिपूर्वक बना सकता है।

सिद्धि लक्ष्मी अनके अधीन होगी क्योंकि जो विविध तपरत्न भूषण धारी, पवित्र ज्ञान वाले शीलरूप वस्त्र को धारणकर सौम्य शरीर वाले होते हैं सुर लक्ष्मी तथा सिद्धि लक्ष्मी भी उनके अधीन रहती है। आचार्य प्रवर को संसार भोगोपभोग बाल्यकाल से ही नहीं लुभा पाये तृणवत उनका परित्याग कर साधना के पथ पर आरूढ़ हुए। तप साधना ज्ञान आराधना जो महानता के द्योतक हैं । इनका आश्रय लेकर आध्यात्मिकता से ओतप्रोत हैं । आध्यात्मिक प्रभाव की विशेषता यही है कि अध्यात्मवादी आन्तरिक दृष्टि से कठोर और तपस्वी होता है। तथा बाह्यतः नम्र और क्षमाशील होता है । आचार्य श्री का व्यक्तित्व उक्त आध्यात्मिक प्रभाव से पूर्णतया प्रभावित है और आचार्य परमेष्ठी के छत्तीस मूलगुणों का सम्यक् रूपेण पालन करते हुए अपने

शिष्यों को अट्ठाईस मूलगुणों का पालन कराते हैं। सतत ज्ञान दर्शनादि में प्रतिबद्ध रहते हैं। अतः पूर्ण श्रामण्यवान् हैं। ऐसे साधकों के विषय में ही आचार्य श्री कुन्द कुन्द स्वामी का कथन सार्थक है -

चरदि णिवद्धो णिच्चं समणो णाणम्मि दंसणमुहम्मि।
पयदो मूलगुणेसु य जो सो पडिपुण्ण सामण्णो।। प्रवचनसार 14

जो श्रमण सदा ज्ञान में और दर्शनादि में प्रतिबद्ध तथा मूलगुणों में प्रयत्नशील विचरण करता है, वह परिपूर्ण श्रामण्यवान् है।

श्रामण्य के परिपालक आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर महाराज के विचारों में दृढ़ता, अन्तः करण में भव्य करुणा और चिन्तनपूर्ण धार्मिक जीवन रूप समग्र व्यक्तित्व के धारक महापुरुष हैं। आचार्य श्री विद्यासागर महराज के दीक्षा स्वर्ण महोत्सव पर उन्हें शत शत नमन करते हुए यही मंगल भावना करता हूँ। कि उनका शताब्दी वर्ष मनाकर समस्त समाज पुण्य लाभ प्राप्त करे।

आचार्य विद्यासागर महाराज जी के संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में ब्र. बहिन सविता दीदी 10 प्रतिमाधारी द्वारा अर्हंम ध्यान योग शिविर 50 स्थानों पर लगायें गयें।

सर्वप्रथम मुनि श्री समय सागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में

अशोक नगर म.प्र 19,20 सितम्बर 2017, शाढोरा म.प्र. 21,22 सितम्बर 2017, पिपरई गांव म.प्र. 23,25 सितम्बर, मुंगावली 26,27 सितम्बर, चन्देरी 28,29 सितम्बर, ललितपुर उ.प्र. 30 से 5 अक्टूबर, मेनपूरी उ.प्र. 5 से 6 अक्टूबर, ग्वालियर 8 से 11 अक्टूबर, कुंरवाई 15 से 18, खांन्दूकालोनी बांसवाड़ा राजस्थान 23,24 अक्टूबर, माडल टाउन दिल्ली 2,3 दिसम्बर, रोहिणी सेक्टर 13 दिल्ली 5 दिसम्बर, प्रशान्त बिहार दिल्ली 6 दिसम्बर, महावीर स्कूल दिल्ली12 दिसम्बर, कटनी 21,22 जनवरी 18, धूलियान पश्चिम बंगाल 25 से 27 जनवरी, जीयागंज पश्चिम बंगाल 30 जनवरी से 1 फरवरी, बदमपुर पश्चिम बंगाल 1,2 फरवरी 18, जंगीपुर पश्चिम बंगाल 2-3 फरवरी 18, लालगोला पश्चिम बंगाल 4 फरवरी 18, आणंगा बाग पश्चिम बंगाल 5-6 फरवरी 18., मिरजापुर पश्चिम बंगाल 2 फरवरी 18, सनमति पश्चिम बंगाल 4-5 फरवरी 18. बाकल म.प्र. 13-14 फरवरी 18, भौरासा म.प्र. 3-4 मार्च 18, हापोड़ उ.प्र. 31 मार्च से 1 अप्रैल, पिलकुआं उ.प्र. 25 मार्च, नहटोड़ उ.प्र. 2-5 अप्रैल, हस्तिनापुर 9 अप्रैल, सदरमेरठ 11-12 अप्रैल, छोटा मंदिर मेरठ 14 अप्रैल, सागर 21-22 अप्रैल, डोंगरगढ़ 05-08 जून, अजमेर राजस्थान आदिनाथ जंयति, पूणे महाराष्ट्र पयुर्षण 2017, सतना म.प्र. 08 -10 मई, इन्दौर तिलकनगर 18-20 मई, जावरा मंदिर इन्दौर 20-22 मई, श्राविका आश्रम इन्दौर 21-24 मई प्रातः, पंचबालयति मंदिर इन्दौर 21-23 मई शाम, उदयनगर 25-26 मई प्रातः, वैभवनगर 26-27 मई शाम, माणिकचौक 30-31 मई, छत्रपति नगर 3 जून, किलेअन्दर विदिशा म.प्र. 15 जून, सर्राफजी मंदिर 11 जून, अरिहंत विहार विदिशा 17 जून, शीतल धाम विदिशा 18 जून, आदिनाथ जिनालय विदिशा 19 जून, टैगोर शासकीय स्कूल विदिशा 19 जून दोप., शहपुरा भोपाल 21-24 जून तक शिविर का आयोजन किया गया।

संयम-साधना-स्वाध्याय की साक्षात् त्रिवेणी आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज

❊ डॉ. सुनील जैन संचय (ललितपुर) ❊

भारतीय संस्कृति श्रमण संस्कृति के बिना अधूरी है। हमारो देश अनेक ऋषि, मुनियों ओर त्यागियों का देश है। इस देश का गौरव इन्हीं की महानता के कारण है। श्रमण संस्कृति को वर्तमान में परम पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज अपनी त्याग-तपस्या और साधना से गौरवान्तित कर रहे हैं। पूज्य आचार्य श्री के पास एक बार भी जो पहुचा, हमेशा के लिए वह गुरुदेव से जुड़ जाता है। आपकी सोच जैन समुदाय को एक नया मुकाम दिलाने की रहती है।

हाल ही में आपके पावन सान्निध्य में गोम्मटेश बाहुबली भगवान का महामस्तकाभिषेक भारी श्रद्धा और अपार जनसैलाव के बीच सम्पन्न हुआ। आपका गोम्मटेश बाहुबली भगवान के प्रति विशेष लगाव रहता है। इसलिए आप इस बार भी महामस्तकाभिषेक के 12 वर्षीय पावन आयोजन में अपना मंगल सान्निध्य प्रदान करने श्रवणबेलगोला की पावन भूमि पर पहुंचे और इस महामहोत्सव को जन-जन तक पहुंचाने में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह किया। श्रवणबेलगोला श्रीक्षेत्र के भट्टारक परम पूज्य कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति जी स्वामी के निर्देशन में यह विशाल आयोजन अपनी पूरी गौरव गरिमा और महिमा के साथ सम्पन्न हुआ। चारूकीर्ति जी स्वामी के विशाल हृदय ने इस आयोजन में सभी को समाहित करने का प्रयास किया। पूरे विश्व मे इस विशाल, विराट आयोजन की अनुगूंज सुनायी दी, यब सब पूज्य आचार्य श्री के आशीर्वाद और कर्मयोगी चारूकीर्ति जी स्वामी के कुशल निदेशन से ही संभव हो पाया है।

पूज्य आचार्य श्री ने अपने दीक्षित जीवन में रत्नत्रय की सजग प्रहरी की तरह आराधना के साथ-साथ जैन साहित्य के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पूज्य आचार्य श्री के आसन की दृढ़ता, लेखन में एकाग्रता, मनन-चिंतन का स्थैर्य प्रत्येक परिस्थिति में धैर्य, गुरुजनों के प्रति अगाध निश्चल भक्ति, धार्मिकजनों में वाल्सल्य, सहिष्णुता, समता, निरभिमानता, दृढ़सकल्पशक्ति आदि ऐसे विशिष्ट गुण हैं जो स्पृहा जमाते हैं। धर्मसभा हो या विद्वत् गोष्ठी वे सभा में सबके विचारों को सुनते रहते हैं। जब उनका अवसर आता हैं तो प्रवचन में सबके विचारों का भाषण का विषय उनकी समीक्षा के दायरे में आ जाता है। वर्तमान का विद्वत जगत् पूज्य आचार्य श्री के सिद्धांत, अध्यात्म, ज्ञान के प्रति सहज नमीभूत है। अगाधज्ञान से पूरित आपके प्रवचन हृदयग्राही, आगमानुमोदि, सहज और सरल होते हैं।

आपकी विद्वता एवं साधुता की सुगंध सर्वत्र फैली हुई है। आपकी कठोर चर्या एवं ज्ञान की प्रकर्षता से जन-गण-मन लाभान्वित हुए हैं।

जन्म:- आचार्य श्री 108 वर्द्धमान सागर जी महाराज जिनका बचपन का नाम यशवंत था, का जन्म 18 सितम्बर 1950 भाद्रपद शुक्ल 7 को मध्यप्रदेश के सनावद नगर में हुआ था। मनोरमा देवी की कोख से 13 वे पुष्प के रूप में जन्में यशवन्त। बाल्यावस्था में ही मां की ममता का वियोग हो जाने पर पिता कमलचंद्र जी ने यशवंत को पाला पोसा और बढ़ा किया। होनहार विरबान के होत चीकने पात कहावत के अनुसार यशवंत जी बचपन से कुशाग्र बुद्धि, करूणाशील, न्यायप्रिय, सत्यवादी निर्भी क एवं वैराग्यवान थे। अपने से बड़े जनों का आदर व सम्मान करते थे।

जैनधर्म के प्रति रूचि :- बाल्यकाल से ही मुनियों के प्रति इनकी श्रद्धा भक्ति थी, वे मुनियों की सेवा-वैयावृत्ति करते, उन्हें आहार भी देते थे। वे बचपन से ही वैरागी थे, उन्होंने सांसारिक प्रपंचों में

फंसना कभी मन से स्वीकार नहीं किया शौक-फैशन, भोग-बिलासी जिंदगी से कोशो दूर थे। 14 वर्ष की बाल्यावस्था में यशवंत ने सर्वप्रथम आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी तथा विमलसागर जी महाराज के दर्शन किये। तत्पश्चात 1965 में जीवन को बदलने वाली घटना का सूत्रपात हुआ। आर्यिका इन्दुमति माता जी, आर्यिका सुपार्श्वमति माता जी, एवं आर्यिका विद्यामति माता जी इन त्रय आर्यिका रत्न का सनावद नगर में चातुर्मास हुआ। आर्यिका सुपार्श्वमति जी के व ात्सल्य व्यवहार समता और विलसित आनंद तथा अदभुत ज्ञान के बालक यशवंत को अभिभूत कर दिया। माता जी के द्वारा कहे गये शब्द वैराग्य मार्ग पर बढोगे तो तुम्हे भी ऐसा ही परम आनंद मिलेगा। साधे यशवंत के हृदय में उतर गये और यही से शुरु हुयी वर्तमान के वर्द्धमान की यात्रा।

वैराग्य उत्पन्न और ब्रह्मचर्य व्रत :- 1967 में गणिनी आर्यिका रत्न ज्ञानमति माता जी ससंघ का चातुर्मास हुआ सनावद में। बालक यशवंत की धर्म रूचि तथा वैराग्य भावना को आर्यिका माता जी ने भली भांति पढकर वैराग्य का बीज मंत्र दिया। अगले ही वर्ष सन् 1968 में यशवंत कुमार ने आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत को ग्रहण किया। कुछ दिन वापस घर में रहकर यशवंत कुमार पहुंच गये चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के द्वितीय पट्टाचार्य आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज के संघ में और पठन पाठन अध्यापन करने लगे। आर्यिका ज्ञानमति सादगी निर्मलता, सौहार्दपूर्ण व्यवहार से सब उन्हें स्नेह करने लगे।

मुनि दीक्षा :- आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज की समाधि के पश्चात तृतीय पट्टचार्य आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज के आचार्य पदारोहण के दिन फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को सन् 1969 में राजस्थान की पावन भूमि श्री महावीर जी यशवंत कुमार समेत कुल 11 लोगों की दीक्षाएं सम्पन्न हुई। गुरु ने यशवंत कुमार का नामकरण किया मुनि श्री वर्द्धमान सागर।

मन की दृढ़ता :- दीक्षा गुरु तथा समस्त संघ के साथ विहार करते हुए मुनि वर्द्धमान सागर जी पहुंचे जयपुर के खानियां जी। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के कारण बेहोशी आ गयी और जब होश आया तो पाया कि नेत्रों की ज्योति जा चुकी थी, आचार्य श्री धर्मसागर जी ने एलोपेथी दवाई का उपयोग मुनि अवस्था में करने की आज्ञा नहीं दी। वर्द्धमान सागर जी को पूज्यपाद स्वामी द्वारा की गई शांति भक्ति न स्नेहा छरणम प्रयन्ति भगवन का स्मरण आया और पूरे संघ सहित बैठ गये भगवान चंद्रप्रभ के चरणों में शांति भक्ति करने। जो स्वयं निज अंतरात्मा की ज्योति जलाकर सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित करने वाले थे, उनकी बाहरी नेत्र ज्योति को फिर कोई कैसे रोक सकता था। तीन घंटे की प्रार्थना के पश्चात चमत्कार हुआ, प्रभु भक्ति और मन की दृढ़ता तथा गुरु के आशीर्वाद से तत्क्षण नेत्र ज्योति प्रकट हो गई।

आगम का गहन अध्ययन :- विद्यागुरु कोलकाता गौरव आचार्य कल्पश्रुत सागर जी के साथ संघ में रहकर धीरे धीरे सिद्धांत आगम ग्रंथो आदि का अध्ययन किया। किशनगढ़ में आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज के साथ प्रवेश के वक्त आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज तथा मुनि श्री विद्यासागर जी महाराज का स्वंय एक किलो मीटर चलकर आकर परम्परा के आचार्य की आगवनी करना और उन्हें उच्च आसन पर विराजमान करने का दृश्य मुनि वर्द्धमान सागर जी के हृदय पटल पर अंकित हो गया। धीरे-धीरे मुनि श्री वर्द्धमान सागर जी आचार्य श्री धर्मसागर जी और आचार्य कल्पश्रुत सागर जी महाराज के चरण सान्निध्य में रहकर दीक्षा संस्कार ज्योतिष प्रवचन आदि में निपुणता को प्राप्त होने लगे।

आचार्य धर्मसागर का समाधिमरण और आचार्य पद :- पलपल बर्धित को देखकर गुरु

धर्मसागर जी भी चेहरे पर मुस्कान लिए हर्षित होते हैं। कुछ वर्ष यों ही व्यतीत होते गये और सहसा वर्द्धमान सागर जी सहित सम्पूर्ण जैन जगत पर जैस वज्रपात हो गया। सीकर चातुर्मास के दौरान आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज की समाधि हो गयी। आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज की समाधि के पश्चात् पट्टाचार्य श्री अजितसागर जी महाराज के आमंत्रण पर मुनि श्री वर्द्धमान सागर जी 20-21 साधुओं के संघ सहित पहुंच गये, पिता तुल्य आचार्य श्री के चरणों में भीण्डर करीब तीन साल के समीप्य में आचार्य श्री ने गूढ़ रहस्यों सहित बहुत सारी ज्ञान की बातों से मुनि श्री वर्द्धमान सागर जी को अवगत कराया। मुनि श्री वर्द्धमान सागर जी कि तीक्ष्ण समर्पण भाव निर्मल आगमोक्त आचरण की प्रवृत्ति, गुरुजनों के प्रति अनन्य भक्ति देव शास्त्र गुरु के प्रति असीम श्रद्धा संघस्थजनों के साथ वात्सल्य पूर्ण व्यवहार, हृदय में संघ के साथ उत्थान की भावना, युवा अवस्था, ऐसे कुल मिलाकर सभी आयानों से ओजस्वी व्यक्तित्व को परखते हुए आचार्य श्री अजितसागर जी महाराज ने अपनी अश्वस्थता को देखकर लिखित पत्र द्वारा यह आदेश दिया कि मेरी समाधि के पश्चात मैं मुनि श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज को आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्णं परंपरा का आचार्य नियुक्त करता हूँ। और फिर आचार्य श्री की समाधि के पश्चात 24 जून 1990 को आषाढ़ शुक्ल 2 को परसोला में लाखों जन समूह की उपस्थिति में वर्द्धमान सागर जी को आचार्य शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण परंपरा केपट्ट पर बैठाया गया। आचार्य पट्ट के संस्कार किये। आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी महाराज ने। और फिर यहां से शुरु हुई वर्तमान के वर्द्धमान की जन मानस को वात्सल्य रूपी गागर में भिगोने की यात्रा।

धर्म प्रभावना :- आचार्य श्री वर्द्धमान जी महाराज ने अपने संयमी जीवन में ग्राम-ग्राम नगर-नगर पद विहार करते हुए अपनी पद रज से भारत वर्ष के कई प्रांतो को पवित्र किया है। कर्नाटक महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, बिहार, झारखण्ड आदि प्रान्तों में जिनधर्म की अभूतपूर्व प्रभावना की। अनेक निर्वाण क्षेत्रों अतिशय क्षेत्रों की यात्रा की, अनेक पंचकल्याणक कराये। मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका को दीक्षा देकर चतुर्विध संघ की स्थापना की।

विद्वानों के प्रति आचार्य श्री का परम वात्सल्य स्पष्ट झलकता है। आचार्य श्री को विद्वानों के प्रति विशेष अनुराग है वे मानते हैं कि जिनवाणी के प्रचार-प्रसार के लिए जो कार्य दिगम्बर मुद्रा में साधु नहीं कर सकता है वह विद्वान कर सकता है। मेरा परम सौभाग्य रहा है कि मुझे पूज्य आचार्य श्री के सान्निध्य में पपौरा जी और कुण्डलपुर, किशनगढ़ में आयोजित संगोष्ठी में संयोजन का दायित्व प्राप्त हुआ और इस दौरान आचार्य श्री से निकटता से जुड़ने का जो अवसर मिला वह हमारे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है और अपना परम सौभाग्य मानता हूँ तो ऐसे महान संत सान्निध्य में मुझे मां जिनवाणी के प्रति कुछ करने का सुअवसर मिला। आचार्य श्री निकट जब भी कोई विद्वान दर्शन के लिए पहुंचता है तो चाहे वह युवा विद्वान हो या वरिष्ठ विद्वान पूरा वात्सल्य आचार्य श्री का मिलता है। आचार्य श्री का हमेशा कहना रहता है कि विद्वान आचरण निष्ठ होना चाहिए।

आचार्य श्री के बारे में जितना लिखा जाये कम है, हमारी इस नन्हीं सी कलम से वह दम-खम कहां जो एक महान तपस्वी की जीवनधारा को कछेक कागज के पन्नो में समेट सके।

धरती का कागज करूँ, करूँ समुद्र पानी से हाई।
फिर भी गुरु गुण कहे न जाये, यह गुरु महिमा बताई।

पूज्य आचार्य श्री के आचार्य पदारोहण दिवस के पावन अवसर पर यही भावना भाता हूं कि तपोवर्धन एवं स्व-पर कल्याण के निमित्त आप सदा स्वस्थ रहें और दीर्घायु होकर जैनधर्म की असीम

आचार्य श्री विद्यासागर जी के संयम स्वर्ण महोत्सव की स्मृति को चिरस्थायी बनाते कीर्ति स्तम्भ

❊ ब्र. जिनेश मलैया (इन्दौर) ❊

श्रवणबेलगोल (कर्नाटक) अजमेर राजस्थान, मदनगंज किशनगढ़, बस स्टेण्ड तथा स्टेशन व्यावर, इन्द्रगढ़, बागीदोरा, उदयपुर, चित्रकूट, एवं आरकेसर्किल ज्ञानोदय तीर्थ नारेली में दो आचार्य श्री ज्ञानसागर जी तथा आचार्य श्री विद्यासागर जी खंदारगिरी, सांघानेर, जयपुर, पदमपुरा, रामगंज मंडी, डूंगरपुर, भीलवाड़ा, चित्तोड़गढ़ आदि कई स्थानों पर राजस्थान में कीर्ति स्तम्भ बनायें गये। इसके अलावा श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पजनारी बंडा सागर म.प्र., श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बीनाबारह सागर म.प्र., ललितपुर उ.प्र. खानियांधाना म.प्र., खुरई म.प्र., नरवर म.प्र., ईशागढ़ म.प्र., सिलवानी म.प्र., सिवनी म.प्र., छतरपुर म.प्र., पवां जी म.प्र., करगुंवा जी झांसी उ.प्र., लिधोरा म.प्र., ईसरवारा म.प्र., आगरा उ.प्र., आहार जी म.प्र., सागर म.प्र., गेरतगंज म.प्र., बंडा सागर म.प्र. में पांच कीर्ति स्तम्भ खरगोन म.प्र., चन्द्रगिरी डोंगरगढ़, छत्तीसगढ़, गुना म.प्र., राघोगढ़ म.प्र., बुरहानपुर म.प्र., अमरावती महाराष्ट्र, गुलबर्गा महाराष्ट्र, दिल्ली, खजुराहो म.प्र., जगदलपुर छत्तीसगढ, मुंगावली म.प्र., शाहगढ़ म.प्र., लटेरी म.प्र., झांसी उ.प्र., सिद्धवरकूट म.प्र., रानोली, बावनगजा म.प्र., नोएडा उ.प्र., वर्द्धा महाराष्ट्र, मुक्तागिरी म.प्र., मंगलवाड़, बिलहरा म.प्र., पटेरिया जी म.प्र., रीवा म.प्र., सालड़ा, जगत की बावली, हटा म.प्र., गुडली, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र अहिच्छत्र पार्श्वनाथ रामनगर उ.प्र., ऊन म.प्र.,साकरोदा, कुण्डलपुर म.प्र., राजगृही झारखण्ड, सोनागिर म.प्र., औंरगाबाद महाराष्ट्र, सरी, मेनपुरी उ.प्र., कुण्डलपुर विहार, मिरजापुर उ.प्र., देहरादून उत्तराखण्ड, रांची झारखण्ड, ऐलोरा महाराष्ट्र, पुसद महाराष्ट्र, भोजपुर म.प्र., नांदइ, बही पार्श्वनाथ मंदसौर म.प्र., यावतमाल महाराष्ट्र, मुरैना म.प्र., मढ़िया जी जबलपुर म.प्र., फिरोजाबाद उ.प्र., बेंगलोर कर्नाटक, अमरावती महाराष्ट्र , मंदारगिरी बिहार, अजमेर, वैशाली, चम्पापुर बिहार, गंजबासौदा म.प्र., रानीला हरियाणा,श्री दिगम्बर जैन सिद्ध नैनागिर म.प्र., हजारीबाग झारखण्ड, गया झारखण्ड, पोन्नून मलई तमिलनाडू, पूणे महाराष्ट्र, गुणावा पश्चिम बंगाल, केकड़ी राजस्थान, मांगीतुंगी महाराष्ट्र, मधुवन मोड़, सकरार, मालथौन म.प्र., घोघा गुजरात, पाटन म.प्र., जबलपुर म.प्र., दमोह में पांच किर्ती स्तम्भ बेंगु राजस्थान, गोपाचल पर्वत ग्वालियर, बोरगांव महाराष्ट्र, ओब्दुल्ला गंज म.प्र., सुल्तान गंज म.प्र., भिण्डर राजस्थान, बिलासपुर छत्तीसगढ़, लूणवा जयपुर राजस्थान, ग्वालियर म.प्र., रायपुर छत्तीसगढ, प्रभासगिरी, कंदवा म.प्र., पनागर म.प्र., शाहपुर सागर म.प्र.,विदिशा म.प्र., अहमदाबाद चार किर्ती स्तम्भ मंडावरा उ.प्र.,टीकमगढ़ म.प्र., टीकमगढ़ गौशाला, मथुराचौरासी उ.प्र., मार्सलगंज उ.प्र., भोपाल म.प्र., पावापुरी बिहार, कटनी म.प्र., दिल्ली गौशाला, नागपुर महाराष्ट्र, वाल्कानी , चंदेरी खंदारगिरी, चंदेरी बस स्टेण्ड, गया कोलुआ पहाड़, कोनी जी म.प्र., बंगला चौराहा म.प्र., श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र द्रोणागिरी म.प्र., सोरीपुर बटेश्वर आगरा उ.प्र., फिरोजाबाद उ.प्र. (दो), पटना बिहार, मलयपुर जमुई, निमियाघाट झारखण्ड,

चित्तोड़गढ राजस्थान, मंदसौर म.प्र., जयपुर राजस्थान, कोलकाता पश्चिम बंगाल, पचोकरा, मंडला म.प्र.(दो), विनेका बंडा सागर म.प्र., गडी रायसेन म.प्र., कुरवाई विदिशा म.प्र., बामोरकलाँ जिला गुना म.प्र., बीना म.प्र., बंधा जी टीकमगढ़ म.प्र., औरछा टीकमगढ़ म.प्र., पृथ्वीपुर म.प्र.,कोलारस शिवपुरी म.प्र.,भोपाल कमलापार्क म.प्र., शिवपुरी म.प्र., जखोरा म.प्र., जैसीनगर म.प्र., पटेरा म.प्र., सागर वर्द्धमान कालोनी तिगड्डा म.प्र., पथरिया जिला दमोह म.प्र., ग्रेटर नोएड़ा उ.प्र., फरिदाबाद उ.प्र., पवां जी उ .प्र., तालबेहट उ.प्र., सीरोन जी उ.प्र., गुड़ली उदयपुर राजस्थान, राजनाद गांव छत्तीसगढ़, पिड़ावा राजस्थान, बहेलना उ.प्र., बरूआ सागर उ.प्र., परतापुर राजस्थान, पन्ना म.प्र., नौगामा म.प्र., पिण्डरई म.प्र., खिमलासा म.प्र., केवलरी म.प्र., धानोरा म.प्र., घनसोर म.प्र., खजुराओ म.प्र., सौंरगी म.प्र.,लखनादौन म.प्र., देवरी म.प्र., बारा सिवनी म.प्र., शहदोरा म.प्र.,औरछा उ.प्र., छतरपुर उ.प्र., डिंडोरी म.प्र., बौराव राजस्थान, अशोकनगर म.प्र., जरूआखेडा म.प्र., पलवल हरियाणा, चन्द्रगिरी छत्तीसगढ़, बांसवाड़ा, साशई म.प्र., बासारी म.प्र., संगली महाराष्ट्र, शाहगढ़ म.प्र., गंजबासौदा, हरदा म.प्र., पटेरा म.प्र.,दमोह कटंगी, हिंगोली महराष्ट्र,बीना मनिक जी, कानपुर, खंडवा, खांतेगांव, प्रभासगिरी, अलीगढ़, बारोदय सागर, गढ़ा जबलपुर, जबलपुर शिवनगर, जबलपुर कंचनविहार, बरेली, सवेय माधेपुर, भिण्डर राजस्थान, मंगलवाद, घाटोल राजस्थान, आरोन, गंजबासोदा, बासां दमोह, जबलपुर कोनी, बरासिया, तलवारा, बरोदिया सागर, सेलीमनाबाद, वणीगुरुकुल जबलपुर, हांसी,रायपुर, शहपुरा, पथरिया, अभाना, खामगांव महाराष्ट्र, गुना, बोकारो, जम्मेर, अमरावती, चोरई, तलेड़ा, मकराना, कुचामान आदि स्थानों पर कीर्ति स्तम्भ पूर्ण किये जा चुके / कार्य प्रगति पर हैं / प्रस्तावित है कि जानकारी प्राप्त हुई है। वैसे इसके अलावा भी कई जगह कीर्ति स्तम्भ बनायें गये परन्तु जानकारी प्राप्त नही हो सकी है।इसके अलावा आपकी जानकारी में कहीं भी कीर्ति स्तम्भ बनायें गये हो तो कृपया सूचित करें ताकि विद्यासागर की लहरों में विधिवत प्रकाशन हो सके।

कविता

गुरुवर विद्यासागर

❊ विजय जैन हितकारी (रीठी) ❊

आर्षमार्गी श्रमण संस्कृति कि
दिगम्बर जैन परम्परा के उन्नायक
शांति वीर शिव ज्ञान के सागर
संत शिरोमणि गुरुवर विद्यासागर

कर्नाटक प्रांत के सदलगा से
राजस्थान की अजमेर वसुंधरा से
विद्याधर से विद्यासागर
जय हो गुरुवर विद्यासागर

अखिल विश्व के तारण हारे
जैन जगत के हो उजियारे
जन जन के हो करूणाधरी
सब जीवों के हो हितकारी

अभीक्षण ज्ञान के हे योगी
आध्यात्मिक विद्या के प्रखर वक्ता
मूकमाटी काव्य के अनुपम रचियता

चर्या शिरोमणि गुरुवर विद्यासागर
जय हो जय हो जय हो
गुरु विद्यासागर जी की जय हो .....

आचार्य विद्यासागर महाराज का शैक्षणिक अवदान

❊ डॉ. कमलेश कुमार जैन (वाराणसी)❊

नैतिक शिक्षा का सर्वत्र महत्त्व है, फिर चाहे वह देश या समाज। समाज की प्रत्येक इकाई यदि अपनी-अपनी समाज के बच्चो को नैतिक शिक्षा को साँचे में ढाल सके तो प्रत्येक समाज उन्नति को प्राप्त कर सकता है। इसमें भी यदि बालिकाओं को नैतिक शिक्षा दी जाये और उनमें अच्छें संस्कार गढ़े जायें तो सर्वोत्तम है, क्योंकि बालिकाएँ दो कुलों की रक्षा करती हैं। पहले वे बचपन में अपने दादा-दादी एवं माता-पिता के साथ ही अपने भाई -बहिनों एवं सम्पूर्ण कुल तथा रिश्तेदारों में आदर की पात्र होती हैं, अपने नैतिक आचरण के कारण वे न केवल स्वयं तन-मन से स्वस्थ होती हैं , अपितु अपने आसपास के सम्पूर्ण वातावरण को नैतिक बनाती है। और सत्य-अहिंसा पर जोर देती हैं । पास-पड़ौस के लोग भी उससे प्रभावित होकर नैतिक जीवन जीने का संकल्प करते हैं। और एक स्वस्थ समाज की स्थापना होती है।

ये ही बालिकाएँ जब शादी के बाद अपने पतिगृह जाती हैं तो वहाँ भी अपने नैतिक चारित्र के माध्यम से घर-परिवार एवं पास-पड़ौस में सुगन्धी बिखेरती हैं। ऐसी स्थिति में बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में सर्वप्रथम नैतिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए।

जैनधर्म में चौबीस तीर्थंकरों की अक्षुण्ण परम्परा हैं, जिनमें प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने अपनी दोनों पुत्रियों-ब्राह्मी एवं सुन्दरी को शिक्षा देकर बालिका शिक्षा का श्री गणेश किया था। इसी क्रम में चोबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने नारी के उत्थान के लिए बहुविध उपदेश दिया था इसके लिए उन्होंने राजकुल की कन्या, राजकुमारी चन्दना को दीक्षित कर उनके नेतृत्व में आर्यिका संघ की स्थापना की थी, जिससे तत्कालीन समाज में न केवल नारी जागरण के महत्व को स्थापित किया था, अपितु उस आर्यिका संघ के माध्यम से जन-जन में नैतिक शिक्षा के बीज बोए थे। यह घटना लगभग छब्बीस सौ वर्ष पुरानी है, किन्तु उसकी सुगन्ध आज भी वर्तमान में समाज में फैली हुई है। इसके साथ ही यद्यपि नारी जागरण एवं नारी उत्थान के प्रयत्न बीच-बीच में भी होते रहे हैं, किन्तु बाद में एक समय ऐसा भी आया जब नारी शिक्षा का सर्वथा अभाव सा हो गया था।

बीसवीं शती के सुप्रसिद्ध सन्त आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अपने संघ के माध्यम से बालिका शिक्षा के प्रति जो अभियान चलाया है वह स्तुत्य है, सराहनीय है। क्योंकि अभी तक उत्तरभारत में माता चन्दा बाई के द्वारा आरा (बिहार) में स्थापित किया गया जैन बालाश्रम, श्री महावीर में ब्र. कमला बाई द्वारा स्थापित कमला बाई आश्रम महत्त्वपूर्ण है। इसी क्रम में सागर एवं इन्दौर म.प्र. आदि में भी महिलाओं को आगे बढ़ाने हेतु शिक्षा के केन्द्र खोले गये हैं । उपर्युक्त के अतिरिक्त दक्षिण भारत में भी बालिकाओं की शिक्षा के लिए अनेक प्रयत्न किये गये हैं। जो सराहनीय हैं, किन्तु ये सभी शिक्षा केन्द्र क्षेत्रीय एवं एकाङ्गी है।

वर्तमान में श्रमण संस्कृति के उन्नायक परम पूज्य 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की सात्त्विक प्रेरणा प्रतिभास्थली जैसे शिक्षायतन राजस्थान में स्थित वनस्थली विद्यापीठ के सामान्तर खोले जा रहें हैं, जिससे बालिकाओं में नैतिक शिक्षा के बीज

बाल्यावस्था से ही बोए जा सके, और समाज की बालिकाएँ स्वस्थ एवं नैतिक आचरण को अपने जीवन में उतार सकें।

इन प्रतिभास्थली के रूप में स्थापित शिक्षाकेन्द्रो में बाल ब्रह्मचारिणी बहिनें अध्यापिका के रूप में नियुक्त की जाती है, जो स्वंय नैतिक जीवन जीते हुये समाज में उस दिशा में आगे बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित कर रहीं हैं। इस प्रसंग में मुझे दक्षिणामूर्ति स्तोत्र का वह पद्य स्मृति में आ रहा है, जिसमें कहा गया कि- गुरु के मौन व्याख्यान से ही शिष्यों की शंकाओं का समाधान हो जाता है, पद्य इस प्रकार है -

चित्रं वटतरोर्मूले वृद्धाः शिष्या गुरुर्यवा। गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं शिष्यास्तु छिन्नसंशयाः।।

अर्थात् आश्चर्य की बात है कि वटवृक्ष के मूल में बैठे हुये शिष्य वृद्ध हैंऔर गुरु युवा हैं, गुरु कुछ बोल नहीं रहे हैं, किन्तु उनका मौन व्याख्यान ही शिष्यों की शंकाओं का समाधान कर रहा है। आशय स्पष्ट है कि गुरु अपने आचरण से ही शिष्यों को नैतिकता का उपदेश देते हैं।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की सात्त्विक प्रेरणा से स्थापित प्रतिभास्थली नामक शिक्षायतनों में उन व्रती बहिनों द्वारा शिक्षा दी जा रहीं है, जो स्वयं गृहत्यागकर संयम के मार्ग में अग्रणी हैं और उन-उन शिक्षातनों में संयम का पाठ उभयमुखेन पढ़ा रहीं है। एक तो वे लौकिक शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ा रही हैं और दूसरी और अपने आचार विचार से मूक उपदेश दे रहीं हैं कि जीवन में किस प्रकार संयमपूर्ण जीवन बिताना चाहिये और अपने को एक आदर्श महिला के रूप में स्थापित करना चाहिये।

मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले में स्थित तिलवारा घाट में 18 फरवरी 2004 को आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सान्निध्य में प्रतिभास्थली का शिलान्यास किया गया था, जो 30 जून 2005 से अपने लक्ष्य में उत्तरोत्तर अग्रसर होता जा रहा है। बाल ब्रह्मचारिणी बहिनों द्वारा जो शिक्षा इस प्रतिभास्थली में दी जा रही है, उन बहिनों की प्रेरणास्त्रोत हैं पूज्य आर्यिका 105 आदर्शमति माता जी।

तिलवारा घाट स्थित यह प्रतिभास्थली पूर्णतः आवासीय है और इसमें प्राचीन गुरुकुलों के मापदण्ड स्थापित किये गये हैं । इस प्रतिभास्थली के सात आधार स्तम्भ हैं , जो आचार्य श्री द्वारा स्थापित किये गये हैं। आचार्य श्री की दूरदृष्टि विशाल हैं। वे वर्तमान के सन्दर्भ में तो विचार करते ही हैं, आगे भविष्य में भी यह परम्परा वृद्धिङ्गत हो, इसके लिए उन्होंने सात बिन्दु स्थापित किये हैं, जो इस प्रकार हैं- बालिकाएँ प्राकृतिक वातावरण में रहें, जिससे वे निरन्तर स्वस्थ रहें। स्वस्थ तन साथ स्वस्थ मन भी आवश्यक है, अतः मानसिक विकास के लिए नित्य नये-नये आयोजन यथा समय प्रतिभा स्थली द्वारा आयोजित किये जाते हैं। बालिकाओं की वाणी में वह तेज हो, जो उन्हें असामान्य परिस्थितियों में भी भयमुक्त बना सके। आवास शहरों के प्रदूषित वातावरण से मुक्त हो और वृक्षराशि का उसमें समावेश हो ,जिससे शुद्ध वायु निरन्तर मिलती रहे। इन सब कारकों से हमारा वतन (देश) ऊँचाइयों का स्पर्श करेगा। हमारा चेतन अर्थात् हमारा आत्मा उन्नत होगा और जब ये बालिकाएँ समाजसेवा में उतरें तो धन के प्रति उनके मन में किञ्चित भी लालसा न हो, अपितु धन-संचय नैतिकता पर आधारित हो। अर्थात् 1. स्वस्थ तन

2. स्वस्थ मन 3. स्वस्थ वचन 4. स्वस्थ वन 5. स्वस्थ वतन 6. स्वस्थ चेतन और 7. स्वस्थ धन ये सात बिन्दु प्रतिभास्थली में रहने वाली बालिकाओं में प्रारम्भ से ही विकसित हों, जिससे स्व के साथ पर का भी कल्याण हो सके। इसी में समाज का कल्याण भी निहित है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की यह सोच क्षेत्रीय नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने प्रतिभास्थली जैसे शिक्षायतनों को देश के विविध कोनों में स्थापित करने हेतु अपना शुभाशीर्वाद प्रदान किया है। फलस्वरूप जबलपुर के अतिरिक्त इन्दौर, डोंगरगढ़ एवं रामटेक आदि स्थानों पर भी इनकी स्थापना की गई है और अतिशय क्षेत्र श्री पपौरा जी में भी 26 अप्रैल 2018 को एक प्रतिभास्थली का शिलान्यास आचार्य श्री ने सान्निध्य में किया जा रहा है।

अन्य स्थानों पर भी इसकी शाखा-प्रशाखाएँ खुलें, इसके लिए आचार्य श्री का शिष्य समुदाय प्रयत्नशील है। आचार्य श्री के ही एक शिष्य, मुनिपुगंव श्री सुधासागर जी महाराज के शुभाशीर्वाद से सांगानेर (जयपुर) में एक कन्या छात्रावास खोला गया है, जो सर्वसुविधा सम्पन्न है। इसी प्रकार के शिक्षायतन अन्यत्र भी खुलें , इसके लिए योजनाबद्ध कार्यक्रम चल रहा है।

अच्छे और ईमानदार प्रशासक तैयार हों, इसके लिए आचार्य श्री की प्रेरणा से शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान खोले जा रहे हैं जहाँ प्रबुद्ध छात्रों के लिए सर्वसुविधाएँ उपलब्ध हों और वें आई.ए.एस की तैयारी कर सकें। इसके लिए निर्देशन रूप में संस्कारधानी जबलपुर में सन् 1997 से एक प्रशिक्षण संस्थान चल रहा है। इसके अतिरिक्त भोपाल (म.प्र.) में सन् 2007 से स्थापित विद्यासागर इन्स्सीट्यूट आफ मेनेजमेन्ट भी महत्वपूर्ण हैं, जिसमें सुरेश जैन आई.ए.एस की भूमिका सराहनीय है । म.प्र. के सागर में स्थित भाग्योदय में प्राकृतिक चिकित्सा हेतु चिकित्सकीय परामर्श दिया जाता है और भी अन्य अनेक संस्थाएँ है, जो आचार्य श्री की प्रेरणा एवं आशीर्वाद मे मूर्तरूप ले रहीं है। ये संस्थाएँ भविष्य में जब विस्तार को पायेंगी तो एक वटवृक्ष का रूप धारण कर स्वस्थ समाज की स्थापना कर सकेंगी। आचार्य श्री का यह योगदान निश्चय ही अनेक शताब्दियों पर्यन्त उनकी गौरव गाथा का बखान करता रहेगा।

आचार्य श्री अपने प्रवचनों में स्पष्ट रूप से कहते है कि -आज की शिक्षा पद्धति व्यवसाय बन चुकी है। आज की शिक्षा के साथ-साथ अनुभव नहीं है। सारी पढ़ाई लिखाई करने के बाद भी नौकरी नहीं मिलती, क्योंकि डिग्री तो मिल जाती है, लेकिन अनुभव नहीं मिलता। यह सब हमारे देश में पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव है। उनका मानना है कि- विदेशी कभी भी भारत का भला नहीं कर सकते हैं। आज हम अपना पुराना इतिहास उठाकर देखें। यदि भारत को समृद्ध बनाना है तो आगे नहीं बल्कि पीछे लौटना होगा। अपनी संस्कृति, अपनी मर्यादा की तरफ। इस कथन से पूज्य आचार्य श्री का मन्तव्य स्पष्ठ हो जाता है कि हमें अपनी प्राचीन भारतीय गुरुकुल पद्धति को अपनाना होगा, जिसमें भारतीय संस्कृति और संस्कार पूर्ण रूप से कूट-कूटकर भरे हैं । ऐसी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति के सम्प्रेरक परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के श्रीचरणों में पुनः पुनः नमोऽस्तु !! नमोऽस्तु !! नमोऽस्तु !!!

यह लेख डॉ. मुकेश जैन विमल (दिल्ली) के नाम से मई माह में प्रकाशित हुआ था किन्तु यह लेख डॉ. कमलेश जैन वाराणसी का है भूल के लिए क्षमा प्रधान सम्पादक

डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति

सुरेश जैन

जैन स्मारक
राजाबाई जैन टावर

दिसम्बर 1957 में भारत के तीन विश्वविद्यालयों बम्बई, कलकत्ता तथा मद्रास की स्थापना की शताब्दी मनाई गई थी तथा तीनों विश्वविद्यालयों की एक ही समय पर एक-एक डाक टिकट जारी की गई थी। इन में जो डाक टिकट बम्बई विश्वविद्यालय पर जारी की गई थी उस पर राजाबाई जैन टावर का चित्र छापा गया था। यह टावर बहुत दूर से दिखाई देने वाला बड़ा सुन्दर डिजाईन किया हुआ इतिहासिक महत्व का स्थान है। यह चर्च गेट रेलवे स्टेशन के समीप बम्बई विश्वविद्यालय के केमपस में स्थित है। इस के नीचे विश्वविद्यालय की लाईब्रेरी की बड़ी सुन्दर तथा विशाल बिल्डिंग बनी हुई है जिस से एशिया महाद्वीप में मिलने वाले सबसे सुन्दर चमकदार तथा रंग बिरंगे शीशे लगे हुए हैं। इस लाईब्रेरी में शताब्दी वर्ष 1957 में 1,69,200 पुस्तके थी 1500 हस्तलिखित Manuscripts अरबी, युनानी व उर्दू भाषा में तथा 6000 हस्तलिखित संस्कृत में रखी हुई थी। जिस समय इस लाइब्रेरी को बनवाने का कार्य आरम्भ हुआ था उस समय बम्बई में रहने वाले एक जैन श्रावक भी प्रेम चन्द रायें जैन ने विद्या के प्रचार-प्रसार को ध्यान में रखते हुए इस लाईब्रेरी को बनवाने के लिए 2 लाख रूपये का धन दिया था। श्री प्रेम चन्द्र रायें जैन का पूरा परिवार बड़ा धार्मिक तथा सम्पन्न परिवार था। वह उस समय सूती धागे के प्रमुख स्टाक ब्रोकर थे। धनी होने के साथ-साथ बहुत बड़े दानी भी थे। दो मास बादही जब बम्बई विश्वविद्यालय में कलाक टावर बनवाने का प्रस्ताव आया तो श्री प्रेमचन्द्र राय चन्द्र जैन ने ब्रिटिश शासको के सामने एक सुझाव रखा यदि बनने वाले कलाक टावर का नाम उनकी माता के नाम पर राजा बाई जैन टावर रखा जाये तो कलाक टावर के बनने पर जितना धन खर्च होगा वह पूरे का पूरा धन दे देंगे और बम्बई स्टाक एक्सचेन्ज की स्थापना भी अपने खर्च से कर देंगे। उन के सुझाव को मान लिया गया तथा उन्होंने कलाक टावर पर आने वाला पूरा खर्च दो लाख रूपया दे दिया (ई. सन् 1869 के इतने धन की आज क्या कीमत होगी उस होगी इसका अनुमान पाठक स्वंय लगा सकते हैं।

श्री प्रेमचन्द्र राय चन्द्र जैन को यह कलाक टावर बनवाने का विचार इस लिए आया क्योंकि वह उस समय अपनी माता के लिए यह सब से उपयुक्त उपहार समझते थे। जो जीवन भर माता के काम आयेगा तथा मरणेपरान्त उन की माता का नाम सदा के लिए अमर रहेगा। उनकी माता श्रीमति राजाबाई उच्च धार्मिक विचारों वाली जैन महिला थी। संसार में रहती हुई भी बेहद संयमी जीवन व्यतीत करती थी। उसे जैन धर्म के सिद्धांन्तो में पूर्ण आस्था थी तथा उनकी सख्ती सें पालन करती थी। वह अपने नित्य नियम की बड़ी पक्की महिला थी। इसे कुदरत की मार कहे या कर्म उनको आंखो से दिखाई देना बंद हो गया था। उनका जीवन भर के लिए रात्री भोजन का त्याग था। तथा वह साँय काल 6 बले से पहले भोजन कर लेती थी। सुबह सूर्य उदय से पहले उठकर अपने धार्मिक कार्यों व नित्य नियम में लग जाती थी। कलाक टावर बनने के बाद उन को बिना किसी की सहायता के टावर के ऊँपर लगी हुई घड़ियों से बजने वाली घंटियों से समय का पता चलता रहता था। इस

प्रकार वह समय अनुसार अपने सभी धार्मिक कार्य करती थी।

राजा बाई कलाक टावर के चारो ओर विशालकाय चार घड़िया लगी हुई हैं। जो उस समय प्रत्येक 15 मिनिट में विशेष धुन बजाती थी, कुल 16 धुनें प्रत्येक 4 घंटे में बदलती रहती थी। घड़ी की इन धुनों को सुनकर नेत्रहीन माँ राजाबाई को बिना किसी की मदद से समय का पता चल जाता था। माता पिता वे हैं जिन्होंने हमें दशा और दिशा देने के लिए अपने यौवन काल में अथक परिश्रम किया। हमारे वर्तमान और भविष्य को समुज्जवल बनाने के लिए दिन रात मेहनत की, बचपन में दुलार दिया, शिक्षा दिलाई, हमारी देखभाल की, परिवारिश की। अपनी इच्छाओं और सुविधाओं के मुकाबले हमारे अरमानों और सुविधाओं को ज्यादा तरजीह दी। जैसे घर आंगन लगा एक वट वृक्ष हमें निरन्तर छांव देता है, आराम के लिए आंचल देता है, वैसे ही माता-पिता की उपस्थिति, अपनी शुभभावनाओ, हमारे बेहतर भविष्य की पवित्र कामनाओं और अपनी ममता ओर स्नेह की शुभ इच्छाओं से हमें आश्वस्त करती है, संरक्षण प्रदान करती हैं।

माँ (माता) :- धरती पर आने वाले प्रत्येक शिशु के मुँह से निकलने वाला पहला शब्द माँ ही होता है और उसके बाद भी जीवन भर हम अपने हर सुख-दुख में यही नाम लेते हैं। माँ स्नेह और वात्सल्य रूपी यही वह कवच है जो जीवन भर हर आपदा में हमारी रक्षा करते हुए हमारा पालन-पोषण करता है और जटिल स्थिति में सही जीवन जीने की शिक्षा प्रदान करता है।

बेटे की माँ को अनमोल भेंट :- श्री प्रेमचन्द्र राये चन्द्र जैन ने अपनी माँ के प्रति अपना पूरा कर्तव्य निभाया। अपनी माँ की सेवा के लिए ई. सन् 1869 में दो लाख रूपया खर्च करके बनाया गया राजा बाई कलाक टावर। यह अमर यादगार बताती है कि माँ की सेवा किस किस रूप में की जाती है। यह माँ की सेवा की अमर गाथा है।

राजाबाई जैन टावर :- इस कलाक टावर को एक अंग्रेज भवन निर्माता SIR GEORGE GILBERT SCOTT ने लंडन (इंग्लैंड) में बने BIG BEN CLOCK के डिजाईन के आधर पर फ्राँसिसी कारीगरी से बनवाया था। इस का नीव पत्थर 1 मार्च 1869 को रखा गया था तथा यह 9 वर्ष बाद नवम्बर 1878 में बनकर त्यार हुआ था। इस को बनाने में मुख्य रूप से कुरला के रंगदार पत्थर तथा बर्मा की सागवान लकड़ी का प्रयोग किया गया है। इस का धरती पर तल 68 फीट ऊँचा है। प्रथम तल 118 फीट ऊँचा है तथा ऊँपर का भाग 94 फीट ऊँचा है। पूरे कलाक टावर की ऊँचाई 280 फीट है। जिस समय यह बना था उस समय यह बम्बई का सबसे ऊँचा निर्माण था तथा जैसा ऊपर बताया गया है। इसके निर्माण में उस समय दो लाख रूपये खर्च हुए थे।

डाक टिकट :- इसी राजाबाई जैन टावर तथा लाईब्रेरी की बिल्डिंग के चित्र वाली एक डाक टिकट 31 दिसम्बर 1957 को शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में जारी किया गया था। जिस का मुल्य 10 पैसे था। यह जामनी रंग की डाक टिकट 26,35,920 (छब्बीस लाख पैतीस हजार नो सो बीस) संख्या में छापी गई थी। डाक टिकट के ऊपर बम्बई विश्वविद्यालय लिखा है, एक साईड पर 1857 दूसरी साईड पर 1957 लिखा है। टिकट के ठीक बीच में राजाबाई जैन टावर तथा लाईब्रेरी का चित्र है। नीचे तमसो मा ज्योतिर्गमय लिखा है अंत में टिकट का मुल्य तथा INDIA POSTAGE लिखा है। इंग्लैंड से छपने वाले STANLEY GIBBONS CATALOUGE में इस का विवरण No. 392 पर दिया गया है। इस डाक टिकट को भारत सरकार के डाक विभाग ने जारी किया था। इस का विवरण No. 392 पर दिया गया है। इस डाक टिकट को भारत सरकार के डाक विभाग ने जारी किया था।

प्रथम दिवस आवरण

समाचार

श्रवण बेलगोला बाहुबली भगवान के मस्तकाभिषेक का सौभाग्य शास्त्री परिषद के विद्वानों

श्रवणबेलगोल - अखिल भारतीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद को दिनांक 6 से 8 जून 2018 को श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रवणबेलगोल कर्नाटक में आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी आदि 123 साधुओं के ससंघ सान्निध्य में तथा जगतगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी के पावन नेतृत्व में सोने की झारी से भगवान श्री बाहुबली स्वामी का मस्तकाभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्वामी जी द्वारा शास्त्री परिषद कार्यालय को रजत कलश में किया गया तथा इसी अवसर पर शास्त्री परिषद की आचार्य श्री विद्यासागर महराज के संयम स्वर्ण महोत्सव की बुलेटिन का तथा संस्कार सागर हिन्दी मासिक इन्दौर द्वारा प्रकाशित आचार्य विद्यासागर महाराजजी के संघ की जानकारी देने वाला चेतन कृति विशेषांक एवं आहार से आरोग्य एवं वैयावृत्ति नामक कृतियों का लोकार्पण किया गया।

श्रवण बेलगोला बाहुबली भगवान के मस्तकाभिषेक एवं श्रुत पंचमी मनाने का सौभाग्य विद्वत शास्त्री परिषद के विद्वानों को

श्रवणबेलगोल- अखिल भारतीय जैन विद्वत शास्त्री परिषद संस्थान द्वारा विद्वत संगोष्ठी श्रुत पंचमी के अवसर पर दिनांक 15 जून से 18 जून 2018 तक आचार्य श्री वर्द्धमान सागर महाराज आदि 123 साधुओं के ससंघ सानिध्य में तथा जगतगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी जी के पावन नेतृत्व में गोम्मटसार कर्मकाण्ड विषय पर आयोजित की गई। जिसमें श्री धवला जी श्री जय धवला जी श्री महाबंध जी जिनवाणी की पालकी तथा विद्वानों को रथ में बिठाकर शोभायात्रा निकाली गई तथा जिनवाणी की बहुमान सहित पूजा की गई जिसमें विभिन्न प्रकार की वाद्ययंत्रो तथा संगीतमय स्तुति से जिनवाणी माता की पूजा की गई। यह पूजा एक अदभूत दृश्य को प्रस्तुत करने वाली रही। दिनांक 16 जून को भट्टारक श्री चारूकीर्ति जी स्वामी के साथ सोने की झांरी से भगवान श्री बाहुबली स्वामी का मस्तकाभिषेक करने को सौभाग्य सभी विद्वानों को प्राप्त हुआ। इसमें संगोष्ठी में दस सत्रों में गोम्मटसार कर्मकाण्ड ग्रंथ के 148 कृतियों पर चर्चा की गई। जिसका संयोजन ब्र. प्रदीप शास्त्री पियूष, जबलपुर ने किया। विद्वत परिषद के अध्यक्ष जयकुमार जी मुजफ्फर नगर तथा विद्वत शास्त्री परिषद के अध्यक्ष पं. सुमत प्रकाश जैन जयपुर को रजत कलश देकर सम्मान किया गया।

संयम स्वर्ण महोत्सव एवं सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन

नारनोल (हरियाणा)- श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन छोटा मंदिर नारनोल हरियाणा में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के संयम स्वर्ण महोत्सव एवं दीक्षा दिवस पर 17 जुलाई 2018 को विद्यागुरु विधान के साथ विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे तथा 18 जुलाई 2018 को आचार्य छत्तीसी विधान के

साथ साथ प्रश्नमंच कौन बनेगा संस्कार भूषण का आयोजन, 19 जुलाई घटयात्रा के साथ श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन 27 जुलाई 2018 तक प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जिनेश मलैया प्रधान सम्पादक संस्कार सागर श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर के सान्निध्य में किया जायेगा।

ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल

श्रवणबेलगोल- आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी ससंघ लगभग 120 साधुओं के सान्निध्य में तथा जगतगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी जी के पावन नेतृत्व में दिनांक 9 से 11 जुलाई 2018 तक आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के संयम स्वर्ण महोत्सव के अवसर पर इस शताब्दी के संयम मार्ग प्रणेता आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज और उनका दार्शनिक चिंतन विषय पर तथा आचार्य श्री शांति सागर जी, आचार्य श्री नेमीचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती, पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी, चन्द्रगुप्त मौर्य, आचार्य वर्द्धमान सागर जी आदि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संगोष्ठी आयोजित की गई है। जिसमें श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट के अध्यक्ष बाल ब्र. पं. श्री रतनलाल जी इन्दौर को करणानुयोग विद्या विशारद की उपाधि से सम्मानित किया जायेगा। जिसमें विश्वहिन्दू परिषद के अन्तराष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हुकुमचन्द्र जी सांवला इन्दौर के साथ साथ लगभग 200 ब्रह्मचारी भाई संगोष्ठी में विभिन्न विषयों को लेकर उपस्थित होंगे। जिसके संयोजक संस्कार सागर मासिक पत्रिका के प्रधान सम्पादक ब्र. जिनेश मलैया श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर रहेंगे। जिसमें आचार्य विद्यासागर महाराज जी के गृहस्थ अवस्था के भाई महावीर अष्टगे तथा बहन शांता जी एवं स्वर्णा जी भी उपस्थित रहेंगे।

महामस्तकाभिषेक

इन्दौर-श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इन्दौर में आर्यिका श्री 105 आदर्शमति माता जी के ससंघ सान्निध्य में श्री शांतिनाथ भगवान के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर शांतिनाथ भगवान का मस्तकाभिषेक किया गया। तथा निर्माण लाडू चढ़ाने का सौभाग्य श्रीमति अंजली प्रकाश छाबडा लखनऊ को प्राप्त हुआ तथा शांतिधारा प्राप्त करने का सौभाग्य आनंन्द उमेश जैन बजरंग नगर इन्दौर को प्राप्त हुआ।

रिद्धि सिद्ध कलश अभिषेककर्ता मूर्ति प्रदाता श्री निर्मल कुमार पांडया, मनोज बाकलीवाल, धमेन्द्र सागर, नरेन्द्र जैन जयपुर, राजीव सेठी, आजाद मोदी, प्रकाश छाबडा, वीरेन्द्र जैन, धमेन्द्र जैन (सी.ए), हर्ष जैन (कॉटन), सचिन जैन (उद्योगपति), भरत जैन शांतिनिकेतन, दीपेश गोधा, प्रदीप टड़ा, जिनेश बानापुरा, अविरल संजय सागर, एम.सी. जैन (पैराडाईज), अशोक जी (सी.ए.), अक्षय कासलीवाल, डॉ. सनत कुमार जैन, अजित पाटनी, डॉ. राकेश जैन, सुरेन्द्र जैन, के.सी. जैन (छतरपुर) आदि को सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आज के महावीर का संयम स्वर्ण दीक्षा महोत्सव

इन्दौर-श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इन्दौर में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के संयम स्वर्ण दीक्षा महोत्सव आर्यिका श्री आदर्शमति माता जी को ससंघ सान्निध्य में 1 स्वर्ण रथ पर देवशास्त्र

गुरु तथा 50 रथों पर आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी एवं जिनवाणी की शोभा यात्रा स्कीम नं. 78 से प्रारम्भ होकर विजयनगर मंदिर होते हुये तीर्थंकर वाटिका पंचबालयति मंदिर प्रागंण में पहुंचकर आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के व्यक्तित्व पर आर्यिका मां आदर्शमति माता जी द्वारा प्रकाश डाला गया। तथा श्री पार्श्वनाथ भगवान का अभिषेक करने का सौभाग्य मनोज जी बाकलीवाल, प्रकाश जी छाबडा, आजाद जी मोदी, धमेन्द्र जी, नरेन्द्र जी जयपुर, ने प्राप्त किया। कार्यक्रम में पं. श्री रतनलाल जी शास्त्री श्री सुन्दरलाल जी, श्री महेन्द्र जी पांडया, प्रदीप जी कासलीवाल, धमेन्द्र जी, प्रकाश छाबड़ा, आजाद मोदी, राजीव सेठी, सचिन जैन उद्योगपति, एम.के.जैन, गजेन्द्र जैन, आदि ने सारथी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में श्री दिगम्बर जैन सुखलिया, महालक्ष्मी नगर, नंदानगर, सेतवाल समाज नंदानगर, जावरा मंदिर, पद्मप्रभु चेत्यालय नंदानगर, विजयनगर, स्कीम नं. 78 नया एवं पुराना मंदिर, बजरंग नगर, पाटनीपुरा, भागीरथ पुरा, न्यू देवास रोड, स्नेहलता गंज, परदेशीपुरा, क्लर्क कालोनी, गोरीनगर, सेटेलाईट, शिखर जी ड्रिम, एल.आई.जी के साथ साथ पूर्वोत्तर क्षेत्र के सभी मंदिरो के महिलामंडल, बालिका मंडल, युवामंडल, सोशलग्रुप आदि ने भाग लेकर पुण्यार्जित किया। 17 जून रविवार को विजयनगर मंदिर में आचार्य छत्तीसी विधान का आयोजन किया गया। 18 जून को श्रुत स्कंध विधान 108 इन्द्र इन्द्रियों द्वारा किया गया जिसमें सौधर्म इन्द्र प्रकाश अंजली छाबडा, महायज्ञनायक नरेन्द्र कमलेश जयपुर, कुबेर हर्ष तृप्ती जैन, यज्ञनायक श्रीमति विजय मनीष जैन, श्री के.सी. सरोज जैन, राजेन्द्र विमला देवी (कोयला वाले), माहेन्द्र- मनोज सुनीता जैन, ब्रह्मेन्द्र ज्ञानचंद चंदा देवी जैन, ब्रह्मइन्द्र -विमल मीना गंगवाल, लातंव इन्द्र सुरेश अनिता जैन, संजय जैन स्कीम नं. 78, श्रीमति समता राजकुमार जैन, आदि पूर्वोत्तर क्षेत्र के श्रावकों ने इन्द्र इन्द्राणी बनकर विधान में सम्मलित होकर पुण्यार्जित किया।

साहित्यकार डॉ.कपूरचन्द्र जैन स्मृति पुरस्कार

बबीना- श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद के अधिवेशन में सरस्वती पुत्रों का सम्मान किया गया। आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज ने विद्वानों के सम्मान को जिनवाणी का सम्मान बताया। देश के सभी भागों से शताधिक विद्वान बबीना पधारें। विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति मे डॉ कपूरचन्द्र जैन स्मृति पुरस्कार उदयपुर से पधारे डॉ. जिनेन्द्र कुमार जैन को प्रदान किया गया। तिलक लगाकर पगड़ी पहनाकर माला एवं शाल उडाकर नगद राशि प्रदान कर प्रशस्ति पत्र का वाचन कर उन्हें सम्मानित किया गया। डॉ. ज्योति जैन कार्तिक अनिकेत भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। शास्त्री परिषद के यशस्वी अध्यक्ष डॉ. श्रेयांश कुमार जैन ने कपूरचन्द्र जैन के साहित्यक अवदान को स्मरण किया। कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द भारती (महामंत्री) ब्र. जिनेश मलैया प्रधान सम्पादक संस्कार सागर इन्दौर आदि उपस्थित थे कार्यक्रम का सफल संचालन ब्र. जयनिशान्त टीकमगढ़ (महामंत्री) ने किया।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा

माह : जुलाई 2018

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये

1. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित 329 शिष्यों में से कितने शिष्यों की शिक्षा स्नातकोत्तर हैं।
2. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित 329 शिष्यों में से कितने शिष्यों की शिक्षा स्नातक हैं।
3. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित ऐसी आर्यिका माता जी का नाम बताओं जिनकी दीक्षा सतारह वर्ष की आयु में हो गई थी।
4. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित 172 आर्यिका माताओं ने 20 से 25 वर्ष की आयु में दीक्षा लेने वालो की संख्या कितनी हैं।
5. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित 120 मुनिराजों में 26 से 30 वर्ष की आयु में दीक्षा लेने वालो की संख्या कितनी हैं।
6. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित 120 मुनिराजों में हिन्दी भाषा का प्रयोग करने वाले कितने मुनिराज हैं।
7. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित 172आर्यिकाओं में हिन्दी भाषा का प्रयोग करने वाले कितने आर्यिका माता जी हैं।
8. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने अभी तक कुल कितने बार दीक्षायें दी।
9. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने बार क्षुल्लक दीक्षा दी है।
10. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने बार ऐलक दीक्षा दी है।
11. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने बार मुनि दीक्षा दी है।
12. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने बार आर्यिका दीक्षा दी है।
13. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने बार क्षुल्लिक दीक्षा दी है।
14. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को कुण्डलपुर क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
15. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को नेमावर क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
16. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को जबलपुर में दीक्षायें दी।
17. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को नेनागिर क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
18. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को रामटेक क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
19. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को मुक्तागिरी क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
20. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को सोनागिर क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
21. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को सम्मेद शिखर क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
22. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को नरसिंहपुर में दीक्षायें दी।
23. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को थुवोन जी क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
24. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को ईसरी क्षेत्र पर दीक्षायें दी।

25. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को आहार जी क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
26. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को तारंगा जी क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
27. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को श्री गिरनार जी क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
28. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को श्री महुआ जी क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
29. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को श्री द्रोणगिरी जी क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
30. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को सागर में दीक्षायें दी।
31. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को सिद्धवरकूट क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
32. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को बीनाबारह क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
33. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को गंजबासोदा में दीक्षायें दी। 1
34. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कितने शिष्यों को विदिशा क्षेत्र पर दीक्षायें दी।
35. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कुल कितनी दीक्षायें दे चुके हैं ।
36. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने श्री सिद्ध क्षेत्र नैनागिर जी में कितने बार दीक्षायें दी है।
37. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने श्री सिद्ध क्षेत्र कुण्डलपुर जी में कितने बार दीक्षायें दी है।
38. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित 57 एलको में से कितने एलको ने मुनि दीक्षा ली।
39. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित 64 क्षुल्लकों में से कितने क्षुल्लको ने एलक मुनि दीक्षा ली।
40. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित 120 मुनिराजों में से सबसे अधिक मुनिराज कौन से प्रांत के हैं।
41. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित 120 मुनिराजों में से मध्यप्रदेश के कितने मुनिराज हैं ।
42. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित 172 आर्यिका माता जी में से सबसे अधिक माता जी कौन से प्रांत की हैं।
43. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित 172 आर्यिका माता जी में से मध्यप्रदेश की कितनी माता जी हैं ।
44. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित मुनिराजों में मध्यप्रदेश के कितने जिलों के मुनिराज हैं ।
45. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित आर्यिका माता जी में मध्यप्रदेश के कितने जिलों के माता जी हैं ।
46. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने एक साथ सर्वाधिक दीक्षायें कहां पर कितनी दी थी।
47. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने एक साथ सर्वाधिक मुनि दीक्षा कहां पर कितनी दी थी।
48. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने एक साथ सर्वाधिक क्षुल्लक दीक्षा कहां पर कितनी दी थी।
49. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित दिल्ली की कितनी आर्यिका माता जी है। 2
50. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित तमिलनाडू की कितनी आर्यिका माता जी है। 2

संस्कार सागर जून 2018 चेतन कृति विशेषांक से

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षाः जुलाई 2018

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम .....स्थान .....

उम्र .....सदस्यता क्र. .....

पूर्ण पता .....

पिन कोड ..... फोन नं..... (एस.टी.डी.) .....

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम ..... हस्ताक्षर

नियम :– ..... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजतेतब तक के लिए।

वर्ग पहेली 231

1	2	3		■	5	6	7	8
8				10	■	11		
12		■	13		■	■		■
■		■		■	14	■	15	16
17	■	18	■	19			■	
20	21		■		■	22	23	■
24		■	25		26	■	27	28
29				■	30		■	
	■	31		■	32			

ऊपर से नीचे

1. मूर्ति, प्रतिमा
2. औरंगाबाद जिले का जैन तीर्थ
3. स्वीकार कर लिया
4. किसी ग्रंथ की टीका करने वाले
6. बद्दुआ, दुख भरी श्वास
7. राग द्वेष रहित परिणाम
10. धूल,
14. वाद्य सामग्री
16. चित्त, अत:करण
17. वे मुनि जो आचार्य विद्यासागर जी के भाई हो
18. असवाव, दौलत
19. नमस्कार करना झुकने का भाव
21. काम भाव, श्री कृष्ण जी का एक नाम
23. चौखा
25. कर्म, काज कार्य
28. पुण्य कार्य (उर्दू)

बाये से दाये

1. आचार्य विद्यासागर द्वारा रचित प्रसिद्ध महाकाव्य
5. चौबीसवें जैन तीर्थंकर
9. रचियता, ग्रंथ सृजक
11. प्रयास, पुरुषार्थ
12. वृक्ष के बीच का भाग
13. कर्म, काम
15. दुख, कष्ट
19. दृष्टि
20. चलना, जाना
22. नाखून
24. साध्य,
26. दाग, पाप
27. रास लीला का पहला शब्द
29. गणधर, गणेश, गण के स्वामी
30. रावण की नगरी
31. आर्द्र, गीला
32. पक्षियों की आवाज

वर्ग पहेली 230 का हल

1 म	लि	सा	ग	3 र	■	4 अ	5 ध	6 म
हि	■	■	7 ज	ग	8 ती	■	9 र	स
10 मा	11 त	म	■	■	र्थ	■	12 ति	ल
13 न	न	■	14 अं	15 श	■	16 ज	■	■
ग	■	17 सः	■	ल	■	18 स	19 र	20 स
21 री	ति	■	22 शु	भ	■	■	23 म	म
■	■	24 ब	क	■	25 स	26 वि	न	य
27 श्र	28 य	■	29 ना	म	■	ष	■	म
30 स	म	य	सा	ग	र	■	31 ग	ति

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

अन्तर रूप निहार

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।

२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।

३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.

४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

विद्यादर्शनीय स्थल (10)-इंजी अभिषेक जैन के द्वारा संयम स्वर्ण महोत्सव पर
आचार्य विद्यासागर जी पर विद्यादर्शनीय
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विजय नगर इन्दौर में।

धर्म नीति का विस्तार...

चित्रप्रदर्शनीय स्थल (11)-इंजी अभिषेक जैन के द्वारा संयम स्वर्ण महोत्सव पर
आचार्य विद्यासागर जी पर चित्रप्रदर्शनीय
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विजय नगर इन्दौर में.

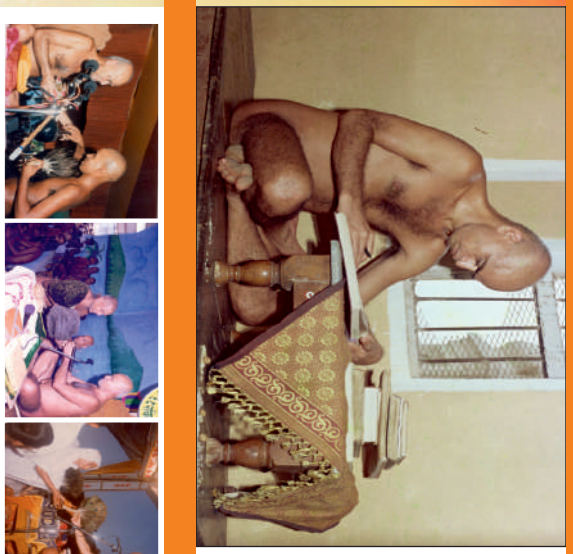

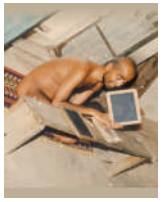

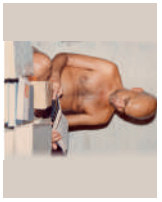

माँ जिनवाणी की छांव में (स्वाध्याय) एवं पिछी परिवर्तन...

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org